वर्ष-25 कार्तिक नवम्बर 2020 अंक-11
आर.एन.आई.नं.0048570/29/30/982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर. एन.नं.08/2021-2023

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को
मूल्य 10/- रुपये

मासिक

आगमोद्धारक

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

हे प्रभु ! तू अंधकार में दीपक है। तू निर्धन का धन है। तू भूखे का अन्न है। तू प्यासे का जल है। तू अन्धे की लकड़ी है। तू थके व्यक्ति की सवारी है। तू दुःख में धैर्य है। तू विरह में मिलन है। तू जगत का सर्वस्व है।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

जरामरणवेगेणं बुज्झमाणाण पाणिणं ।
धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुक्तमं ॥

जरा और मरण रुपी जल से वेग से बहते हुए प्राणियों के लिये धर्म ही द्वीप, प्रतिष्ठान, गति और उत्तम शरण है। वही एक मात्र आश्रय है। **- उत्तरा. सूत्र, 23.68**

पाथेय

अन्तर की नीरवता में एकाग्र होकर, मौन भक्ति भावना में इस समस्त तमसावृत दुःख कातर मूल सत्ता से संयुक्त होकर मैं तुम्हें एक दिव्य परित्राता के रुप में करता हूं नमस्कार और तुम्हारे प्रेम की मुक्ति प्रदायक मानकर उसका अभिनंदन करता हूं। मैं इस प्रेम से प्राप्त असंख्य वरदानों के लिये मैं अपने अनगिनत धन्यवाद तुम्हें निवेदित करता हूं और मैं स्वयं की पूर्णतया तुम्हें सौंपता हूं। जिसमें तुम धरा पर तुम्हें सौंपता हूं जिसमें तुम धरा पर पूर्णत्व प्राप्त करने के अपने कार्य को कर सको, सम्पन्न हे नाथ ! अब मैं तुम्हारे प्रेम में होकर निमग्न बन गया हूं, तुम्हारा अक्षय प्रेम और प्रवेश कर रहा हूं, सकल पदार्थ जगत के मर्मस्थल में वहां मै जला रहा हूं, तुम्हारे प्रेम की वह अमर अग्नि जो पवित्र बनाती है, रुपान्तरित करती है और कभी नहीं होती मन्द जो तुम्हारे दिव्यानन्द का संदेश वाहक है और समस्त पूर्णताओं की सिद्धिदायिनी अग्नि है।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-25 कार्तिक नवम्बर 2020 अंक-11

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	3
2- विषय सूची	4
3- निष्ठावान दीपों से जग हमेशा प्रकाशित रहेगा (सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन	5
4- देव जाति के भेद-उपभेद -आ.श्रीमद् विजयजिनोत्तमसूरीश्वरजी म.	6
5- बिटिया रानी...! पू.आ.श्री जितरत्नसागरसूरीजी ''राजहंस'',ज्ञान अमृत है	7-8
6- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्री अरुणविजयजी म.सा.	9-10
7- मैं नमि -श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.	11-13
8- गड़रिये से राजा...!	14
9- महावीर की दीपाशिखा : अपने अंतस में जलाएं.... ,ज्योतिष शास्त्रानुसार तिथियों के स्वामी, माँ को कहां ढूंढे बंदे ? मैं तो तेरे पास में	15-16
10-ज्योति पर्व आओ करें आत्मावलोकन	17-18
11-विलक्षण ज्योतिष-विद्या-''हाजरात'' - डॉ.श्याममनोहरजी व्यास, अर्हत् स्वरुप	19
12-दीपावली के साथ जुड़ी है भगवान महावीर की दिव्य निर्वाण कथा -पं.श्री वीररत्न विजयजी म.	20
13-राग-द्वेष, भाव श्रावक के 17 लक्षण	21-22
14-कार्तिक पूर्णिमा का महत्व !, राणकपुर तीर्थ	23-24
15- अनन्त गुणों के भंडार श्री महावीर भगवान- कहे कलापूर्ण सूरी से	25
16-जग चिंतामणि : चैत्यवंदन सूत्र रहस्य, जैन साधु-साध्वी : दुनिया का एक अजूबा....	26
17-जग चिन्तामणि : चैत्यवंदन, सबसे ही यह संसार गतिशील है	27
18- जैन साधु-साध्वी क्या आप जानते है ?, राष्ट्र को जगाने वाला	28
19-आईये गुरु श्री गौतम स्वामीजी को जाने, सूत्र तथा मुद्रा, समर्पण	29
20-कल-कल करते एक दिन काल आ जाएगा- प.पू.साध्वी डॉ.सुभाषाजी म.	30
21-ज्ञान रुपी दीप की दीपावली-दीपाली जैन, किस शशि के दर्शन चाहिये ?	31
22-आत्म मुक्ति का मार्ग स्वालम्बन मार्ग है- श्री महावीर -शांतिलाल सगरावत	32
23-आगमोद्धारक भविष्य फल- नवम्बर-2020- अनु दीपक जैन	33
24-वर्गपहेली- 307 - जयंतीलाल जैन	34
25-ज्ञान गंगोत्री- 307 - जयंतीलाल जैन, ऋतु अनुसार सूर्य किरणे....	35
26-शासन-समाचार	36-41
27- हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है, कब किसकी आराधना ?	42

संपादकीय

निष्ठावान दीपों से जग हमेशा प्रकाशित रहेगा

अमावस्या *की अंधेरी रात को परमात्मा प्रभुवीर ने अपनीआत्मज्ञान की ज्योति से सारे जगत को रोशन कर दिया था। आत्मज्ञान की इस ज्योति का प्रभाव जगत में युगोयुग तक दिखाई देगा। परमात्मा ने आत्मकल्याण साध कर महानिर्वाण प्राप्त कर हमें दीपोत्सव के रुप में आत्मज्ञान की ज्योति से अवगत कराया, वहीं प्रभु के प्रथम शिष्य और गणधर श्री गौतमस्वामीजी ने भी केवलज्ञान प्राप्त कर ज्ञान ज्योति का विस्तार किया जो स्वयं जलता है वही प्रकाश का प्रतीक बनता है। परमात्मा प्रभुवीर ने मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त किया तो गुरु गौतमस्वामीजी ने केवलज्ञान की सरस्वती की प्राप्ति की। दीपावली इसीलिये लक्ष्मी-सरस्वती का पूज्य पर्व बना। लक्ष्मी पूजन हम मोक्ष के लिये नहीं समृद्धि के लिये करने लगे। जो जैन धर्म की भावना के विपरीत है, धर्म तो अपरिग्रहवाद का संदेश देता है। प्रभु ने भौतिक सम्पदा का नहीं आध्यात्मिक संपदा की प्राप्ति के लिये भौतिक संपदा छोड़ी थी।*

दुनिया में सफलता पुरुषार्थ से मिलती और पुरुषार्थ धन दौलत को समेटने में नहीं छोड़ने में करना पड़ता है। हमारे यहां लक्ष्मी और सरस्वती दोनों देवीयों की मान्यता है। लक्ष्मी पूजने योग्य तो है पर विश्वास के काबिल नहीं है क्योंकि कल वह किसी और की हो जायेगी लेकिन सरस्वती पूजन और विश्वास दोनों काबिल है। कोई लखपति रातोंरात रोड़पति हो सकता है, यह हमने सुना है पर कोई महाज्ञानी रातों रात बुद्धु नहीं हो सकता है। हमारे यहां लक्ष्मी का अर्थ है मोक्ष और सरस्वती का मतलब है केवलज्ञान। परमात्मा का निर्वाण महोत्सव हम लड्डू चढ़ाकर मनाते है, लड्डू गोल है, इसका न आरंभ है न अंत है। लड्डू की तरह ही आत्मा भी अखण्ड है, अखण्ड आत्मा को तपाने के बाद ही मोक्ष रुपी चाश्नी की मधुरता मिलती है इसलिये जगत को यह आत्मा प्रिय लगती है।

इस वर्ष का प्रकाश महापर्व अपने आपको पहचाने की वेला है, कोरोना के भयंकर संक्रमण दौर से गुजरती जिंदगी संवारने का संदेश यह दीपावली पर्व। जिन निष्ठावान दीपों ने अपना सर्वस्व लुटाकर हजारों हजार लोगों की जिंदगी को रोशन किया, उन दीपों को सलाम करने का इस वर्ष का पर्व दीपावली है। निष्ठावान दीपों से हम भी प्रेरणा प्राप्त कर अनेक दीपों में जिंदगी की रोशनी कर सकते है। लोगों को मिठाईयां तो बहुत बांटी है पर इस दीपावली पर दुःख के आंसु पोछकर जीवन दीप जलाने का मौका है। जीवन बोध और विश्वास को पुर्नजीवित करने का स्मरण दिलाता यह दीपोत्सव हमें यहीं प्रेरणा देता है कि अच्छाई और सच्चाई की बची खुची मुट्ठी भर रोशनी भी बहुत है। अंधेरे से लड़ने के लिये अपने आपके साथ दूसरों को जीतनेवाला ही वीर होता है। भौतिक चकाचौंध से भ्रमित आज का मानव जीवन चौराहे पर कर्त्तव्य विमुख खड़ा हुआ है। लक्ष्य विहीन, चिंता मग्न भयाक्रांत आदमी अपने कदम किस और बढ़ावे। पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण के कारण अधिकांश व्यक्ति त्याग के आदर्श के स्थान पर भोग के आकर्षण में लिप्त होता दिखाई दे रहा है। संक्रमणकाल में स्वार्थ और मतलबी होने की नई परिभाषा भी दिखाई दी है। ऐसी विषम और प्रतिकुल परिस्थितियों में भी हमने आशा और विश्वास के साथ दूसरों के जीवन में रोशनी करनेवाले कई प्रकाशदीप को देखा है। कठिन समय में भी नैतिक आदर्श की सजीव मूर्तियां बनकर प्रेम एवं सद्गुणों को प्रतिष्ठापित कर उन्होंने अनुकरणीय बन हमारी संस्कृति के युगादर्श को जीवित रखा है।

प्रकाश, आलोक के ऐसे पर्व हमारी सांस्कृतिक परम्परा में जीवन के आशा के, उन्नति उत्सव के प्रतीक है और रहेंगे इन्हीं से जीवन के दीप में आशा का संचार होता है। अंधकार और अंत्येश के साथ जीवन में जहर घोलनेवाले, सेवा प्रकल्प के नाम पर लोगों को लूटनेवाले, उनके जीवन के साथ खिलवाड़ करनेवाले अशुभ और अवनति, अंधकार के प्रतीक है। पर ये सद्भावना, सहायता, स्नेह विश्वास के जीवन दीप को बुझा नहीं पायेंगे। अगर जीवन बर्बाद करनेववाले तूफानों की कोशिश कामयाब हो जाती तो सर्वत्र ही अंधकार छा जाता पर ऐसा होना संभव नहीं है। क्योंकि अमावस्या को आत्म ज्योति पर्व के रुप में प्रतिष्ठित करनेवाला दीपोत्सव मन मस्तिष्क के कूड़ा कर्कट साफ करने के साथ ही अल्पज्ञता के मल को दूर करने का संकेत भी देता है यही कारण है कि हमारी चेतना के दीप को अंधेरे के सारथी बुझा नहीं पाते हैं।

दीपावली के दिये की रोशनी करनेवाला पर्व नहीं माने क्योंकि रोशनी करने के तो अनेक आधुनिक उपकरण आज उपलब्ध है दीपावली का दीप तो अनंतकाल से प्रज्ञा महापुरुषों के द्वारा प्रज्वलित आत्म ज्योति और ज्ञान के प्रकाश को उत्सर्जित कर रहा है और आगे भी करता रहेगा। दीपावली तो मन के दीये को प्रकाशित करने का पर्व है। श्रीप्रभुवीर के द्वारा जो दीप प्रकटाया था उसे गुरु श्रीगौतमस्वामीजी ने अपनी शंका समाधान से और अधिक ऊंचा किया था, दीपावली मनाये पर किसी का दीप नहीं बुझे, किसी का घर नहीं जले तभी सार्थक होगी दीपावली। आतिशबाजी के धमाकों और बारुद से दूषित होते पर्यावरण के साथ पशु पक्षियों को भयभीत कर उन्हें अंधा-बहरा कर दीपावली मनाना कितना उचित है ? अनंतकाल से चली आ रही दीपयात्रा के इस लम्बे सफर में इस वर्ष की दीपावली बड़ी चुनौतियों के साथ आई है। मानवीय जीवन के मूल्य और नैतिकता पर आधारित आचरण का अभाव स्पष्टदिखाई दे रहा है। दुर्नीति और दुष्टचक्र ही यदि इहलोक में यशकीर्ति, समृद्धि से विभूषित कर सकते हैं तो परलोक की चिंता कौन करेगा ? हमें इस सोच को बदलना है।

दीपावली पर हमें यह संकल्प लेना है कि हम उस दृष्टि की अर्चना करेंगे तो जीवन को प्रकाशित करता है। हम उस अंधकार को हटाने का काम करेंगे जो अधार्मिकता और संस्कारहीनता को जन्म देता है, तमस के विनाश के इस पर्व पर आप सबका जीवन अंधकार से लड़ने में सक्षम बने इसी मंगल भावना से सबको पर्व की शुभकामनाएं।

✽ डॉ. सुभाष जैन

देव जाति के भेद-उपभेद

✻ आ.श्रीमद् विजयजिनोत्तम सूरीश्वरजी म.

संसारी जीव 1- नरक गति, 2- तिर्यच गति, 3- मनुष्य गति तथा 4- देव गति- इन चार गतियों में परिभ्रमण करता है। ''देवता'' का अर्थ है विशिष्ट शक्तियों से सम्पन्न हो। देवताओं में कुछ जन्मजात विशेषताएं होती है- जैसे उनका वैक्रिय शरीर। इस शरीर में वे चाहे जैसा छोटा-बड़ा एवं सूक्ष्म-स्थूल रुप बना सकते हैं। तीव्र गति, विशेष प्रभा-युक्त शरीर तथा उत्तम प्रकार के काम-भोग सुखों की उपलब्धि। देवों की चार गति (प्रकार) है- 1- भवनपति (असुरकुमार आदि) 2- वाणव्यन्तर (भूत, पिशाय आदि) 3- ज्योतिषी (सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, तारा) तथा 4- वैमानिक देव (ऊपर सौधर्मकल्प आदि विमानों में रहने वाले)।

1- भवनपति देव- इन देवों का निवास स्थान मेरु पर्वत से नीचे अधोलोक में प्रथम नरक भूमि रत्नप्रभा के बीच बने भवनों में है। इनके मुख्य रुप से दो भेद है- 1- भवनपति तथा 2- परमाधामी।

भवनपति देवों के दस भेद इस प्रकार है- 1- असुरकुमार 2- नागकुमार 3- सुपर्णकुमार 4- विद्युतकुमार 5- अग्निकुमार 6- द्वीपकुमार 7- उदधिकुमार 8- विशाल कुमार 9- वायुकुमार 10-स्तनितकुमार।

इनके किसी के शरीर का रंग श्वेत, किसी का काला, किसी का सोने जैसा चमकदार तथा किसी का लाल, हरा आदि होता है। ये क्रीड़ाप्रिय तथा सुकुमार प्रकृति के देव होते हैं। किसी की पूजा-प्रार्थना से शीघ्र ही प्रसन्न हो जाते है। इनके मुकुटों पर बने अलग-अलग चिन्हों से इनकी पहचान हो जाती है। उत्तर दिशा में तथा दक्षिण दिशा में रहने के कारण इनके 20 भेद भी होते हैं।

भवनपति देवों की दूसरी जाति है- परमाधामी देव। ये बड़े क्रूर, कठोर तथा निर्दय स्वभाव के होते हैं। दूसरों को पीड़ा देने में ही इन्हें आनन्द आता है। ये देव तीसरी नरक तक नरक में रहे नारकी जीवों को तरह-तरह की यातनाएं देते रहते हैं। इनके 15 भेद हैं।

2- व्यंतर जाति के देव- ये भी मुख्यतः दो प्रकार के है- 1- व्यंतर 2- वाण व्यंतर। ये देव मेरु पर्वत के नीचे तथा भवनपति देवों से ऊपर मध्यलोक की सीमा में रहते हैं। व्यन्तर देव आठ प्रकार के हैं- 1- पिशाच 2- भूत 3- यक्ष 4- राक्षस 5-किन्नर 6-किंपुरुष 7- महोरंग 8- गंधर्व।

वाणव्यन्तर देवों के भी 8 भेद है- 1-आणपन्नी 2- पाणपन्नी 3- ऋषिवादी 4- भूतिवादी 5- कंदित 6- महाकंदित 7-कूष्मांड 8- पतंगदेव।

व्यन्तर देवों की एक जाति और है- जृम्भक देव। तिर्यक् लोक में रहने से इन्हें तिर्यक्जृम्भक भी कहते हैं। इनके 10 भेद है।

3- ज्योतिष देव- इनके पांच भेद है- 1- चन्द्र 2- सूर्य 3-ग्रह 4- नक्षत्र और 5- तारा। इनके विमान सदा ज्योतिर्मान (प्रकाशमान) रहने से इनको ज्योतिषी कहते हैं। मेरु पर्वत से 790 योजन ऊपर और 900 योजन तक के आकाश (अन्तरिक्ष) में ये देव मेरु पर्वत के चारों तरफ परिभ्रमण करते रहते हैं। अढाई द्वीप में ये देव मेरु पर्वत की प्रदक्षिणा करते रहते हैं। इसलिये ''चर'' कहलाते हैं। इनके भ्रमण के कारण ही दिन-रात, घड़ी, मुहूर्त, मास, वर्ष आदि होते हैं। अढ़ाई द्वीप के बाहर के क्षेत्र में ये सदा स्थिर रहते हैं। इसलिये जहां दिन है, वहां सदा दिन ही रहता है। जहां रात है, वहां सदा रात है, वहां सदा रात रहती है। इस प्रकार पाँच ज्योतिषी देवों के चर तथा स्थिर यो 10 भेद हो जाते हैं।

4- वैमानिक देव- ऊर्ध्वलोक में जो देव विमानों में निवास करते हैं वे वैमानिक देव कहलाते हैं। उनके भेद इस प्रकार है- 1- बारह कल्पोपन्न देव, 2- कल्पातीत देव- यह भी दो प्रकार के होते हैं- अ-नव ग्रैवेयक देव ब- पांच अनुत्तरौपपातिक देव, 3- तीन किल्विषिया देव, 4- नव लोकांतिक देव।

सौधर्मकल्प आदि 12 कल्प विमान, उनके ऊपर नौ ग्रैवेयक विमान तथा उनसे ऊपर पाँच अनुत्तर विमान है।

पंचम देवलोक के पास त्रसनाड़ के किनारे पर जो 9 प्रकार के लोकांतिक देव रहते हैं। तीर्थकर भगवान जब दीक्षा लेने का विचार करते है तब ये देव आकर उनकी अनुमोदना करते हैं।

प्रथम, तृतीय तथा छठे देवलोक के नीचे तीन प्रकार के किल्विषिक (सफाई करनेवाले) देव रहते हैं। इस प्रकार 12+9+5+9+3=कुल 38 भेद वैमानिक देवों के हैं। चारों जाति के कुल 99 देव होते हैं।

देवों की उत्पत्ति स्थान को उपपात सभा कहते हैं। यहां पर फूलों जैसी कोमल शय्या पर देवों की उत्पत्ति होती है। उत्पत्ति के समय प्रत्येक देव अपर्याप्त अवस्था में होता है। उत्पत्ति के 48 मिनिट (अन्तर्मुहूर्त) के भीतर वे आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छवास तथा भाषा-मनः पर्याप्ति पूर्ण कर लेते हैं। तब उनकी पर्याप्त अवस्था कहलाती है। इस प्रकार 99 अपर्याप्त तथा 99 पर्याप्त कुल 198 भेद देवों के होते हैं।

- तत्वार्थ सूत्र, अध्याय 4

बिटिया रानी...!

✻ पू.आ.श्री जितरत्नसागर सूरीजी म. ''राजहंस''

प्यारी-प्यारी बिटिया...!

जो बात मेक-अप की है वे ही बातें ड्रेस पर भी लागू पड़ती है। फर्क सिर्फ इतना पड़ता है कि ड्रेस में यह मेटर ज्यादा सिरियस हो जाता है। अल्टरनेक कपड़े , छोटे-छोटे स्कर्ट, बेबी टॉप, लोवेस्ट जिन्स ये सभी वस्त्र अपने तथा सामनेवालों के मन में अमुक प्रकार के खास विचारों को जन्म देते हैं।

थोड़ा सा स्पष्ट कहूं तो ये वीभत्स वस्त्र अपने पर तथा दूसरों पर मानसिक बलजबरी करते हैं। शार्ट वस्त्र या चुस्त वस्त्र द्वारा देह प्रदर्शन करके सामने वाले व्यक्ति को उत्तेजित करने की मानसिकता पश्चिम की देन है।

बेटा...!

मैं देख रहा हूं कि -आज की नयी जनरेशन पश्चिम के पीछे दीवानी होकर शार्ट कट से आगे बढ़ने की मानसिकता के कारण टेंशन का भोग बन रही है।

अपना अन्धा अनुकरण, अयोग्य वेशभूषा, अनिच्छनीय छूटछाट अभक्ष्य खानपान और लक्ष्मण रेखा लाईन आफ कन्ट्रोल का उल्लंघन इस मानसिक खिचाव के परिणाम है।

प्यारी बेटी...!

यौवन की दहलीज पर खड़ी बेटी जब वेस्टर्न ड्रेस पहरकर घर से निकलती है तब उसके पिता कैसी व्यथा में से गुजरते हैं इसका अंदाजा निकाला नहीं जा सकता है।

I don't think. वह व्यथा मौत के सामान होती है और कहु तो मौत भी उससे बहुत सस्ती होती है। यह व्यथा इससे भी ज्यादा होती है।

Dress Point पर माता-पिता से चर्चा करने वाली तथा जमाने की दुहार देनेवाली, सभी फेन्डस का बहाना बनाने वाली Fashion या Comfert के नाम से बात को हवा में उड़ा देनेवाली लड़कियों को इस व्यथा के बारे में किसी तरह का ख्याल नहीं होता है।

बेटा...! सिंह जैसा बाप भी हो ना तो वह बेटी के चौरीमंडप में बिदाई के वक्त एक दम टूट सा जाता है। उसे समय में पिता को फूट-फूटकर रोते हुए मैंने देखा है।

अनिलभाई जोशी के वे गुजराती पंक्तियां यहां लिख रहा हूं:-

दीकरी नो मांडवों जो सूरज के घेर होत,
तो जाणत, अंधारु शी चीज छे ?

मेरी प्यारी बेटी...!

मैंने ऐसे पिता को भी देखा है कि जिनके पास गांव और बंगले है। बेटियां सुखी-सम्पन्न घर में है। प्रेमाल परिवार है और आरोग्य भी अच्छा है। मगर वे दुःखी है। कारण कि उनके बेटियां दुःखी है।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि बेटी के साथ स्नेह-अपनत्व का अनुभव करते हुए तथा बेटी को केन्द्र में रखकर जीने वाले पिता की व्यथा पिता की तरह उन बेटियों की व्यथा नहीं बन जानी चाहिये ?

You don't know my dear...!

माता-पिता सन्तों की कितनी बातों में मन मनाते हैं। इतना ही नहीं जगह-जगह काम्प्रोमाइझ करते हैं तो जो बात गंभीर हो जिस बात के लिये काम्प्रोमाइझ करना बिल्कुल योग्य नहीं है उन बातों में उन्हें काम्प्रोमाइझ करने के लिये मजबूर करना कहां तक योग्य है ?

बेटा...! हम तेरे दुश्मन नहीं है बल्कि तेरे दुःख में दुःखी होनेवाले और हमेशा तेरा सुख चाहने वाले हम तेरे ही हित की बात कर रहे हैं। जिन एक्ट्रेस, मॉडल या फ्रेन्ड को देखकर तू ऐसे उद्भट ड्रेस पहनना चाहती है उनमें से कोई भी तेरे हित की जवाबदारी लेनेवाले नहीं है। तेरा भविष्य, तेरी सुरक्षा, तेरा सुख की एक-एक पल की चिंता हमें हमेशा सताती है। उन्हें नहीं।

प्यारी बेटी...! हमने जमाना देखा है और अभी देख भी रहे हैं। टीवी और पेपर समाचार पत्रों में कौन से, कैसे समाचार आ रहे है और अपने आसपास क्या-क्या हो रहा है उसका हमें बराबर ख्याल हैं।

इस स्थिति में तेरी अनुचित वेशभूषा, तेरा अकेले का बाहर जाना, रात्रि में लेट घर आना यह सभी हमारे लिये अधमरे हो जाने जैसा है।

तू समझती है ना अधमरा याने क्या ?

जिसमें न तो व्यक्ति मरता है न जी पाता है।

प्यारी बेटी...! शायद हम तुझे अर्थोडाक्स लगते होंगे ? आज कौन सा समय चल रहा है और हम कौन से समय की बात कर रहे है। ऐसा तुझे लग रहा होगा ?

परन्तु तू सुक्ष्म दृष्टि से देखोगी तो तुझे ख्याल आएगा कि पहले के वस्त्र में जो मर्यादाएं थी उससे हमार गुना ज्यादा मर्यादा की आज आवश्यकता है।

उस पुराने समय में मनुष्य की कमजोर लागनियों को उत्तेजित करें ऐसा मिडियातंत्र नहीं था न टीवी थी न इन्टरनेट था, न मोबाईल था न इमेल या फेसबुक-वाट्सअप थे। मगर आज तो कदम-कदम पर अच्छे खानदानी व्यक्ति को उत्तेजित कर दे ऐसी स्थिति है अतः हजार गुनी मर्यादाओं का पालन हो तो ही बचा जा सकता है।

और यही आज की वास्तविकता है । आज की वास्तविकता यह है कि मर्यादा हजार भाग नीचे उतर चुकी है। क्या तुने समाचार पत्रों में नहीं पढ़ा है ?

इस देश में हर चार मिनिट में स्त्री संबंधित शारीरिक या मानसिक त्रास गुजारने का एक गुनाह पुलिस की डायरी में आता है। हर 12 मिनिट में एक छेड़-छाड़ का गुनाह होता है। हर 29 मिनिट में एक लड़की के साथ बलात्कार होता है, हर 77 मिनिट में एक स्त्री की हत्या होती है।

मेरी प्यारी बिटिया...! तू पढ़ेगी तब तक ये संख्या और बढ़ सकती है । इसमें जानने जैसी बात तो ये है कि 99 प्रतिशत केस तो सामने ही नहीं आते है। समग्र विश्व में 15 वर्ष से 44 वर्ष की उम्र वाली स्त्रीयों की जितने मौत होती है उससे कम रोग के कारण एवं एक्सीडेंट के कारण मौतें होती है।

विकसित देश हो या विकासशील, स्त्री शोषण तो सभी जगह सामान्य बात हैं। स्त्री एक बार उसकी मर्यादा रेखा से बाहर निकल गई कि खत्म शिकारी उन्हें अपना शिकार बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं।

प्यारी बेटी...!

माता-पिता के लिये सिरदर्द बन जाए इतनी छूट-छाट लेती आज की बेटियां माता-पिता को सान्त्वना (!) देती है कि मैं कभी भी ऐसा कोई काम नहीं करुंगी जिसके कारण आपको अपना मस्तक शर्म से झुकाना पड़े।

बेटा...! प्रमाणिकता से दिया हुआ यह वचन भी पालना लगभग शक्य नहीं बन पाता है और कभी शक्य भी बन जाए तो भी अपने स्वयं की तरफ से लक्ष्मण रेखा पार न भी करें इतना ही उसका अर्थ होता है।

Do you know my Dear ?

शहरों में कम से कम 10 प्रतिशत युवतियां विकृत मानसिकता से पीड़ित पीछाखोर लड़कों से परेशान है। इस स्थिति में क्या होगा ?

अपनी संस्कृति में सचोट बात कही है **''इच्छमणिच्छेदी सा उ''** स्त्री यदि वासना लम्पटों के वश हो जाए तो उसका चरित्र, उसका घर परिवार, उसकी सुख शांति, इन सभी का सर्वनाश हो जाता है।

आज के मोबाईल जमाने में फोटो, विडियो की धमकियां हमेशा के लिये आर्थिक और शारीरिक शोषण, ब्लेकमेल आज सामान्य बातें हो गई है।

यदि स्त्री उनके वश न हो तो ये शिकारी उस पर बलात्कार करते हैं। शारीरिक हमले करते है, उन पर एसिड छींट देते है या उसकी हत्या कर देते हैं और कुछ न हो पाया हो तो बदनामी कर देते हैं।

प्यारी बेटी...! मर्यादा कवच का कोई विकल्प ही नहीं है। कानून-दण्ड-सजा-पुलिस-वुमन हेल्पलाईन यह सभी पंगु है। -तेरे प्यारे डेडी...!

(आगे और भी है...!)

ज्ञान अमृत है

गौतम स्वामी ने भगवान महावीर से पूछा हे नाथ ! आत्म ज्योति सूर्य चन्द्रादि प्रकाशपिण्डों की तरह साक्षात क्यों नहीं दिखाई देती है, एवं वह शाश्वत क्यों है ? भगवान ने उत्तर दिया, सूर्य चन्द्रादि प्रकाश पिण्डों की ज्योति विषय कषायों को उत्पन्न करने वाली है, पर परमात्म ज्योति उनका नाश करनेवाली हैं। लोक में जिस प्रकार राज तेज साक्षात दिखाई नहीं देता है परन्तु उसकी दुहाई सर्वत्र व्याप्त रहती है वैसे ही आत्मज्योति दृष्टिगत नहीं होती है पर उसका प्रभाव सर्वत्र व्याप्त है। उसे वहीं प्राप्त कर सकता है जो अनासक्त है। अनासक्त भाव से विषयों का सेवन करते हुए भी नन्दीषेण मुनि ने आत्मज्ञान को प्राप्त कर लिया था । आत्मज्ञान की प्राप्ति से संसार में विवेक पथ प्रशस्त हो जाता है इसी से दान, तप, शील एवं भाव क्षणभर में ही मोक्ष को प्रदान कर देते हैं क्योंकि ज्ञान बिना प्राणी राग द्वेषादि कषायों में पड़ जाता है एवं विनष्ट हो जाता है। इस ज्ञान भानु के प्रकाशित होने पर सम्यग् ज्ञान प्रकट होता है जिससे परिग्रहादि भावनाओं का नाश होता है। इस प्रकार आत्मज्ञानी अशुभ ध्यान को रोकनेवाली निर्विकारी क्रियाओं को करता हुआ मोक्षरुप आनन्द में रमण करता है।

पाप की सजा भारी...! *प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

अभ्याख्यान में दो प्रकार के आरोपः-

1- दोषारोपण 2- गुणारोपण

दोषारोपण करना यह अभ्याख्यानी का मुख्य कार्य है जो चोर नहीं है उसे चोर कहना। घर में अपनी घड़ी खो गई तो नौकर को पकड़के पीटना, डांटना ए तूने ही चुराई है। तू ही चोर है। जबकि यह आरोप डालने में आपके पास ठोस प्रमाण नहीं है। ये तो डांटने फटकारने में ऐसे शब्द बोलने पड़ते हैं जिससे संभव है नौकर घबराकर सत्य बोल दें। यह तो सिर्फ एक प्रयोग था, इस प्रकार किसी पर चोरी का, खून का बलात्कार का हिंसा का झूठ बोलने का जबरदस्ती आरोप डालना यह अभ्याख्यान का पाप ही है। जबकि दोष नहीं है और दोषारोपण करना यह अभ्याख्यान का पाप जरुर है।

महासती अन्जना के चारित्र पर कलंकः-

पवनप्रिया सती अन्जना एक जगत प्रसिद्ध महान सती सन्नारी की। अंजना की शादी पवनंजय राजकुमार के साथ हुई। पवनंजय को पहले से ही अंजना पर प्रेम नहीं था। शादी में भी पत्नी के मुंह की तरफ भी उसने देखा नहीं था। न मालुम किस कारण से अन्जना एक अच्छी सौंदर्यवती रुप लावण्यवली राजकुमारी होते हुए भी पवनंजय को प्रिय नहीं थी। एक दिन भी वह बुलाता भी नहीं था। और एक दिन पवनंजय युद्ध के मैदान में चला गया। इस तरह नववधु अन्जना ने अपने शील की रक्षा करते-करते 12 वर्ष बड़े दुःख के साथ बिताए। मानसरोवर के किनारे एक बार संध्या के समय पवनंजय अपने मित्र के साथ बैठा था कि चक्रवाक और चक्रवाकी की क्रीड़ा देख रहे थे। एकाएक चक्रवाक कहीं भाग गया। बेचारी चक्रवाकी विरह वेदना में दुःखी होकर तड़फने लगी। तब पवनंजय ने मित्र से पूछा अरे! यह क्या हुआ ? मित्र ने कहा- यह तो पति वियोग के कारण विरह की वेदना करती हुई चक्रवाकी बेचारी मृत प्राय हो रही है। प्रेम के अन्दर प्रियतमा को वियोग का विरह बहुत सताता है।

मित्र के शब्दों को सुनकर पवनंजय एकाएक विचारों में खो गया और उसे अन्जना याद आई। वह सोचने लगा। ओहो ये पक्षी की जात की चक्रवाकी एक क्षण पति के वियोग में नहीं रह सकती। तो अंजना मेरे वियोग में 12 वर्ष कैसे रही होगी ? अरे.... रे! यह कैसा दुःख होगा। यह सोचकर पवनंजय आकाशगामिनी विद्या से आकाश मार्ग से ही वायुवेग से सीधा रात्रि को अंजना के शयन खंड में पहुंचा। पत्नी से प्रेम किया। अंजना खुश हो गई, दोनों का समागम हुआ। पति जब वापिस लौट रहा था तब अंजना ने कहा- स्वामीनाथ शायद मैं माँ बनुं तो...? अतः आप पहचान के लिये देते जाओ। तब पति ने अपनी वींटी दी और चला गया। अन्जना के गर्भ में वृद्धि हुई। उदरवृद्धि देखकर घर में सासु, स्वसुर सभी हक्के-बक्के रह गए और अन्जना पर कुलटा का कलंक लगाकर उसे घर से निकाल दी। वह निःसहाय पिता के घर मायके गई। तो माता-पिता ने भी उसे निकाल दी। अन्त में बिचारी गर्भवती अंजना एक दासी के साथ जंगल में गई और वहां काल बिताया। समय पर बालक को जन्म दिया।

जंगल में मिले पूज्य ज्ञानी गीतार्थ साधु भगवंत को अंजना ने अपने दुःख का कारण पूछा। तो गुरुदेव ने ज्ञान से देखकर बताया बहन! तूने गत जन्म में देरानी को बहुत परेशान की थी। प्रतिमाजी कचरे में छिपा दिए थे। उस 12 घड़ी के कारण तुझे 12 वर्ष का पति वियोग और चारित्र पर कलंक सहना पड़ा है। यद्यपि तू एक सति सन्नारी है अतः सब अच्छा हो जाएगा और अन्त में पति से भेंट हो गई। पुनः आनन्द से राजघराने में रहने लगी। सब कुछ अच्छा हुआ। ऐसी महासति पर भी कलंक आया। अभ्याख्यान वृत्ति का यह परिणाम है।

महावती कलावती पर कलंकः-

शंख राजा की पट्टरानी कलावती को एक बार उसका भाई सोने के दो कंगन देने आया। राजा के न मिलने से रानी को ही कंगन देकर चला गया और इधर रानी दर्पण के सामने बैठकर नए सोने के हीरे जड़ित सुंदर कंगन पहन रही थी। एकाएक मुंह से ये शब्द निकल गये कि- वाह कितने अच्छे सुन्दर कंगन है ये। .... इतने में राजा का अन्तःपुर में आना हुआ। द्वार पर ही खड़े रहकर राजा ने यह शब्द सुन लिए। और सोचा.... ओहो! मैंने तो ये कंगन रानी को दिये नहीं है तो फिर कहां से आए ? और रानी इतनी प्रसन्न लग रही है शायद कोई पर पुरुष के साथ संबंध होगा ? ऐसी शंका मन में लाकर .... राजा वहां से तुरन्त निकल गया और चंडाल को बुलाकर कहा तुम रानी को सबेरे जल्दी जंगल में दूर ले जाना और कंगन सहित दोनों हाथ कोनी से काट कर लाकर मेरे को देना.... और रानी को वहीं जंगल में छोड़कर आ जाना। बस जाओ.... इतना काम शीघ्र करो।

निर्दोष महासती पर भयंकर कलंक आया और पाप कर्म भयंकर उदय से राजाज्ञानुसार वैसा ही हुआ। बेचारी गर्भवती रानी जिसके गर्भ के नौ महिने बीत गये थे उसे चंडाल ने रथ में बैठाकर घोर जंगल में ले गया। वहां उतार कर एक क्षण में तलवार से दोनों हाथ कोनी से कंगन सहित काटकर ले आया और राजा को दे दिये। राजा प्रसन्न हो गया। बस बराबर है। यहीं सजा होनी चाहिये ऐसी दुष्ट कुल्टा-दुष्चरित्री को।

इधर रानी के हाथ काटने से नदी के प्रवाह की तरह खून बह रहा था। मृत्यु के साथ खिलवाड़ हो रही थी कि अधूरे में पूरापन-प्रसव पीड़ा शुरु हुई और बालक का जन्म हुआ। अकेली निःसहाय डरावने भयंकर जंगल में रानी बिना हाथ के अपने संतान को कैसे पकड़े ? क्या करें ? लेकिन अंतरात्मा से कराहती हुई रानी ने सच्चे दिल से प्रभु को प्रार्थना की- हे प्रभु मैं वास्तव में सती सन्नारी होउं तो मुझे मेरे हाथ वापिस मिल जाय ? और वैसा ही हुआ। इष्ट देव ने प्रार्थना सुनी। सतीत्व के प्रभाव से दोनों हाथ फिर आ गए। अपने संतान की रक्षा की। राजा को भी सद्‌बुद्धि उत्पन्न हुई। अंत में राजा-रानी-पुत्र सभी का मिलन हुआ ! यह गत जन्म के पाप कर्म का उदय था। ऐसी महासती पवित्र सन्नारी पर भी कलंक आया। और कैसे भारी सजा भुगतनी पड़ी ? यद्यपि पाप की ही सजा भारी थी फिर भी धर्म की साधना प्यारी थी।

अभ्याख्यानी को कर्म बंधः-

जब एक बात इतने विवेचन से स्पष्ट हो गई कि अभ्याख्यान यह पाप है। अतः पाप प्रवृत्ति और पाप को वृत्ति तो अशुभ कर्मो का बंध जरूर कराएगी ! अभ्याख्यानी मदों का सेवन करके नीच गोत्र कर्म बांधता है। वैसे ही गुणों को ढांककर दोषों को प्रगट करनेवाला भी नीच गोत्र कर्म बांधता है ! तत्वार्थ सूत्र में ठीक ही कहा है कि- **परात्मनिंदा प्रशंसे सदसद्‌गुणाच्छादनोद्‌भावने च नीचैर्गोत्रस्य।** पर निंदा और स्वप्रशंसा करने वाला तथा शुभ गुणों को जो है उसे ढांकना और जो दोष नहीं है ऐसे दोष खड़े करके आरोप लगाना यह नीच गौत्र कर्म बांधने का आश्रव मार्ग है। नीच गोत्र कर्म बांधने में अभ्याख्यान स्पष्टरुप से निमित्त कारण है। इसी तरह अशुभ नाम कर्म भी अभ्याख्यानी बांधता है। **योगवकत विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः।** मन-वचन-काया के तीनों योगों की वक्रता कुटिल प्रवृत्ति तथा विसंवादन वृत्ति से भी अशुभ नाम कर्म बांधता है। जिस अशुभ नाम कर्म से कढंगा-कुरुप शरीर मिलता है। दुर्गति मिलती है। उसी तरह अभ्याख्यानी को ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय कर्म तो अवश्य ही बंधेंगे। क्योंकि बड़े-बड़ों पर भी यह दोषारोपण तो करता ही है। साधु-संतों पर भी दोषारोपण और आक्षेप आदि करने से ऐसे कर्म बंधते है जिसके उदय में आने से अज्ञानी, मंदमति, मुखरोगी, कुष्टरोगी आदि बनना पड़ता है। मोहनीय कर्म का भी ज्यादा बंध होता है। जिसके उदय से तेज कषाय वृत्तिवाला, क्रोधी-कुटील कपटी आदि बनता है और अन्तराय कर्म के बंध से उदय में आने पर शक्तिहीन, मंद शक्तिवाला और दान-लाभादि के अंतराय वाला बनता है। आखिर थोड़ी देर के लिये डाले गये आक्षेप-आरोपों के कारण भयंकर कर्मो को बांधकर वर्षो तक या जन्म-जन्मान्तर तक दुःखी होना यह कितनी भारी कर्म की सजा है।

अभ्याख्यान के परिणामः-

अज्ञानी-अविवेकी जीव जो ऐसी अभ्याख्यान सेवन की आदत से लाचार है। **''दुःख पामे ते अनंतोजी''** -वे अनन्त दुःख पाते है। कई वाचाल लोगों को ज्यादा बकवास करने वाले लोगों को तो अभ्याख्यान सेवन का व्यसन ही पड़जाता है। कुछ लेना नहीं और देना नहीं फिर भी निरर्थक पाप कर्म बांधने की यह प्रवृत्ति है। इस आदत से जो लोग ज्यादा कलंक लगाते हैं वे ही जीव वैसा कलंक अनेक जन्मों तक पाते हैं। जैसा करते हैं वैसा ही फल मिलता है यह तो कर्म सत्ता का नियम है। यह कभी भी भूलना चाहिये। यदि इतना एक वाक्य रखे तो सभी पाप करना छोड़दें। लेकिन कर्मसत्ता पर विश्वास नहीं ऐसे लोग भी बहुत है। यद्यपि दुःखी होते हुए और गत जन्मों के किये हुए पापों का फल भोगते हुए भी आज यह पता ही नहीं चलता है, ख्याल ही नहीं है फिर भी दुःखी है। अतः कर्म का उदय है यह तो प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध है। फिर भी यह देखते हुए अभ्याख्यानी कितने पाप का सेवन करता है ? प्रायः निरर्थक पापों का सेवन ज्यादा करता है। ऐसा जीव भावि भवपरंपरा में अनेक जन्मों तक दुःखी होता है ! ऐसे अभ्याख्यानी का किया हुआ सकृत-शुभ कार्य धर्म ध्यान तप-त्याग आदि सब निरर्थक निष्फल जाता है।

आगे और भी है...!

✻ इस संसार में वस्तुएं बहुत ज्यादा है, मनुष्य की आकांक्षा बहुत ज्यादा है और समय बहुत कम है।

मैं नमि

✻ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

''महाराज ! गजब हो गया है। अपना पट्टहस्ती हस्तिशाला में से खूंटा उखाड़कर भाग गया है। हम उसके पीछे-पीछे दौड़ते गये परन्तु हाथी तो जंगल में कहीं चला गया, देखते-देखते तो झाड़ियों में कहीं अदृश्य हो गया। हम निराश होकर लौट आये हैं। आज ऐसा सुनने मिला है कि सुदर्शन नगर के राजा चन्द्रयशा के आदमी उसे पकड़कर ले गये हैं। अभी उसका मालिक चंद्रयशा है।''

मैं मिथिला नगरी की राजसभा के सिंहासन पर आकर बैठा ही था वहीं मेरे पास आकर हस्तिपाल ने फरियाद की।

अतः मैंने तुरन्त ही एक दूत चन्द्रयशा के पास भेजा। थोड़े दिनों बाद दूत ने आकर कहाः-

''राजन् ! चन्द्रयशा ने हाथी देने का स्पष्ट मना कर दिया है। उसने तो कहा है- '' हाथी मेरी हद में आया था तभी मैंने लिया है। इससे हाथी मेरा ही गिना जाता है। वैसे भी किसी भी वस्तु पर अकेले किसी का अधिकार होता ही नहीं है। जिसकी कलाई में ताकत हो उसी का ही अधिकार। वीरभोग्या वसुंधरा ! तेरे नमि राजा को हाथी चाहिये तो युद्ध करके ले ले !''

दूत की बात सुनकर मैं गुस्से से भर गया- ''हरामखोर चन्द्रयशा ! समझता ही क्या है अपने मन में ? किसी का हाथी चोरी करके कैसे लिया जा सकता है, वह उसे युद्ध मैदान में पता चलेगा। चलो सेनापतिजी ! लश्कर तैयार करो। युद्ध की भेरी बजाओ।''

.... और युद्ध की रणभेरी बजी।

विशाल सैन्य के साथ मैं चल पड़ा। सुदर्शन नगर को चारों ओर से घेर लिया।

पड़ाव में बैठकर मैं अपने मंत्रीयों के साथ युद्ध के व्यूहों की विचारणा कर रहा था और वहां एक जैन साध्वीजी आये।

ऐसे समय में साध्वीजी ! मैं आश्चर्य-चकित हो गया। क्यों आये होंगे ? क्या काम होगा ? मैं सोचने लगा।

तुरन्त ही सिंहासन से नीचे उतरकर वंदन किये। साध्वीजी ने हमें धर्मोपदेश दिया- छोटी-सी तुच्छ चीज के लिये क्यों युद्ध करना ? युद्ध से कभी किसी को कुछ फायदा हुआ ही नहीं है। युद्ध तो क्षणिक पागलपन है। फायदा तो किसी को है ही नहीं। लेकिन नुकसान दोनों पक्षों को है। हारने में तो नुकसान है ही, परन्तु जीतने में भी नुकसान है। जीतने से युद्ध करने का नशा चढ़ता है और बार-बार युद्ध करने का मन होता ही रहता है। इसलिए मेरी तुम्हें बिनमांगी सलाह है- युद्ध तुरन्त ही बंद करो।''

साध्वीजी का उपदेश मुझे अच्छा लगा। उनका चेहरा देखकर ही हृदय नाचने लगा, किसी अज्ञात स्नेह से मेरी अस्मिता उभरने लगी, मगर मैं युद्ध बंद करने के लिये तैयार नहीं हुआ।

तब साध्वीजी ने मुझे कहा- आप जानते हैं, किसके साथ लड़ रहे हैं ? जिसके साथ लड़ रहे हैं, वह तुम्हारा सगा भाई है। तुम बड़े भाई के साथ लड़ोगे ?

''हें.... क्या बात कर रहे हैं ? चन्द्रयशा मेरा बड़ा भाई ? आपको कैसे पता चला ? मेरे पिता तो है मिथिला के राजा पद्मरथ और माता है पुष्पमाला.... जब कि चन्द्रयशा के माता-पिता तो अलग है...। मैं उसका भाई कैसे हो सकता हूं ?

मैं तुम्हें वही कहना चाहती हूं। अब से मैं तुझे तू कर में बुलाऊंगी। क्योंकि मैं तेरी सगी संसारी माँ हूं। चन्द्रयशा और तू दोनों ही मेरे पुत्र हो। चन्द्रयशा बड़ा और तू छोटा पुत्र !

मैं स्तब्ध हो गया। यह मैं क्या सुन रहा हूं ? जैन साध्वीजी कभी झूठ तो बोलते ही नहीं हैं। इसलिये अविश्वास को कोई स्थान ही नहीं। मुझे सभी विस्तार से पूछना चाहिये। मैंने नम्रता से मेरा वृत्तांत बताने कहा तब साध्वीजी बोल उठेः-

नमि ! सुन। मेरा अभी नाम है-सुव्रताश्री। परन्तु सांसारिक नाम था- मदनरेखा। तेरे पिता थे- युगबाहु और बड़े पिताजी थे मणिरथ। मणिरथ सुदर्शन नगर के राजा थे। एक बार हम दोनों उद्यान में केलिगृह में थे तब कामांध बने हुए मणिरथ ने मलिन इरादे से अपने ही छोटे भाई यानि तेरे पिता की गर्दन पर तलवार चलाई। मैंने चीखें लगाई। मेरी चीख सुनकर सुभट आ पहुंचे। ''मेरे अनजाने में तलवार पड़ गई और भाई की गर्दन पर गिर गई।'' ऐसी सफाई मणिरथ ने की। उसके मन के इरादे तो सुभट जान गये। परन्तु राजा होने से छोड़ दिया। इस तरफ मैं व्याकुल हो गई। लेकिन क्षणभर में बाजी संभाल ली। तेरे पिता जल्दी से मृत्यु की तरफ प्रयाण कर रहे थे। मैंने उन्हें नवकार आदि सुनाकर समाधि दी। थोड़ी ही देर में उनके प्राणपंखेरु उड़ गये। अब मैं बिलकुल अनाथ बन गई थी और फिर शील की भी चिंता थी। हालांकि वैसे तो मैं मर भी जाती, लेकिन उस समय मेरे पेट में बालक था। वह बालक दूसरा कोई नहीं, लेकिन हे नमि ! तू ही था। शील को और तुझे बचाने के लिये मैं रात को अंधेरे में ही चल पड़ी। एक भयंकर जंगल में जलाशय के पास कदलीगृह में मैंने निवास किया। पीने के लिये जल, खाने के लिये फल, ओढ़ने के लिये आकाश, सोने के लिये पृथ्वी और रहने के लिये कदलीगृह था ! जंगल में सात दिन के बाद तेरा जन्म हुआ।

तेरी अंगुली में तेरे पिता के नामवाली मुद्रिका पहनाकर तुझे कंबल में लिपटकर मैं सरोवर के किनारे शुद्धि करने के लिये गई, परन्तु वहां जलहस्ती ने मुझे सूंढ़ से पकड़कर आकाश में उछाला। मेरा पुण्य जोर कर रहा था इससे मैं नीचे तालाब में पडुं इससे पहले ही एक विद्याधर ने मुझे पकड़कर अपने विमान में बैठा लिया। मैं बच तो गई लेकिन फिर से मेरा शील जोखम में पड़ा। वह विद्याधर मणिप्रभ ही मुझ पर मोहित हुआ। मैंने उसे कहा- अभी तो आप नंदीश्वर द्वीप जा रहे हैं न ? वहां चलो तो सही। आपके पिता मुनि को मिली तो सही, फिर दूसरी बात ! नंदीश्वर द्वीप में पिता मुनि की देशना से मणिभद्र की वासना शांत हुई। मुनि के मुंह से मैंने तेरा स्वरुप जान लिया कि तुझे मिथिला के राजा पद्मरथ ले गये है और वहां अपनी रानी ने इस पुत्र को जन्म दिया है, ऐसी घोषणा करवाई है। देशना के बाद एक देव ने मुझे वंदन किया। वह देव दूसरे कोई नहीं, लेकिन पूर्व जन्म के तेरे पिता ! उन्होंने मुझे मिथिला नगरी में रखा। वैसे तो मैं एक बार तेरा मुख देखने की इच्छा से ही वहां आई थी, किन्तु साध्वीजी का प्रवचन इतना वैराग्य-प्रेरक था कि मैंने तुझे बिना देखे ही दीक्षा ले ली। गुरुणीजी ने मेरा नाम रखा- सुव्रताश्री। संयम की साधना में वर्षों बीत गये। अभी मुझे समाचार मिले कि तुम दोनों युद्ध करने की तैयारी में हो। इससे तुम दोनों को अटकाने के लिये मैं गुरुणीजी की आज्ञा लेकर आई हूं। अब तुम्हें जो ठीक लगे वह करो।

साध्वीजी की बात सुनकर मैं तो चकित ही हो गया। क्या पुष्पमाला मेरी माँ नहीं है ? पद्मरथ पिता नहीं है ? लेकिन अब किसे पूछुं ? मेरे माता-पिता ने तो ज्ञानसागर आचार्य के पास दीक्षा लेकर केवलज्ञान पाकर मोक्ष में पधार गये हैं। चलो, मैं पुराने मंत्री को पूछ लूं। पुराना मंत्री हमारे घर की सभी अंतरंग बातें जानता था। उसने कहा- आप पद्मरथ और पुष्पमाला के पुत्र तो नहीं ही हैं। आप जंगल में से मिले है यह बात मैं भी अच्छी तरह से जानता हूं, परन्तु ये साध्वीजी आपके माता हैं या नहीं ? इसका मुझे पता नहीं। आप ऐसा करें- वह पुरानी मुद्रिका आपकी अंगुली में ही है। उस मुद्रिका पर देख लें- किसका नाम है ? जिससे साध्वीजी की बात का भरोसा हो जायेगा।

मैंने अंगुठी में देखा तो उसमें बारीक अक्षरों से लिखा था- युगबाहु ! ओह ! साध्वीजी की बात सौ टका नहीं, सवा सौ टका सच है। ये साध्वीजी ही मेरे माँ है। यह तो उनको देखकर हर्ष से उछलता हृदय ही गवाही दे रहा है। अब यहां दूसरी गवाही की जरुरत भी क्या है ? हाथ कंकन को आरसी की क्या जरुरत ?

किन्तु रे ! इतना स्पष्ट जानने पर भी मैं युद्ध-विराम के लिये तैयार नहीं हुआ। अहंकार बहुत ही खतरनाक है। वह जल्दी झुकने के लिये तैयार नहीं होता। मैं इतना बड़ा राजा ! मेरे हाथी चुरानेवाले को माफ कर दूं ? मैंने ही चढ़ाई की और मैं ही संधि करने जाऊं ? तो मेरी इज्जत ही क्या ? दुनिया मुझे नामर्द गिनेगी- देखा ? यह नमि बड़ा बनकर युद्ध करने गया था और लड़ना तो दूर गया, लेकिन सामने से ही झुकना पड़ा। नहीं, दुनिया के द्वारा होती ऐसी निंदा मैं सहन करने के लिये तैयार नहीं हूं। मेरे अहंकार ने गर्जना की।

मेरी युद्ध करने की अटल भावना देखकर साध्वीजी कुछ भी आग्रह किये बिना चन्द्रयशा के पास गये।

थोड़ी ही देर में चन्द्रयशा को अपने साथीदारों के साथ मेरे पास आते देखा और उसके चेहरे से लग रहा था कि वह प्रेम से मुझे मिलने आ रहा है। मैं भी सामने दौड़ा। बड़ा भाई मिलने के लिये आ रहा हो तब छोटा भाई कैसे बैठा रह सकता है ? मैं बड़े भाई के चरणों में झुक गया।

हम दोनों की आँखों से अश्रुधारा बहती रही।

अरे रे ! छोटे से जमीन के टुकड़े के लिये या हाथी जैसी चीज के लिये कैसे खतरनाक खेल ! कैसी भयंकर हिंसा ! संसार कैसा विचित्र है। जहां सगे दो भाई युद्ध के लिये तैयार हो जाते है ! धिक्कार हो ऐसे संसार को ! हम दोनों के हृदय बोल रहे थे। हम दोनों दीक्षा लेने के लिये तैयार हो गये। हम दोनों एक दूसरे का राज्य एक दूसरे को सौंपने के लिये तैयार हो गये। आखिर बड़े भाई की इच्छा के सामने मुझे झुकना पड़ा। उन्होंने अपना राज्य मुझे सौंपकर दीक्षा ले ली।

बिना प्रयत्न, बिना इच्छा ही मेरा राज्य दुगुना हो गया। शत्रु वृंद भी मेरे प्रभाव मात्र से झुकने लगा। मुझे पुराने लोगों ने कहा- पद्मरथ राजा ने आपका नाम ''नमि'' क्यों रखा, जानते हैं ? आपके आगमन के बाद शत्रु झुकने लगे थे इससे आपका नाम ''नमि'' पड़ा। शत्रुओं को नमाये नमि ! मेरा संसार सुखपूर्वक व्यतीत हो रहा था.... लेकिन मेरा मन मुक्ति की झंखना कर रहा था। पिंजरे में रहे हुए तोते को खाने-पीने इत्यादि की चाहे जितनी भी अनुकूलता हो परन्तु उसका मन तो अनंत नील गगन की ही इच्छा रखता है।

पराधीनता सबसे बड़ा दुःख है। मेरा मन भी पिंजरे में बंद तोते के जैसा था। विशाल राज्य में भी मैं पिंजरे का बंधन देख रहा था। मेरी आत्मा घूटन अनुभव कर रही थी। कब मौका मिले और कब उड़ जाऊं ? मन में यही एक मात्र तमन्ना ! इस तमन्ना को वेग मिले वैसी एक घटना घटी। मेरे शरीर में भयंकर पित्तप्रकोप होने से दाहज्वर उत्पन्न हुआ। पूरे शरीर में घातक जलन होने लगी। पूरे शरीर में ऐसी वेदना

होने लगी, मानो किसी ने अंगारे भर दिये हो ! वैद्यों ने अनुभवीयों ने, बहुत से उपचार किये, परन्तु किसी की बांसुरी बजी नहीं, उपचार बढ़ते गये वैसे-वैसे ज्वर अधिक-अधिक बढ़ता गया। दिन-रात नींद नहीं आती ! सतत् दाह, दाह और दाह ! न बैठ सकता था ! न सो सकता था ! न बोल सकता था ! न सोच सकता था ! न तो निर्विचार बन सकता था ! लगातार छह महिने तक ऐसी घातक जलन मैंने सहन की ! मैं राजा था। सभी सुविधाएं मेरे पास थी। बड़े-बड़े वैद्य, हकीम, बुआ, तांत्रिक, मांत्रिकों को मैं बुलाता रहा.... परन्तु अफसोस ! मुझे कोई दाह की पीड़ा से मुक्त करने में समर्थ नहीं था। संसार की असारता मुझे प्रत्यक्ष दिखाई दी ! अब मैं इतनी बैचेनी का अनुभव कर रहा था कि थोड़ी सी भी आवाज सहन नहीं कर सकता था।

एक बार मेरे कानों से आवाज टकराई- ख....न.... न....ख....न.... न....ख....न.... न.... इस आवाज से मुझे ऐसी पीड़ा हुई, जैसे कोई कान में हथौड़ा मार रहा हो। मैं चिल्ला उठा- कौन है यह आवाज करनेवाला ? यह शोरगुल बंद करो।

''राजन् ! आपके विलोपन के लिये रानियां चन्दन घीस रही है। उनके कंगन की आवाज है। यद्यपि आवाज मधुर है, लेकिन आपको यह शोरगुल लगता है। कमजोरी होती है तब देहली भी पर्वत लगता है और मैंढ़क भी भैंस लगती है ! राजन् ! मैं अभी यह आवाज बंद करवाता हूं।'' सेवक ने कहा। थोड़ी ही देर के बाद आवाज बंद हो गई।

मैंने पूछा- अब क्यों आवाज बंद हो गई ? क्या चंदन घिसना बंद कर दिया है ?

नहीं महाराज ! चंदन घिसना चालू ही है।

तो आवाज कहां गई ?

सभी रानियों ने एक-एक ही कंगन रखकर दूसरे सभी कंगन निकाल दिये हैं। दो-चार कंगन हो तो टकराते हैं, आवाज आती है। एक कंगन से आवाज कहां से आयेगी ?

यह जवाब सुनते ही मैं गहरे विचारों में चला गया : सच बात है। एक एका एक। दो दूनी दो। ऐसा बचपन में पढ़ा था। इसका संकेत साफ है। मनुष्य अकेला होता है तब तक आनंद में होता है। एक से दो होते ही बिगड़ना शुरु हो जाता है। सचमुच द्वन्द्व में दुःख है। सुख और दुःख, पुण्य और पाप, स्वर्ग और नरक- ये सभी द्वन्द्व है। सच्चा सुख इस द्वन्द्व के सामने के तीर पर है, एकत्व में है। मनुष्य को सचमुच अगर सुखी होना हो तो अकेले ही चल पड़ना चाहिये। जंजाल का त्याग कर अणगार मार्ग पर चल पड़ना चाहिये। यदि मेरा दाह शांत हो जाये तो मैं अब दीक्षा लूंगा- ऐसा सोचते-सोचते ही मुझे नींद आ गई। सुबह देखा तो आश्चर्य ! दाह की जलन कहीं छू हो गई थी ! ओह ! शुभ विचारों का कैसा चमत्कार ? उस रात मैंने एक सुंदर स्वप्न देखा- ऐरावत हाथी और मेरु पर्वत का ! उस स्वप्न पर सोचते-सोचते मुझे जाति स्मरण ज्ञान हो गया : पूर्व भव में मैंने साधुपना पाला था। उसके प्रभाव से मैं प्राणत देवलोक में (10 वें) गया था और वहां का आयुष्य पूर्ण होने पर मैं यहां पर उत्पन्न हुआ। जातिस्मरण के कारण मेरा दीक्षा का निर्धार और दृढ़ हुआ।

पुत्र को राज्य सौंपकर मैं प्रवज्या लेने निकल पड़ा। रास्ते में कोई वृद्ध ब्राह्मण मिला। वह मुझे तरह-तरह के मार्मिक प्रश्न पूछने लगा। मैंने उसे वैराग्य से धधगते जवाब दे दिये।

''राजन् ! तृण की तरह राज्य को छोड़कर दीक्षा ले रहे हैं वह अच्छा है, परन्तु स्त्रीयां कितनी रो रही है ? इसलिये जीवदया के लिये भी दीक्षा नहीं लेनी चाहिये। कोई दुःखी होता हो वह जीवों की आदत नहीं हैं ?''

''कोई मेरे लिये नहीं रोता है, सभी अपने स्वार्थ के लिये रोते हैं।''

''तेरे महल इत्यादि जल रहे हैं उनके सामने तो देख।''

''ये महल इत्यादि मेरे नहीं हैं। मिथिला नगरी की चारों ओर मजबूत किला तो बनाते जाओ।''

''मेरा नगर है- संयम। किला है- शम। यंत्र है- नय।''

'' लोगों को रहने के लिये सुंदर मकान तो बनाते जाओ।''

''ये करनेवाले बहुत हैं। मेरे मन में तो जहां देह है वहीं घर है।''

''थोड़ा चोरों का निग्रह तो करते जाओ। कैसे सिरफिरे चार है।''

''राग-द्वेषादि ही सच्चे चोर हैं। उनका ही मुझे निग्रह करना है।''

''कुछ उद्धत राजाओं को झुकाकर विजेता बनकर दीक्षा ली तो अच्छा है।''

''युद्ध में लाखों सुभटों को जीतनेवाला भी सच्चा विजेता नहीं है। सच्चा विजेता तो वहीं है जिसने अपनी आत्मा को जीती है। मेरे ऐसे जवाब सुनकर उसने तुरन्त ही रुप बदला। देखा तो वह इन्द्र था। वह बोल उठा- हे मुनिवर ! आप धन्य है। आपने सच्ची साधुता जानी है। परीक्षा के लिये कुछ उलटा-सीधा पूछ लिया हो तो क्षमा करना।'' फिर इन्द्र स्वर्ग में चला गया। मैंने साधना करके घनघाती कर्मो को चकचूर करके केवलज्ञान प्राप्त अनंत संसार का अनंत ला दिया।

गड़रिये से राजा...!

''**मुझे** इस सुनहरे रंग के मैगने की आवश्यकता है। तुम इसके बदले जितना धन चाहोगे, मैंने देने को तैयार हूं।'' परशिया के राजा ने हंगरी के राजा मत्थियस के गड़रिये को प्रलोभन देते हुए कहा। मैं राजसिंहासन के सम्मुख असत्य भाषण नहीं कर सकता। यह सब राजा की भेड़े है। मैं उनकी आज्ञा के बिना एक भी भेड़ देने को तैयार नहीं हूं। गड़रिये ने उत्तर दिया।

गड़रिया बड़ा ईमानदार और सत्यवादी था। हुआ यह कि एक दिन परशिया के राजा अपनी अविवाहिता युवा पुत्री के साथ मत्थियस के अतिथि बने। बातों ही बातों में गड़रिये की चर्चा चल पड़ी। मत्थियस ने अतिथि को बताया ''मेरा गड़रिया हमेशा सत्य भाषण करता है। बड़े से बड़े प्रलोभन उसे विचलित नहीं कर पाते। यही कारण है कि पिछले कितने ही वर्षों से वह मेरे साथ कार्य कर रहा है।'' एक राजा के मुंह से गड़रिये की प्रशंसा परशिया के राजा को अच्छी न लगी। उसने कहा- ''देखना एक दो दिन में ही मैं उससे झूठ बुलवा दूंगा।''

''असंभव ऐसा हो ही नहीं सकता।''

यदि मैं उससे असत्य भाषण न करवा सका तो आधा राज्य हार जाऊँगा। और यदि वह असत्य बोला गया तो मैं आधा राज्य हार जाऊंगा। इस प्रकार की प्रतिज्ञा मैं आपके सामने करता हूं। मत्थियस ने जोश में कहा।

रात्रि के भोजनोपरान्त परशिया का राजा अपने शयन कक्ष में आया और पलंग पर लेटे-लेटे काफी रात तक यही सोचता रहा कि इस गड़रिये से कैसे असत्य भाषण करवाया जाय। फिर उसे ध्यान आया कि आज शाम को जब वह भेड़े चराकर वापस लाया था तब उनमें एक छोटा सा मेमना सुनहरे रंग का था। यदि अधिक धन का प्रलोभन देकर उसे खरीद लिया जाय तो उसे मेमने के गायब होने की कोई कल्पित कहानी गढ़कर राजा के सम्मुख कहनी होगी। जिससे मत्थियस का अहं चूर-चूर हो जायेगा।

कंचन से अधिक प्रलोभन कामिनी का होता है। ऐसा सोचकर राजा ने अपनी अपूर्व सुन्दरी कन्या को गड़रिये के पास भेजा। उसे अपने ऊपर पूर्ण विश्वास था कि हमारा वार खाली न जायेगा। बड़े-बड़े ईमानदार और संयमी व्यक्ति भी कंचन और कामिनी के प्रभाव में आकर फिसलते देखे गये है। फिर यह तो एक साधारण सा पशुपालक है। राजकन्या गड़रिये के पास जाकर कहने लगी-तुम्हारी भेड़ों में यह छोटा सा मेमना देखने में कितना सुन्दर लगता है। काश ! यह प्यारा मेमना मेरे पास होता तो मैं इसे और लाड़-दुलार से रखाती। इसके केश और मेरी केश राशि में कितना साम्य है। तुम यह मेमना मुझे दे दो। इसके बदले तुम जितना द्रव्य चाहोगे मैं तुम्हें अपने पिता से दिलवा दूंगी और मैं सदा तुम्हारी आज्ञा का पालन करुंगी। मैं तुम्हारे लिए एक शीतल पेय भी लायी हूं। गड़रिये को उस समय प्यास लग रही थी। उसने राजकुमारी के हाथ से जल पात्र लेते हुए कहा- मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तुम प्रलोभन देकर इस मेमने को लेना चाहती हो। पर मैं किसी भी मूल्य पर अपनी ईमानदारी और जिम्मेदारी बेच नहीं सकूंगा। गड़रिये ने पात्र को होठ से लगाया और उसे रिक्त करके राजकुमारी को वापस कर दिया। वह समझ गया कि वह मधुर पेय जल नहीं तीखी मदिरा है। शनैः शनैः उसे मूर्छा आने लगी। मौका पाकर राजकुमारी ने उस मेमने को उठा लिया और राजभवन वापस आ गई। पिता ने जब पुत्री की गोद में मेमना देखा तो वह खुशी से चीख पड़ा-बेटी ! तुमने आज मेरे मन की मुराद पूरी कर दी अब मैं मत्थियस को लज्जित कर सकूंगा। राजभवन में मत्थियस, परशिया के राजा, उनकी युवा पुत्री तथा अन्य कई मंत्री भी बैठे चर्चा कर रहे थे। उसी समय गड़रिया आया। उसने सबको उचित अभिवादन कर बड़े शिष्टाचार के साथ कहा-राजन् ! आज मैंने सुनहरे मेमने को उससे भी सुन्दर मेमने से बदल लिया है। मेरा विश्वास है कि अपने लिये यह घाटे का सौदा नहीं है और यह सुन्दर मेमना यह रहा। गड़रिये ने राजपुत्री की ओर संकेत करते हुए कहा। सारी बात सामने आई। परशिया के राजा का सारा प्रयास व्यर्थ गया। एक सामान्य से गड़रिये की ईमानदारी और सत्यवादिता पर सब मुग्ध थे। परशिया नरेश पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार आधा राज्य हार चुके थे।

मत्थियस ने यह जीता हुआ राज्य गड़रिये को देते हुए कहा- वत्स ! तुम्हारी कर्त्तव्य निष्ठा से मैं प्रसन्न हूं। आज तुमने मेरे सम्मान की बहुत बड़ी रक्षा की है। मैं भी तुम्हें अपने राज्य का एक भाग पुरस्कार स्वरुप प्रदान करता हूं और अब तुम दोनों खण्डों के राजा हुए।

परशिया का राजा खड़ा हो गया। उसने कहा- ईमानदारी और कर्त्तव्य निष्ठा मनुष्य का सबसे बड़ा गुण है। मैं ऐसे ही वर की तलाश अपनी लड़की के लिये कर रहा था। मुझे ऐसा साहसी और सत्यव्रती युवक बहुत खोज के बाद पहली बार मिला है। अतः मैं अपनी कन्या का हाथ भी इसके हाथों में सौंप कर निश्चित हो जाना चाहता हूं।

परशिया के राजा ने अपनी पुत्री का हाथ उस गड़रिये के हाथ में देकर बड़ी प्रसन्नता और संतोष का अनुभव किया। गड़रिये से राजा बनने वाले सम्राट इनोसेन्थ की कथा-गाथा अभी भी मध्य एशिया के देशों में बड़ी भाव-श्रद्धा के साथ कही सुनी जाती है।

महावीर की दीपाशिखा : अपने अंतस में जलाएं....

दीपावली दीये का त्यौहार है, धुऐं का नहीं। मुझे समझ नहीं आता कि भगवान श्रीमहावीर के निर्वाण उत्सव पर आतिशबाजी को जगह कैसे मिल गई, मोक्ष गमन से पटाखों का क्या रिश्ता है, बात समझ से परे है। अतिशयवाले पर्व को आतिशबाजी का पर्व बनाना अतिशय की धज्जियां उड़ना है। आप जानते है कि आतिशबाजी किसी के घर दीया बुझा सकती है। बात मिट्टी के दीयों की नहीं है, आतिशबाजी ने तो कुल दीपक ही बुझा दिये हैं। त्यौहार हाहाकार में बदल जाता है। इसलिये मेरा लोगों से कहना है कि दीपावली पर दीये तो जलायें पर किसी का घर न जलायें, दीये के त्यौहार में दीप जलायें, दीये से दीये जलेंगे, तो प्रकाश होगा और दिल से दिल जलेंगे तो विनाश होगा। अमावस्या की अंधेरी रात को भगवान श्रीमहावीर अपनी दिव्य ज्ञान की रोशनियों से झिलमिला गये। उन्होंने अपनी साधना और तपस्या के बल पर अनेकों बुझे हुए दीपकों को छुआ उन्हें रोशन किया और स्वयं परम निर्वाण को प्राप्त हो गये। वैसे देखा जाए तो अपने प्रिय का बिछोह होने पर खुशियां नहीं दुःख मनाया जाता है। पर भगवान महावीर का दर्शन वियोग को भी जो उत्सव का और मृत्यु को भी महोत्सव का रुप देता है।

महावियोग में भी मनाया महोत्सवः-

भगवान श्रीमहावीर का हमसे महावियोग हुआ तो हम रोये नहीं, हमने महोत्सव मनाया। हमने लड्डू चढ़ाए। हमने दीपक जलाए, हमने मंदिर सजाए। हमने खुशियां मनाई। क्योंकि भगवान श्रीमहावीर ने जीते जी अपने आप को शरीर माना ही नहीं। श्रीमहावीर शरीर नहीं थे। वह ज्ञान की एक ज्योति थे। अमर अजर थे। नश्वर में भी ईश्वर बन बैठे थे। उन्होंने देह को अपना माना ही नहीं और सही संदेश उन्होंने अपने श्रावकों को दिया, तुम शरीर नहीं हो, तुम अजर-अमर शाश्वत तत्व हो। अविनाशी तत्व हो। यह तत्व बोध देकर चले जाने वाले महान तपस्वी का वियोग कैसे हो सकता है। जो महावीर नहीं थे, वह आज भी नहीं है, कभी नहीं होंगे और जो श्रीमहावीर थे, वह आज भी है, हमेशा रहेंगे। महावीरत्व की साधना में श्रीमहावीर आज भी मौजूद हैं।

परम ज्योति से जले अन्तस की ज्योतिः-

हमने यदि दीप जलाये हैं तो इसलिये नहीं कि बाहर उजाला हो। हमने तो दीप इसलिए जलाए हैं कि जो परम ज्योति उनके भीतर जली है उस ज्योति से हमारी भी अन्तस ज्योति जले। बाहर के दीये तो जलते हैं और बुझ जाते हैं, लेकिन अन्तस की दीपशिखा का क्या जलना, क्या बुझना। भगवान महावीर की निर्वाण बेला पर उनके भीतर के उजालों की एक किरण भी हमारे भीतर आ जाये तो हमारा जीवन खुद दीपावली हो जाये।

जो पवित्र करे वो पावकः-

अग्नि को पावक कहा गया है। पावक का अर्थ होता है जो पवित्र करें। अग्नि वह तत्व है, जो हर अशुद्ध को जलाकर राख कर देती है। अग्नि की एक विशेषता है कि वह शुद्ध को नहीं जलाती। शरीर अशुद्ध है, आत्मा शुद्ध है। मृत्यु उपरांत वह देह को तो जला देती है, आत्मा को नहीं जला पायेगी। यही वजह है कि इस पावक ने सीता जैसी सतियों को भस्म नहीं किया, क्योंकि सीता शुद्ध थी।

पावापुरी जो कभी उद्यान था आज सरोवर बन गयाः-

श्रीमहावीर शुद्ध हुए तो उनकी देह को आग जला न पाई और आज के दिन जहां से वह मुक्ति को प्राप्त हुए उस नगर का नाम भी पावा हुआ। पावा शब्द बना है पावक से। जिसने महावीर जैसी महान आत्मा को पावक कर दिया जो श्रीमहावीर जैसी देह को पाकर खुद पावक हो गई, ऐसी अग्नि और ऐसा स्थान पावा हो गया। पावा का वह उद्यान जहां भगवान श्रीमहावीर ने अपने जीवन का अंतिम समय बिताया, आज वह सरोवर के रुप में है। निश्चित ही महावीर के समय यह सरोवर नहीं था। उनके समय तो यह उद्यान था, तपोवन था। लेकिन श्रीमहावीर ने निर्वाण के बाद उनके शेष बचे हुए नख और केश को इन्द्र जब मायामयी शरीर में स्थापित करता है और मृत्यु उपरांत नश्वर देह के अग्नि संस्कार की परम्परा को पूर्ण करता है तो भगवान की पवित्र देह अग्नि में भस्म होकर लोगों की पवित्राता में कारण बनती है। सारे देवगण उस भस्म को आस्था और श्रद्धा के वशीभूत होकर अपने शरीर पर लगाते हैं तो भस्म लेते-लेते उस स्थान पर बहुत बड़ा गड्डा हो जाता है, जो कालांतर में सरोवर का रुप ले लेता है। यही वजह है कि भगवान श्रीमहावीर की निर्वाण स्थली पावापुरी जो कभी उद्यान थी आज सरोवर बन गई।

भगवान का मौन संदेशः-

भगवान श्रीमहावीर ने ध्यान अग्नि में जिन कर्मो को भस्म किया था, वह मोक्ष रुपी शीतल जल का रुप ले गई। आज भी उस सरोवर में प्रातः कमल खिला करते हैं, जो भगवान श्रीमहावीर का मौन संदेश दे रहे हैं कि कीचड़ में पैदा होकर भी कीचड़ से ऊपर उठकर जिओ। संसार में रहकर भी संसार से निर्लिप्त रहो। यही जीवन की साधना है। कीचड़ में कीड़े की तरह मत रहना, कीचड़ में कमल की भांति जीओ। जो ऐसे जी लेता है वह जीवन की मिठास को प्राप्त कर लेता है और उसी मिठास के प्रतिरुप मीठे-मीठे लाडू जैन समाज मंदिर में चढ़ाता है।

राग रंग में भी विराग का अनुभवः-

लड्डू मीठे है, लड्डू का कोई और छोर नहीं है, वह तो गोल है, उसका कोई प्रारंभ और अंत नहीं है, कहीं से भी चखा जाये वह मीठा है। वैसे ही हमारे आत्मतत्व का कोई प्रारंभ और अंत नहीं है। कहीं से भी अनुभव किया जाये, आत्मा तो आत्मा है। सम्पूर्ण लेख का सार यही है, हम जैन धर्म के अनुयायी राग रंग में भी विराग का अनुभव किया करते हैं। विषय भोग में भी योग का स्वाद चखा करते हैं। हम जीवन को भी मृत्यु समझते हैं और मृत्यु को भी जीवन समझते हैं। अंधेरों में भी दीप जलाते है और अमावस्या को भी पूर्णिमा बना देते है। इसीलिए दीपावली पर दीप जलाते हैं। अंत में यही कहूंगा कि जो ज्योति भगवान श्रीमहावीर के अंतस में जगी है, वही हमारे भीतर भी जगे। यदि वह ज्योति न जले तो दीये जलाने भी व्यर्थ है। वीतरागता की ज्योति जल गई तो यही दीपावली का सच्चा अर्थ है।

जो दीवाली भगवान श्रीमहावीर के जीवन में आई,
वह मेरे जीवन में, आपके जीवन में,
हम सबके जीवन में आये....
अखिल विश्व के जीवन में ऐसी ही आस्था के दीये
सदा जगमगाते रहें,
झिलमिलाते रहें.... ऐसी शुभभावनायें रखता हूं...

माँ को कहां ढूंढे बंदे ? मैं तो तेरे पास में !

भक्ति के समर्पण भाव में मग्न हो भक्त ने नतमस्तक हो गुहार की- ''हे महाप्रभु ! मैं आपके पतित पावन रुप के दर्शन का प्यासा हूं- आप जहां कहीं हो मुझे दर्शन देकर कृतार्थ कीजिए।'' एकाएक एक अदृश्य स्वर सुनाई दिया- ''अरे भावुक भक्त ! तेरे निवेदन में सत्य कहां है ? तू मेरे वास्तविक स्वरुप के दर्शन के लिये अधीर कब हुआ ? तुझ में वह पुरुषार्थ कहां ? तू विवेक चक्षुओं से देख- मैं तेरे सम्मुख कई रुपों में नित्य उपलब्ध हूं। विवेक के अभाव से तू मुझे नहीं पहचान सका। मेरे अनन्त रुप है- मैं विश्व के सभी स्थानों पर शिवम् रुप (कल्याणकारी भाव) में विद्यमान हूं।

जब तू क्रोधाग्नि में जल रहा था- मैं तेरे सामने क्षमा रुप में उपस्थित था- परन्तु उस समय तुझे क्षमा रुपी पीयूष पान करने को अवकाश था कहां ? जब तुझे अभिमान ने अंधा बना, गुरुजनों के सम्मुख मूढ़वत् खड़ा कर रखा था, मैं उस समय मृदुता रुपी दिव्य-ज्योति मुकुलित नेत्रों का उन्मीलन किया कब ? इस कारण तू मेरे दर्शन से वंचित रहा। यह निश्चयपूर्वक मान ले-'' जहां सद् है-गुण है-वहां मैं हूं।'' यदि तेरा मानस मंदिर सद्गुणों से समन्वित है तो मैं वहां भी हूं।

जिस प्रकार तमोग्रह-राहु से ग्रसित सूर्य भी दिन में अपना रश्मिजाल उद्भासित नहीं कर सकता है-राका-रजनी में, राहु-पाश में बुद्ध चन्द्र-अपना उज्जवल प्रकाश विश्व को नहीं दे सकता है- उसी प्रकार तेरा मन जब तक दुर्गुणों रुपी काल छाया से आवेष्टित है-प्रकाशित नहीं हो सकता है, तब तक मेरे दर्शन भी संभव नहीं है। तू प्रयत्न कर-यदि मेरे आदर्श रुप के दर्शन चाहता है तो अपने मानस रुपी नभ को निरभ्र बना-तमोगुणी छायाओं से मुक्त कर।

ज्योतिष शास्त्रानुसार तिथियों के स्वामी

प्रतिपदा-अग्नि, द्वितीया- ब्रह्मा, तृतीया- गौरी, चतुर्थी-गणेश, पंचमी-शेषनाग, षष्ठी-कार्तिकेय, सप्तमी-सूर्य, अष्टमी-शिव, नवमी-दुर्गा, दशमी-काल, एकादशी-विश्वेदेवा, द्वादशी-विष्णु, त्रयोदशी- कामदेव, चतुर्दशी-शिव, पूर्णिमा-चन्द्रमा, अमावस्या-पितर।

ज्योतिपर्व आओ करें आत्मावलोकन

समग्र जीवन की प्रतिपादक भारतीय संस्कृति की एक मौलिक विशेषता है, पर्व-त्यौहारों की अविरल श्रृंखला। ये पर्व-त्यौहार जहां सामूहिक उल्लास एवं जीवंतता के द्योतक है, वहीं सामाजिक चेतना के परिष्कार के सशक्त माध्यम भी हैं। वर्ष के 365 दिनों में वह कौन सा दिन है, जिस दिन कोई पर्व न हो। पर्वो की इस अटूट श्रृंखला में मुकुटमणि का स्थान यदि किसी को भी प्राप्त है तो वह है, प्रकाशपर्व दीपावली। दीपावली मात्र एक पर्व अथवा त्यौहार नहीं, अपितु पर्वपुंज है। कार्तिक कृष्ण एकादशी अर्थात एकादशी से प्रारंभ कर द्वादशी, त्रयोदशी,नरक चतुर्दशी एवं दीपावली, अन्नकूट-गोवर्धन- प्रतिपदा और भ्रातृ अथवा द्वितीया तक पूरे सात दिन तक, यत्र-तत्र-सर्वत्र दीपमालिका का प्रकाश दृष्टिगोचर होता है। यह श्रेष्ठ पर्व पुंज भारतीय संस्कृति का अत्यंत महत्वपूर्ण प्रसंग है, जिसमें आनंद और प्रकाश की शाश्वत विजय का बड़ा मार्मिक इतिहास जगमगा रहा है। प्रचलित मान्यताओं के अनुसार इस दिन जैन धर्म के अनुसार जैन तीर्थंकर भगवान महावीर ने इसी दिन निर्वाण प्राप्त किया था और देवलोक से समस्त देवताओं ने दीप जलाकर उनकी स्तुति की थी। रघुवंशी भगवान श्रीराम ने वनवास की चौदह वर्षीय अवधि को पूरा कर अयोध्या में पर्दापण किया था। इस आगमन की खुशी में अयोध्यावासियों ने घी के दीए जलाए थे। तब से दीपावली प्रतिवर्ष मनाई जाने लगी। इसी दिन धर्मराज यम ने जिज्ञासु नचिकेता को ज्ञान की अंतिम वल्ल का उपदेश दिया था। पतिव्रता सावित्री ने भी इसी दिन अपने अपराजेय संकल्प द्वारा यमराज के मृत्युपाश को तार-तार कर मनवांछित वरदान पाया था।

ज्योतिपर्व के साथ जुड़े पावन प्रसंगों की यह श्रृंखला अनंत है। जो भी हो भारत भूमि का सबसे महान पर्व दीपावली सदैव अंधकार से लड़ने की हमारी उत्कट अभिलाषा और प्रबल जिजीविषा का प्रतीक रहा है परन्तु न जाने क्यों दीपावली का पर्व शताब्दियों से पसरे उस अंधकार को दूर नहीं कर पा रहा है, जो भारतीय जनजीवन को निराशा और संत्रास की अतल गहराईयों में धकेल रहा है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के 73 वर्षो बाद भी भारतीय जनमानस की जो स्थिति है, वह एक व्यापक मोहभंग एवं एक भयंकर मनोवैज्ञानिक संघात की है। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक धरातल पर एक विचित्र-सी सड़न व्याप्त है। जातिवाद, क्षेत्रवाद और सांप्रदायिकता की बेड़ियों में जकड़ी राजनीति अपने ही संकीर्ण स्वार्थो की कारा में वंदिनी है। देशकाल पर छाया महाशून्य सुरसा की तरह अपना आकार बढ़ाता जा रहा है। चहुं ओर हिंसा, आंतक, भय, घृणा व संशय का वातावरण जनजीवन को आक्रांत कर रहा है।

आज रक्तरंजित कश्मीर, मर्मातक संघात सहती गुर्जर भूमि, सुलगता तेलंगाना एवं झारखंड, जर्जर बिहार और उत्तर पूर्व हमें सौगात में मिले हैं अथवा हमारी राजनीतिक नेतृत्व की देन है। बाहरी आक्रमणों का भय पूर्व की अपेक्षा बढ़ा है। पाकिस्तान और चीन के कुत्सित इरादे, छद्मयुद्ध एवं आतंकी घुसपैठ आए दिन देश की नींद हराम किए हुए हैं। इनकी आतंकी गतिविधियां, अबाध घुसपैठ एवं आत्मघाती बम-विस्फोटों की रक्तरंजित श्रृंखलाएं राष्ट्र को ब्राह्य चुनौतियों के रुप में सतत आक्रांत किये हुए हैं। उस पर करेला नीम चढ़ा की भांति देश की भीतरी दुर्दशा से स्थिति और बदतर हो रही है। बेरोजगारी, युवा असंतोष, जातीय हिंसा, सांप्रदायिक तनाव, माफिया गिरोहों का अंतरजाल आए दिन रक्तपात आदि समस्याओं से स्थिति भयावह होती जा रही है। इन भयावह आंतरिक एवं बाह्य समस्याओं तथा चुनौतियों के मकड़जाल में उलझा राष्ट्र इनसे मुक्त होने के लिये तड़प रहा है, छटपटा रहा है। कब, कैसे व किस तरह वह इस भयावह एवं दुसह्य प्रारब्ध से मुक्त होगा ? कौन इस दुर्दशा से उसका उद्धार करेगा ? ये महाप्रश्न सौ करोड़ अभिशप्त लोगों के समक्ष खड़े हैं, जिनका वे यथोचित उत्तर चाहते हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात जिस लोकसंपदा एवं शक्ति का नियोजन लोकहित में गरीब, असहाय, अशिक्षित, पिछड़े एवं दलित वर्ग के उत्थान में होना था, उसकी बँदरबाँट स्वार्थी एवं भ्रष्ट राजनेताओं और कालाबाजारी करने वाले व्यापारियों के बीच हुई। इनमें एक और वर्ग जुड़ा- शहर-कस्बे स्तर पर उग आए, छुट भैया नेताओं का, धूर्त और ढपोरशंख लोगों का। ओछी हरकतों, खोखले भावुक नारों, बाहुबल और काले धन से जीती हुई राजनीतिक शक्ति के मद में चूर राजनेताओं ने उत्पादन के समस्त स्रोतों को जोंक की तरह चूसना प्रारंभ किया। बौद्धिक और नैतिक दृष्टि से खोखले ये नेता सर्वशक्ति मान बन बैठे हैं ।जनता की सामूहिक रचनात्मक शक्ति के विकास के स्थान पर इस विगलित एवं महाभ्रष्ट राजनीति ने इसे अपने राजैनैतिक व्यापार का अस्त्र बना लिया है। वस्तुतः आज की राजनीति 130 करोड़ जनता की पराजय का दस्तावेज है। सौ 130 करोड़ भारतवासी अभिशप्त है और कुछ आदमी राजनीतिज्ञ मदमस्त। ये राजनीतिज्ञ एक आम आदमी की पीड़ा और निराशा को समझने के लिये अपनी-अपनी अट्टालिकाओं से नीचे उतरने को तैयार नहीं है। जो शोषण एवं पीड़ा के अभिशाप को झेलने को मजबूर हैं, वे इस कदर पंगु, निकम्मे और असहाय बना दिए गए हैं कि इस झंझावात से उबरना उनके लिये दुष्कर लगता है। ऐसे में ज्योतिपर्व तो अब एक औपचारिकता बनकर रह गया है। अपनी परंपरागत प्रवाह की लीक में बहते असंख्य दीप अवश्य

जलते है, किन्तु इनकी ज्योति अंतर्मन को प्रकाशित नहीं कर पाती। परिणाम स्वरुप आंतरिक अंधकार गहराता जाता है और हमारी कुंठित आशाएं मानसिक विकृति की दशा में बहाए जा रही है। संक्रांति के परिवर्तनशील दौर में नैतिकता, मर्यादा एवं मूल्यों का पथ धुँधलके में विलीन होता जा रहा है। इससे उपजी कुंठा व्यक्तिगत जीवन में अर्द्धविक्षिप्त मनोदशा, पारावारिक जीवन में वैमनस्य एवं सामाजिक जीवन में विघटन एवं टूटन के साथ चतुर्दिक अराजकता, आतंक एवं अशांति के रुप में परिलक्षित हो रही है। शहरों में पारिवारिक जीवन में घुलता विष आने वाली पीढ़ी को कुसंस्कारित ही बना रहा है। इसका दुष्परिणाम पूरे समाज और देश को भुगतना पड़ रहा है। अभिभावक अपने नैनिहालों के प्रति महान दायित्व से, समय की कमी का रोना-रोकर पल्ला झाड़ रहे हैं। उनका समय कटता है तो चौराहों की गप-शप में, दुनिया भर के प्रपंच-जाल में और महफिल-पार्टियों की अय्याशी एवं विलासिता में। माताएँ बाल कटाकर ब्यूटी पार्लर में प्रत्येक सप्ताह जाकर सौंदर्य के टिप्स लेना जरुरी समझती है। देश का भविष्य किन संस्कारों को लेकर बड़ा होता होगा ? विचारणीय है। विशाल वटवृक्ष सरीखी देश की विराट सांस्कृतिक अवधारणा भी आज खतरे में है। इसकी जड़ों पर कुठाराघात हो रहा है। इसकी टहनियों को कुतरा जा रहा है। सामाजिक व्यवस्था को सुचारु रुप से संचालित करने के लिये जिस वर्ण-व्यवस्था की स्थापना ऋषियों ने की थी, उसकी दुर्दशा-दुर्गति हो रही है। गुण-कर्म-स्वभाव की अपेक्षा जन्म से जाति को जोड़कर जातीय दंभ-दुराग्रह सक्रिय हैं, उस पर राजनीति का रंग जातीय हिंसा के रुप में समाज को लहूलुहान किये हुए है। विश्व को धार्मिक सहिष्णुता एवं उदारता का पाठ पढ़ाने वाला राष्ट्र आज धार्मिक संकीर्णता एवं सांप्रदायिक हिंसा के दावानल में दग्ध हो रहा है। यहां भी संकीर्ण सांप्रदायिक सोच एवं राजनीतिक स्वार्थ ने धर्म के मूल भाव को कलंकित ही किया है। जिसके खूनी खेल में निर्दोष, असहाय, गरीब एवं धर्मभीरु जनता ही मोहरे बनती है। ऐसे में प्रख्यात गांधीवादी मनीषी प्रो. रामचंद्र सिंह के ये वचन यहां प्रासंगिक है, कितनी ही सदियाँ बीती, कितने ही हमने दीप जलाए पर ज्योतिपर्व मानव जीवन का अंधियारा दूर न कर सका। देश के भाग्य में अमावस्या की यह रात्रि न जाने कब और कितनी दूर तक लिखी है, यह तो भगवान राम ही जानें। जीवन तो वायु का एक झोंका है जो दो पल का मेहमान है। जीवन और मृत्यु के बीच जो थोड़े से पल हैं, उन्हें जितनी निष्ठा और प्रेम के साथ जिया जाए, वही मानव जीवन की उपलब्धियाँ हैं, किंतु सहस्त्रों दीपावलियां बीत गई, आशाओं की लताएँ सूखी ही रही। मन की अयोध्या कभी भी दीपान्वित न हो सकी। दरद जब तक भीतर रहता है, तभी एक वश में रहता है, बाहर आने पर यह बेकाबू हो जाता है। जिस पुनीत भूमि के लिये कहा जाता था- **''गायंति देवा किल गीतकानि, धन्यास्तु हे भारतभूमि भागे''** आज वह भारत भूमि नरक से भी अधिक कष्टप्रद स्थिति में है, किंतु सोए हुए घावों को न जगाना ही उचित है। अभी ज्यादा देर नहीं हुई है। वसंत की बयारें हमसे पूरी तरह रुठी नहीं है। पहल कौन करें ? निश्चय हम राजनेताओं से कोई आशा रखने की मूर्खता नहीं कर सकते। कालिदास के अनुसार चातक भी बिना पानी वाले बादलों से पानी नहीं मांगता। **''निर्गलितांबुगर्भः शरद्धन नार्दति चातकोऽपि।''** हमें वह करना होगा जो हमारे वश में है। हमें धर्माचरण करना होगा। वाल्मीकि ने कहा है- **''धर्मो हि परमो लोके धर्मे सत्यम् प्रतिष्ठितम्''** अर्थात् धर्म ही संसार में श्रेष्ठ है, धर्म से ही सत्य की प्रतिष्ठा है और धर्म का व्यावहारिक मर्म क्या है, इसे वेदव्यास ने महाभारत में स्पष्ट किया है-

श्रुयताम् धर्मसर्वस्व श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥

सावधान होकर धर्म का वास्तविक रहस्य सुनो और उसे सुनकर उसी के अनुसार आचरण करो। जो कुछ तुम अपने लिये हानिप्रद समझते हो, वह आचरण दूसरे के साथ मत करो। वर्तमान राष्ट्रीय संदर्भ में राजनीतिक मर्यादाहीनता ही सारे फसाद की जड़ है, उससे किसी समाधान की आशा व्यर्थ है। भर्तृहरि ने भी राजनीति को वेश्या के समान कहा है। इससे सच्चाई, निष्कपटता और स्वार्थहीनता की अपेक्षा नहीं रखी जा सकती है। वर्तमान परिस्थिति सचमुच जटिल है, किंतु युगमनीषा के अनुसार हमें जरुरत है बस थोड़ी-सी समझदारी की और ढेर सारे विश्वास की। मनोवैज्ञानिक अनास्था के घौर संक्रमणकाल में एक सौ तीस करोड़ लोगों का देश सिर्फ मर-मरकर जीने के लिये नहीं है। घोड़ा हल में नहीं जुटता, उसकी नियति तो रणक्षेत्र में ही उतरने की होती है। हमें संघर्ष जीतना ही होगा। खोने के लिये अब हमारे पास कुछ नहीं बचा है। हमें जो कार्य मिला है, उसे निष्ठा, पूरी लगन के साथ हम करें, यही वास्तविक पूजा, यही वास्तविक धर्माचरण है। ज्योतिपर्व तभी हमारे मन में और जीवन में कोटि-कोटि दीपों का प्रकाश स्थापित करने में समर्थ होगा, तभी जीवनकमल की पंखुड़ियाँ खिलेगी और तभी चेतना के अंधतमस में उजाला छाएगा। भ्रष्टाचार और सांप्रदायिकता के सर कट सकते हैं, प्यार में अगर थोड़ी-सी धार हो। हमारे युगों से सँजोए स्वप्न साकार हो सकते है, यदि हमारी श्रद्धा के साथ थोड़ी-सी निष्ठा का सबल आधार हो। आइए, इसी संकल्प के साथ अंतर्मन के दीप को प्रज्वलित करनेवाले ज्योतिपर्व के उल्लास को हृदयंगम करें।

विलक्षण ज्योतिष-विद्या-"हाजरात"

✻ डॉ. श्याममनोहरजी व्यास

लगभग चालीस वर्ष पुरानी सच्ची घटना है। उदयपुर जिले के एक कस्बे में मैं राजकीय सीनियर सेकेण्डरी विद्यालय में प्राचार्य के पद पर कार्यरत था। वहां मेरे दूर के एक संबंधी थे, जिनके घर अक्सर मैं जाया करता था। उनके पड़ौस में ही एक ज्योतिषी रहते थे। वे परलोकगत आत्माओं से सम्पर्क स्थापित करवाने का भी दावा करते थे। विज्ञान का स्नातक होने के कारण मैं उनकी बातों पर कम ही विश्वास करता था। मेरे संबंधी के पिताजी भीलवाड़ा (राज.) जिले के एक गांव में असाध्य रोग से पीड़ित हो गये। कभी-कभी उनकी तबियत का समाचार आ जाया करता था, लेकिन कुछ दिनों से उस गांव से कोई समाचार नहीं आया था। हमने सोचा था कि अब ज्योतिषी की विद्या की परीक्षा ली जाय और मैं अपने संबंधियों के साथ ज्योतिषी के घर गया था। उनसे निवेदन किया कि वे अपनी तांत्रिक साधना के द्वारा अमुक गांव में संबंधी बीमार पिता की बीमारी का समाचार मालूम करें।

उन्होंने हमारी प्रार्थना मान ली और कहा कि- इसके लिये वे ''हाजरात'' (सम्मोहन विद्या) का प्रयोग करेंगे। उन्होंने हमसे भीमसेनी काजल की और शुद्ध सरसों का तेल मंगवाया।

मैंने दोनों वस्तुएं लाकर उन्हें दे दी। संध्या के समय एक कमरे में प्रयोग किया गया। ज्योतिषीजी अपने एक बारह वर्ष के लड़के को लाये थे। आवश्यक सामग्री कमरे में जमा कर देने के पश्चात उन्होंने उस बालक को साफ-सुथरी जगह पर बिठाया और उसके बायें हाथ के अंगूठे के नाखून पर काला काजल (तेल एवं मंत्र-सिद्ध औषधियों के साथ) लगाया।

तदन्तर उन्होंने कुछ मंत्रोच्चारण किया। इसके पश्चात ज्योतिषी ने बालक को रंगीन नाखून को देखने को कहा। बालक बराबर नाखून की ओर देखता रहा। उन्होंने बालक से पूछा- ''क्या देखते हो ?''

बालक मानो सम्मोहित होकर कहने लगा- '' मैदान देख रहा हूं।''

ज्योतिषी-''अच्छा अमुक गांव में पहुंच जाओ।''

बालक-''हां पहुंच गया।''

ज्योतिषी- ''अमुक व्यक्ति के घर पहुंचो।''

बालक- ''हां आ गया।''

ज्योतिषी-''अच्छा बताओ, इनके पिताजी की तबियत कैसी है ? ''

बालक- आज तो ठीक है, पर दो दिन बाद प्रातः 10 बजे स्वर्ग सिधार जायेंगे।

इसके पश्चात तांत्रिक क्रिया समाप्त कर दी गयी। यह अशुभ जानकारी मिलने पर मेरे संबंधी तुरंत अपने गांव पहुंचे। ठीक दो दिन पश्चात काफी इलाज करवाने के बावजूद भी उनके पिताजी का निधन हो गया।

यह घटना अक्षरशः सत्य है। अध्यात्मविज्ञान के अनुसार ज्योतिषी ने बालक के अन्तर्मन (अवचेतन) को सम्मोहन एवं तंत्र-साधना द्वारा अधिक क्रियाशील बना दिया था,जिससे उसे त्रिकालदर्शिता की अनुभूति हुई थी। दूरानुभूति एवं भविष्य-दर्शन की यह चामत्कारिक घटना मेरे लिये सदैव अविस्मरणीय रहेगी।

अर्हत् स्वरुप

श्री गौतमस्वामी ने पूछा है कि- अकार की तरह अर्हत् भगवान में अनन्त शक्तियां समाई हुई है उन अर्हतों में स्थित कुछ भावों का स्वरुप मुझे बताइए।

श्री भगवान ने उत्तर दिया अर्हंत परमात्मा सूर्य स्वरुपी सिद्ध है उनके नाम रुप अकार अष्ट वर्ग है (क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग,) अन्तस्थ उष्म विसर्ग। इसलिये वे अर्हत् अष्टमूर्ति ईश्वर भी हैं। द्वादश सूर्य राशियों के उदय के समय 24 हो जाते हैं वैसे ही अर्हत् भी 24 प्रकार के हैं। अकार से कृष्ण या शिव का बोध नहीं होगा क्योंकि इन स्वरुपों के वामांग में लक्ष्मी अथवा पर्वती प्रतिष्ठित है परन्तु अर्हत् भगवान के तो चरण कमलों के नीचे देवी की स्थिति है। अर्हत् परमात्मा सहनशीलता में साक्षात् पृथ्वी है। चित्त की निर्मलता में समुद्र का जल है, अप्रतिहत गति के कारण वायुरुप है एवं उग्र तपस्या के तेज से वे अग्नि स्वरुप है और विरालम्ब होने से आकाश है। अर्थात् पंच महाभूत सदृश स्वरुप है।

दीपावली के साथ जुड़ी है भगवान महावीर की दिव्य निर्वाण कथा

✽ अनुयोगाचार्य.श्री वीररत्न विजयजी म.

समग्र विश्व को अपने आगमन से आहलादित, आलोकित बना देता है यह दीप पर्व खुशहाली को लेकर आता है यह प्रकाश पर्व तथा मन-मंदिरों में स्मृतियां जग जाती है, भगवान महावीर स्वामी के दिव्य निर्वाण की। श्रद्धा भक्ति तथा चारित्र के द्वारा जीवन निर्माण के उद्‌गाता प्रभु महावीर का निर्वाण यत्र-तत्र-सर्वत्र यदा-कदा-सर्वदा अहिंसा अनेकांत तथा अपरिग्रह का अनाहत नाद गंजित कर देता है।

भगवान श्रीमहावीर स्वामी का बिहार के अपापापुरी में निर्वाण यानी मोक्ष हुआ था। संसार त्याग करके प्रभु ने लगातार 12 $^1/_2$ वर्षो तक कठोर साधना करके अज्ञान मोह की बदली हटाकर ज्ञान के पर्व प्रकाश को प्राप्त किया। तीस-तीस साल तक भारत के विभिन्न भागों में पाद-विचरण करते हुए श्री इन्द्रभूति गौतम आदि 14 हजार पुण्यात्माओं को साधु-पद महासाध्वी चंदनबालाजी आदि 36 हजार बहिनों को साध्वी पद, शंख शतक आदि 1,59,000 व्यक्तियों को श्रमणों पासक पद तथा 3,18,000 बहिनों को श्राविका पद प्रदान किया।

इतिहास के पन्ने बोल रहे हैं- आज तक जितने भी तीर्थंकर बने उन सभी ने प्रायः निर्वाण के समय मौन को रखा किन्तु विश्व कल्याण की मंगलभावना रखनेवाले प्रभु के निर्वाण के समय भी लगातार सोलह-सोलह प्रहार यानी 48 घंटे तक आत्मीय देशना दी जो जैन इतिहास की अनूठी घटना है। प्रभु का अंतिम चार्तुमास बिहार के अपापापुरी में हस्तिपाल राजा की सभा में था। इस समय नवमल्ली तथा नवलच्छी राजाओं के साथ हजारों भक्तों ने प्रभु की आखरी देशना को सुना था। इस देशना को शब्दस्थ किया गया श्री उत्तराध्यन सूत्र के रुप में।

निर्माण के बाद निर्वाण के इन पावन क्षणों में पुण्यपाल नामक राजा ने स्वयं को आए आठ कल्पनातीत स्वप्नों का वर्णन प्रभु से किया। तब उदारमना परमात्मा ने इन स्वप्नों के फल को बताते हुए भावि-भारत में होने वाली लोमहर्षक घटनाओं को प्रदर्शित किया। प्रभु ने जो कुछ भी कहा वह वर्तमान भारत में तथा सारी दुनिया में स्पष्ट रुप में सत्या साबित हो रहा है। फल विवेचन में प्रभु ने कहा था निम्न कुलों में से व्यसन कम होते दिखेंगे जबकि उच्च कुलों में व्यसनों का जाल बढ़ता जाएगा।

महा-निर्वाण के पहले प्रभु से स्वर्ग के इन्द्र ने विनम्र शब्दों में वेदना भरा निवेदन किया था- प्रभु ! अभी आप की जन्म राशि पर क्रूर भस्म गृह का जाल शिकंजा लेता जा रहा है। कृपया आप अपना आयुष्य कुछ क्षणों के लिये बढ़ा दे अन्यथा इस दुष्टग्रह का असर आपके शासन पर दो हजार वर्षो तक बना रहेगा। प्रभु ने शान्त भाव से कहा- इन्द्र ऐसा कभी हुआ नहीं, न ऐसा कभी होगा। भाविभाव जो सुनिश्चित है वह होना ही है, आयुष्य में वृद्धि कभी होती नहीं।

अपार ज्ञान के स्वामी होते हुए भी इन्द्रभूति श्री गौतमस्वामी को परम श्रद्धेय प्रभु श्रीमहावीर के प्रति उत्कट राग था, प्रभु का सान्निध्य छोड़ने का उनका कभी मन भी नहीं होता है। प्रभु को देखकर उनके तन-मन-आत्मा में अद्‌भूत तृप्ति का भाव देखने को मिलता था। प्रभु इस सारी परिस्थिति से सुपरिचित थे, मेरा निर्वाण यह देख नहीं पाएगा अतः प्रभु ने कह दिया- गौतम जाओ देवशर्मा को प्रतिबोध करके आओ। आज्ञा के सामने आवाज का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। गौतम प्रतिबोध करने चल पड़े, उधार भगवान श्री महावीर ने निर्वाण के रुप में अनंत की यात्रा प्रारंभ कर दी।

प्रभु श्रीमहावीरस्वामी के निर्वाण ने लाखों भक्तों की अन्तरात्मा को झकझोर दिया, सभी ने कहा भावदीप तो चला गया, उनकी स्मृति में द्रव्य दीप ही जला दें.... और चारों तरफ दीपमाला की पंक्तियां जगमगा उठी, तभी से प्रारंभ हुआ यह दीपावली पर्व।

मन में है,
साफ -साफ कह दो,
फै सला, फ ासले से बेहतर होता है

वक्त का पता नहीं चलता अपनों के साथ
पर,
अपनों का पता चलता है वक्त के साथ।

राग-द्वेष

राग का मतलब है- एक तरफा आकर्षण या स्नेह की अधिकता के कारण उपजी मनोवृत्ति, जो कि प्रेम का विकृत रुप है। दोनों ओर से परस्पर आकर्षण हो तो प्रेम कहा जाय। राग रंग को भी कहते है, मतलब किसी के रंग में रंग जाना। किसी पर इतना आसक्त हो जाना कि उसके दुर्गुण दोष, बुराई दिखायी ही न दें। कोई आकर बताये तब भी विश्वास ही न हो, बल्कि सुनानेवाले पर क्रोध आने लग जाय। राग और आग में राग अधिक खतरनाक है, क्योंकि आग तो छूने पर ही जलाती है, पास आने पर ही जलाती है, परन्तु राग तो हजार कि.मी.दूर से भी जलाता है। आग केवल शरीर को जला सकती है, परन्तु राग तो दिल को जलाता है, धीरे-धीरे देह को भी घुन-जैसा लग जाता है। राग व्यक्ति को अंधा बना देता है। कहते हैं कि लोचनान्ध को नहीं दिखाता, परन्तु रागान्ध को नेत्र होने पर भी नहीं दिखाता **(रागान्धो नैव पश्यति)**। इसका उत्कृष्ट उदाहरण है धृतराष्ट्र। उसे अपने दुष्टपुत्र दुर्योधन के दोष नजर ही नहीं आते। पुत्राविषयक रागरुपी रतौंधी (मोतियाबिन्द)- ने धृतराष्ट्र के विवेकरुपी नेत्रों को हर लिया है। राग में जो रहे, वह अग्निबीज। र+आग+राग अर्थात् अग्नि बीजमंत्र-विशिष्ट आग ही राग है, जिसमें मंत्राजन्य दाहकता भी समाविष्ट है।

राग-द्वेष एक ऐसी लाइलाज मानसिक बीमारी है, जिसकी दवा दुनिया के किसी चिकित्सक के पास नहीं है और इस रोग से पीड़ित रोगी हमारे-आपके बीच फैले हुए है, किसी को इसकी चिंता ही नहीं। इस लेख में राग-द्वेष को दूर करने का उपाय है

द्वेष का मतलब है- अकारण ही किसी व्यक्ति के प्रति एकतरफा घृणा का भाव मन में आना, परिणामतः उसकी हर क्रिया में कमी नजर आने लग जाती है। जिससे द्वेष हो जाता है, उसमें दोष ही दोष नजर आते हैं, गुण दिखाते नहीं। इसीलिये कहा है कि **द्वेषान्धों नैव पश्यति।** इसका प्रमुख उदाहरण है शिशुपाल, जिसे श्रीकृष्ण में कोई अच्छाई दिखायी ही नहीं देती। दुर्योधन को पाण्डवों में कोई गुण नजर ही नहीं आता। राग-द्वेष एक ऐसी लाइलाज मानसिक बीमारी है, जिसकी दवा दुनिया के किसी चिकित्सक के पास नहीं है और इस रोग से पीड़ित रोगी हमारे-आपके बीच फैले हुए है, किसी को इसकी चिंता ही नहीं। कैंसर, मधुमेह (शुगर), हार्ट, ब्रेन की चर्चा है, चिन्ता है परन्तु जिस महामारी ने पूरे विश्व की मानवीय संवेदनाओं को तहस-नहस करके रख दिया, समग्र मानव जाति की मानसिक शांति तथा आनन्द के उपवन को उजाड़ डाला, भयंकर महायुद्धों के दावानल में समग्र विश्व को झोंक डाला, उसका ही नाम है ''राग-द्वेष'' और इसकी चिंता किसी को नहीं।

भाई! इसका उपचार होने में कठिनाई ये है कि रोगी को खबर ही नहीं चलती कि वह राग अथवा द्वेष से पीड़ित है। यदि उसकी प्रवृत्तियों से आहत परिवार के, पड़ोस के, गांव के अथवा अन्य हितैषी जन उसे समझाने की कोशिश करते हैं तो वह अधिक नाराज होकर द्रुत गति से इस बीमारी को हृदय में संजोता जाता है, लोगों पर आक्षेप करता है कि आप सब मेरी उन्नति से जलते हैं। अन्ततः सुबुद्ध लोग समझाकर (जैसे धृतराष्ट्र को विदुर-भीष्म -द्रोण-व्यास-नारदादि समझाकर थक गये थे, परन्तु वह स्वीकार ही नहीं करता कि मैं गलत हूं) थककर अलग हो जाते हैं, चुप रहकर महाविनाश के ताण्डव को देखते रहते हैं।

रागान्ध अपनों के दोष नहीं देख पाता। द्वेषान्ध परायों के गुण नहीं देख पाता। द्वेषान्ध परायों के गुण नहीं देख पाता। अर्थात् यथार्थ देखने तथा जानने की अक्षमता रागद्वेष जन्म है और इसकी चिकित्सा है, सत्संगरुपी दर्पण में आत्मालोचन-आत्मचिन्तन। स्वयं का स्वयं के द्वारा सूक्ष्म निरीक्षण तथा स्वाध्याय इसकी पहचान का सहज उपाय है। यथा-

प्रथम चरण **''कौन''**- आप एकान्त में बैठकर सहज भाव से विचार करें कि दुनिया में वह कौन व्यक्ति है जो मुझे सबसे ज्यादा प्यारा लगता है और वह कौन है, जिसका नाम सुनते ही, चेहरा दिखते ही मन खिन्न हो उठता है। फिर मन में उन लोगों को एक तरफ रखो, जो आपको बहुत अच्छे लगते हैं तथा दूसरी तरफ उनको रखो, जो आपको बुरे लगते हैं।

द्वितीय चरण **''क्यों''**- अच्छे लगनेवाले आपको क्यों अच्छे लगते हैं? तथा बुरे लगनेवाले आपको क्यों बुरे लगते हैं? कारण खोजो, सोचो।

तृतीय चरण ''**कबसे**''- अब आप थोड़े गंभीर होकर विचार करो कि जो अच्छे लगते हैं, वे कबसे अच्छे लगने लगे ? वह घटना क्या हुई, जिसके कारण आत्मीयता बनी तथा जो बुरे लगते हैं, वे कबसे बुरे लगने लगे ? क्या कारण बने।

चतुर्थ चरण ''**क्या**''- आओ, आगे बढ़ते हैं, अब ये विचार करना है कि किसी अच्छे लगनेवाले व्यक्ति में आपको क्या-क्या अच्छा लगता है ? चेहरा, आँखें, शरीर, रंग, कोई गुण, गाना, कविता, उसका बोलना या सच्चा व्यवहार । और बुरे लगनेवाले में आपको क्या-क्या बुरा लगता है ? रुप, रंग, जाति, दुर्गुण, झूठ, गन्दी भाषा, रुखा व्यवहार आदि। सोचिये, क्या ये गुण या दोष हमेशा रहेंगे ? नहीं न, तो फिर क्यों खुद को बांधे हो ?

पंचम चरण ''**सच की ओर**''- अब विचार करो कि जो हमारे अपने हैं, उनमें कोई दोष नहीं है ? कोई बुराई नहीं है ? अथवा जिनको हमने विरोधी माना है, क्या उनमें कोई अच्छाई नहीं है ? कोई गुण नहीं है ? यदि अच्छाई-बुराई है तो उनको भी समझें कि अपनों में क्या दुर्गुण है तथा परायों में क्या सद्गुण हैं ?

षष्ठचरण ''**सच के करीब**''- विरोधियों की अच्छाई का विचार करो, उसकी समाज में चर्चा करो, बुराई की उपेक्षा करो तथा अपनों की बुराई का विचार करो, उसको एकान्त में बुलाकर समझाओ, मगर ध्यान देना- अच्छाई की चर्चा समाज में करना, परन्तु बुराई को अकेले में ही बताना। कोई आप से पूछे भाई ! इतना झमेला क्यों करें दूसरों के लिये ? व्यर्थ समय बर्बाद करने से क्या ? भाई ! ये समय दूसरों के लिये नहीं है, यह तो अपने मन को लगी बीमारी की दवा चल रही है, देखना बहुत कम समय में आपके मन से राग-द्वेष की बीमारी खत्म हो जाएगी। आप सच को देख पायेंगे तथा समझ पायेंगे। परिणामतः आपको निःसीम शांति तथा आनन्द की प्राप्ति होगी। आपको अनावश्यक किसी से न तो आसक्ति होगी, न ही घृणा होगी।

आत्मज्ञान की प्राप्ति में राग-द्वेष ही महाबाधक है। आपको संसार में किसी भी नाशवान् व्यक्ति, वस्तु, स्थान, पदार्थ से राग हो गया तो अविनाशी ब्रह्म से आपका चित्त हट जायेगा। आपको किसी से द्वेष हो गया तो भी चित्त का विकार खिन्नता देगा, फलतः आपकी प्रसन्नता चली जायेगी। आप चिन्तन से विरत हो जाओगे। अतः न तो किसी से राग करो, न ही द्वेष। संसार को स्वप्न की तरह अथवा फिल्म की तरह देखो । ये राग-द्वेष जीवन को विषम बनाते है, जबकि समतामय जीवन ही सत्य जीवन है, योगयुक्त जीवन है- **समत्वं योग उच्यते**। राग से प्रेरित होकर किसी की प्रशंसा न करें तथा द्वेष से प्रेरित होकर किसी की निंदा न करें, यह आदर्श जीवन का सार है एवं सुखी तथा आनन्दमय जीवन की कुंजी है।

भाव श्रावक के 17 लक्षण

1- श्रावक स्त्रियों के अधीन नहीं होता।

2- श्रावक इन्द्रियों को विषयों की ओर जाने से रोकता है अर्थात् उन्हें वश में रखता है।

3- श्रावक अनर्थो के कारणभूत दान में लोभ नहीं करता।

4- श्रावक संसार में रति अर्थात अनुराग नहीं करता।

5- श्रावक विषयों में गृद्धि भाव नहीं रखता।

6- श्रावक महारम्भ नहीं करता, यदि कभी विवश होकर करना भी पड़े तो अनिच्छा पूर्वक करता है।

7- श्रावक गृहस्थावास को जाल के समान मानता है।

8- श्रावक सम्यक्त्व से विचलित नहीं होता।

9- श्रावक भेड़ चाल को छोड़ता है।

10-श्रावक सारी क्रियाएं आगम के अनुसार करता है।

11-अपनी शक्ति के अनुसार दान आदि में प्रवृत्ति करता है।

12-श्रावक निर्दोष तथा पाप रहित कार्य को करते हुए नहीं हिचकता।

13-श्रावक सांसारिक वस्तुओं में राग द्वेष से रहित होकर रहता है।

14-श्रावक धर्म आदि के स्वरुप का विचार करते समय मध्यस्थ रहता है अपने पक्ष का मिथ्या आग्रह नहीं करता।

15-श्रावक धन तथा कुटुम्बियों के साथ संबंध रखता हुआ भी सभी को क्षणभंगुर समझ कर संबंध रहित की तरह रहता है।

16-श्रावक आसक्ति से सांसारिक भोगों में प्रवृत्त नहीं होता।

17-श्रावक हृदय से विमुख रहते हुए गृहस्थावास का सेवन करता है।

कार्तिक पूर्णिमा का महत्व !

कार्तिक पूर्णिमा के दिन शत्रुंजय तीर्थ की यात्रा करने से विशेष लाभ होता है। इस दिन द्राविड़ और वारिखिल्ल दस करोड़ मुनियों ने एक साथ इस तीर्थ से मुक्ति प्राप्त की है।

श्री ऋषभदेव भगवान के सौ पुत्र थे। उनमें द्राविड़ नामक एक पुत्र था। उसके द्राविड़ और वारिखिल्ल नामक दो पुत्र थे। द्रविड़ ने बड़े पुत्र द्राविड़ को मिथिलानगरी का राज्य दिया और छोटे पुत्र वारिखिल्ल को एक लाख गाँव दिए। पश्चात् श्री आदिश्वर भगवान के पास दीक्षा ग्रहण की। द्राविड़ छोटे भाई की संपत्ति देख ईर्ष्या से जलने लगा। उससे छोटे भाई की उन्नति सहन नहीं हुई। इस कारण उस पर द्वेष रखने लगा। वारिखिल्ल को इसका पता चलने पर वह भी बड़े भाई पर द्वेष रखना लगा। दोनों परस्पर द्वेषभाव वाले होकर एक दूसरे का राज्य छीनने का अवसर खोजने लगे। वारिखिल्ल ने मिथिला नगरी में अपना निवास स्थान बनाया। इसलिये द्राविड़ने उससे कहा- तुम मेरे नगर में नहीं रह सकते। इससे वारिखिल्ल क्रोधित होकर अपने नगर में चला गया परन्तु बड़ेभाई द्वारा किये गये अपमान का प्रतिशोध लेने हेतु सेना सहित युद्ध करने आया। छोटा भाई युद्ध करने आ रहा है, यह सुनकर द्राविड़भी सेना लेकर युद्ध करने नगर के बाहर आया। दोनों के मध्य भयंकर युद्ध हुआ। लगातार सात महिने तक युद्ध चला। उसमें दोनों पक्षों के मिलाकर दस करोड़। शूरवीर वीरगति को प्राप्त हुए। हाथी, घोड़े आदि पशुओं का भी बड़ी संख्या में संहार हुआ।

इसके बाद वर्षाकाल आने पर युद्ध रुक गया। वर्षाकाल पूर्ण होने पर एक बार द्राविड़ सुपल्लवित वन को देखने हेतु मंत्री आदि परिवार सहित घूमने निकला। वन को देखाते तपस्वियों के आश्रम के समीप पहुंच गया। मंत्री की प्रेरणा से द्राविड़राजा तपस्वियों के आश्रम में गया। सभी ने तपस्वियों कुलप्रति को प्रणाम किया। कुलपति ने आर्शीवाद दिया। पश्चात अनुग्रह बुद्धि से हितोपदेश दिया। इस समय दोनों भाई युद्ध में लगे हुए हैं यह बात कुलपति को पता थी। इसलिए प्रसंग के अनुरुप उपदेश देते हुए कहा कि-हे राजन्! राज्य नर्क पहुंचानेवाला है। इसलिए राज्य की आकांक्षा से युद्ध करना उचित नहीं है उसमें भी भाई के साथ युद्ध करना हो तो आप जैसों के लिए बहुत ही अनुचित माना जाता है। आप युगादीश के पौत्र हैं। आप अपने पूर्वजों का थोड़ा विचार करें। आपके दादा ने राज्य छोड़, पिता ने भी राज्य छोड़ा। यदि राज्य अनर्थ का कारण न होता तो आपके दादा और पिता राज्य क्यों छोड़ते ? आपके दादा व पिता ने तिनके की भांति राज्य का त्याग कर संयम को स्वीकार किया और आप दोनों भाई पृथ्वी के टुकड़े के लिए लड़ें यह कितनी लज्ञा की बात है।

कुलपति का उपदेश द्राविड़ के हृदय में बैठ गया। विवेक दृष्टि खुल गई और अपना अपराध समझ में आ गया। हृदय में इस भूल के लिए अति परिताप हुआ। प्रतिबोध देनेवाले कुलपति का उपकार माना। इसके बाद शीघ्र छोटे भाई से क्षमायाचना करने हेतु चल दिया। बड़े भाई को अकेला आता देखकर वारिखिल्ल उसके सामने आया, बड़े भाई के पैरों में गिरा। द्राविड़ ने उसे दोनों हाथों से उठाकर स्नेह से हृदय से लगा लिया। दोनों के परस्पर प्रेमभरे नेत्र मिले। जिन आँखों में अभी तक वैररुपी अग्नि में प्रज्वलित अंगारे बरस रहे थे, उन आँखों से अब प्रेमरुपी अमृत बरसने लगा। दोनों की आँखों में अश्रु छलक उठे। वहां उपस्थित राज्य अधिकारियों की आँखों में भी यह दृश्य देखकर अश्रु छलक उठे। वर्षो के पश्चात दोनों भाईयों को युद्ध के स्थान पर प्रेम से मिलते हुए देखकर सभी लोग विस्मित हो गए।

रोते-रोते छोटे भाई ने बड़े भाई से क्षमायाचना मांगते हुए कहा- कि बंधु ! युद्ध हेतु आपके सामने आकर मैंने जो धृष्टता की है उसके लिये मुझे क्षमा करें। बड़ेभाई का हृदय भर आया। बोलना चाहता है परन्तु बोल नहीं पाता है। वह बोला- वारिखिल्ल ! इसमें तेरा कोई अपराध नहीं है। अपराध तो मेरा ही हैं। मैं ईर्ष्या के कारण तेरी उन्नति सहन नहीं कर पाया। इसलिए हम दोनों के बीच शत्रुता का मूल कारण मैं ही हूं। इसलिए तुम मुझे क्षमा करो। तुमसे क्षमा मांगने ही मैं यहां आया हूं। इस प्रकार दोनों परस्पर क्षमायाचना मांगी।

पश्चात वारिखिल्ल ने द्राविड़ से कहा- हे अग्रज ! अब इन दोनों राज्यों का संचालन आप कीजिए। द्राविड़ ने अब तक मैं अज्ञानरुपी अंधकार में भटक रहा था, परन्तु अब मुझे ज्ञानरुपी प्रकाश मिल गया है। इसलिए मेरा राज्य भी मुझे नहीं चाहिये तो तुम दोनों राज्य की कहां बात कर रहे हो ! मेरा मन अब त्याग के मार्ग पर जाने को उत्कंठित हो गया

है। अब तुम ही दोनों राज्यों को स्वीकार करो। वारिखिल्ल बोला- तो फिर मुझे भी यह राज्य नहीं चाहिये। जिस मार्ग पर आप चलने को तैयार हुए हैं उसी मार्ग पर मैं भी आपके साथ चलूंगा। पश्चात दोनों ने अपने पुत्रों को अपना अपना राज्य सौंप दिया और दस करोड़ लोगों के साथ उस कुलपति के पास से तपस्वी व्रत को स्वीकार किया। सभी कंदमूल आदि आहार करते थे। गंगानदी में स्नान करते थे। श्री आदिनाथ का जाप और धर्मकथा आदि द्वारा दिन व्यतीत करते थे। इस प्रकार लाख वर्ष तक वहां रहकर साधना की। एक बार नमि-विनमि के दो विद्याधर शिष्य विद्या के बल पर आकाश में आए। द्राविड़ और वारिखिल्ल आदि तपस्वियों ने उनको प्रणाम किया। मुनियों ने धर्मलाभ का आर्शीवाद दिया। पश्चात् द्राविड़ने पूछा- हे भगवन्! आप कहां जा रहे हैं ? मुनियों ने उत्तर दिया- हम शत्रुंजय तीर्थ की यात्रा करने जा रहे हैं। द्राविड़ ने शत्रुंजय तीर्थ का माहात्म्य पूछा, इसलिये मुनियों ने उन्हें शत्रुंजय का अनुपम महात्म्य जानकर सभी तपस्वी तीर्थ की यात्रा करने हेतु उत्कंठित हुए और सभी तापस मुनियों के साथ श्री शत्रुंजय की ओर चलने लगे। मुनियों के साथ श्री शत्रुंजय की ओर चलने लगे। मुनियों ने उन्हें साधुधर्म का उपदेश दिया जिससे उन्होंने तापसव्रत को त्याग कर साधुओं के पांच महाव्रत स्वीकार किये।

अनुक्रम से वे सभी श्री शत्रुंजय के पास पहुंचे। तीर्थ को देखकर सभी प्रसन्न हुए। वहां श्री आदिनाथ आदि के जिनबिंबों के दर्शन किये। सभी ने मासक्षमण किया। मासक्षमण के अंत में विद्याधर मुनियों ने उनसे कहा- इस तीर्थ की सेवा से तुम सभी के अनंतकाल से संचित हुए सभी कर्म नष्टहो जाएंगे। इसलिये तुम सभी संयम-तप में तत्पर होकर यहीं रहो। ऐसा कहकर विद्याधर मुनि अन्यत्र चले गये। द्राविड़ और वारिखिल्ल आदि दस करोड़ मुनि वहां रहकर विविध प्रकार का तप आदि करने लगे। अंत में मासक्षमण कर कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा के दिन निर्वाण प्राप्त किया। इस प्रकार कार्तिक पूर्णिमा के दिन श्री शत्रुंजय तीर्थ के ऊपर द्राविड़और वारिखिल्ल दस करोड़मुनियों के साथ मुक्ति के मार्ग पर गए होने के कारण कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा के दिन श्री शत्रुंजय तीर्थ की यात्रा करने से विशेष लाभ होता है। इस दिन तप आदि धर्म करने से विशेष फल मिलता है।

राणकपुर तीर्थ

राणकपुर मंदिर के संस्थापक कुंभाराणा के मंत्री (धरणा शाह) धन्नाशा पोरवाल ने 32 वर्ष की उम्र में 32 संघों के बीच शत्रुंजय पर सोम सुंदर सूरि के हस्ते तीर्थ माला पहनी व ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया था।

तीर्थ माला के समय प्रतिज्ञा ली कि राणकपुर में नलिनी गुल्मविमान जैसा जिनालय बंधाऊंगा।

कुंभाराणा के पास जमीन लेकर सं. 1446 में जिनालय का काम शुरु कराया व 1496 में प्रतिष्ठा करायी व त्रैलोक्य दीपक नाम रखा था, 50 वर्ष काम चला।

पांचवीं सदी में 2700 जैनों के घर थे।

इस जिनालय का 48,400 (वर्ग) फुट का घेराव है।

इस जिनालय में 82 देरीया व 1444 खांभे है, हर एक खांभे की कोतरणी अलग-अलग है।

इस जिनालय में अष्टापद, शत्रुंजय, 24 मंडप, 100 तोरण, 9 भोयरें, 4 विशाल रंग मंडप, 552 पुतलियाँ है।

जमीन से 7 फीट मंदिर ऊँचा है।

कहते है चित्तोड़ के राजा ने धरणा शाह की नकल करके जिनालय में एक विशाल थंभा बनाया पर वो पूरा नहीं करा सके, इससे वो आज भी अधूरा ही है।

मूलनायक भगवान के पास एक हाथी व उसके पास एक 500 वर्ष पुराना रायण का वृक्ष है, व उसके सामने 1008 फणा को धारण करनेवाले नाग व नागणी युक्त पार्श्वनाथ की मूर्ति है।

पहले यहां 84 भोयरें थे बाद में सिर्फ 9 भोयरें रहे है, इस जिनालय में अलग-अलग 276 शिल्पिओं को सजावट है, हर एक देरासर पर 20-20 प्रकार की कारीगरी है।

मीरा ने सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन के लिये अपनी काव्य प्रतिभा एवं स्वर साधना का उपयोग प्रारंभ कर दिया। राजघराने की परम्परा के विपरीत होने से उनके पति महाराणा ने उनको आभूषणों में सर्प रखाकर भेजे, पेय में घातक विष मिलाकर भेजा, पर मीरा पर उनका कोई प्रभाव नहीं हुआ। यह उनकी लोक आराधना का ही प्रभाव था।

अनन्त गुणों के भंडार श्रीमहावीर भगवान

अनन्त गुणों के भंडार श्रीमहावीर भगवान विश्व के कल्याणार्थ तीर्थ की स्थापना की। जिस तीर्थ के द्वारा स्वयं तीर्थंकर बने, उस तीर्थ का प्रभु उपकार मानते हैं। आपकी साधना के फल स्वरुप वे तीर्थंकर बने। उन्होंने तीर्थ की स्थापना की। मेरे समस्त आत्म-बंधुओं का मुझ पर उपकार है। उसका बदला चुकाने के लिए इस तीर्थ की स्थापना आवश्यक है, इस प्रकार प्रभु तीर्थकर नामकर्म खपाते हैं।

प्रभु संयम धर्म को ऐसा आत्मसात् करते हैं कि जो उन्हें दूसरे जन्म में ऐसी शक्ति प्रदान करता है कि उनके उपदेश से अन्य भी तीर्थकर, गणधर या केवलज्ञानी बन सकें। यह सर्वोत्कृष्ट विनियोग कहलाता है। ऐसी शक्ति तीर्थंकरों को ही मिलती है, दूसरों को नहीं। दूसरे नम्बर में गणधरों को मिलती है। ऐसी शक्ति क्यों मिली ? क्योंकि पूर्व भवों में ऐसे ऐसे मनोरथों से प्रयत्न किये।

मोक्ष-मार्ग का यह संघ है। इस संघ के हम सदस्य हैं या नहीं ? जो आत्मा सम्यग् दर्शन प्राप्त कर चुके हों, श्रुत सामायिक, सम्यक्त्व सामायिक प्राप्त कर चुका हो, वह भगवान के संघ का सदस्य कहलाता है। आपके पास क्या यह सार्टिफिकेट है ?

जब तक भाव चारित्र न आयें, तब तक नहीं चलता। हमारी पात्रता पर महापुरुषों ने हमें यह चारित्र प्रदान किया है। जीवन के अन्त तक इस गुणस्थानक का स्पर्श करें वैसा भाव न उत्पन्न न हो तो क्या काम का ?

✻ प्रभु ने ऐसी साधना की, कि वह धर्म उनमें आत्मसात् हो गया। धर्म पर भगवान का स्वामित्व हो गया। जिस प्रकार चक्रवर्ती के अधीन नगर, गांव सब हो जाते हैं, जिस प्रकार के अधीन तीनों लोक तथा समस्त गुण हो गये।

''ललितविस्तरा'' ग्रंथ पढ़ने पर ये पदार्थ विशेषतया समझ में आयेंगे।

सुलसा आदि नौ व्यक्तियों को भगवान ने तीर्थकर पद दिया- इस प्रकार पं.वीरविजयजी म.सा. ने कहा वह क्या उचित है ? ''सुलसादिक नव जण ने जिन-पद दीधुं रे....

इन नौ व्यक्तियों को प्रभु ने तीर्थकर-पद दिया था कि उन्हें अपनी साधना से मिला था ? दूसरों को क्यों नहीं मिला ? उन नौ को ही क्यों मिला ? क्योंकि उन नौ का उत्कृष्टयोग था। तदुपरांत उन नौ को भी पहले तीर्थकर पद क्यों नहीं मिला ? और प्रभु की उपस्थिति में ही क्यों निकाचित हुआ ? आप यदि सौचेंगे तो प्रभु की मुख्यता समझ में आयेगी।

इन्द्रभूति आदि में गणधर पद की योग्यता होती तो जिस समय यज्ञ किया तब उन्होंने गणधर-पद क्यों नहीं पाया ? आपको उपादान मुख्य प्रतीत होता होगा। मुझे प्रभु मुख्य प्रतीत होते हैं।

भूख हो फिर भी भोजन की सामग्री न हो तो क्या करोगे ? क्या भूख मिटेगी ? आप भोजन की सामग्री का उपकार मानोगे या नहीं ? उस प्रकार चाहे जितना जीव योग्य हो परन्तु सामने प्राप्त करानेवाला नहीं हो तो क्या करोगे ?

कोडिये में तेल, दीवट सब कुछ है परन्तु प्रकाश कब होगा ? इतनी योग्यता होते हुए भी जलती ज्योति से उसे नहीं मिलायेंगे तब तक प्रकाश नहीं होता। जब तक हम प्रभु के सम्मुख नहीं होंगे, तब तक हम प्रभुमय नहीं बन सकते।

''भगवान कुछ करते नहीं है। हमारा उद्यम (पुरुषार्थ) काम करता है'' -यदि ऐसा मानोगे तो आप भक्त कदापि नहीं बन सकोगे। ग्यारह गणधरों की तैयारी नहीं थी, परन्तु समवसरण में गये और काम हो गया। अब कहोगे न कि गणधर-पद का दान भगवान ने किया। हमारे जैसे भटकते रहे।

✻ भगवान के साधुओं की अपेक्षा साध्वीजी की संख्या अधिक थी। उनकी संख्या 36000 थी। क्या इस कारण जानते हैं ?

स्त्रियों में कोमलता अधिक होती है। कोमल हृदय समर्पित हो सकता है। समर्पण ही स्त्रियों को मुक्ति तक पहुंचाता है। भगवान के साधु तो 700 ही मोक्ष में गये, परन्तु साध्वीजी 1400 मोक्ष में गई। इसका कारण शायद ये ही होगा।

✻ कहे कलापूर्ण सूरी से

महात्मा में जिसके दृढ़ निश्चय होता है, उसकी मोहा-सक्ति दूर होकर, पदार्थ का निर्णय होता है, इससे व्याकुलता मिट जाती है। इससे नि:शंकता आती है। इससे जीव सब प्रकार के दु:खों से निर्भय होता है और उसी से नि:संगता पैदा होती है और ऐसा योग्य है।

जग चिंतामणि : चैत्यवंदन सूत्र रहस्य

''**जो भी मनुष्य 'अष्टापद तीर्थ'** की यात्रा खुद के बलबूते (लब्धि) से कर लेता है वह उसी भव में मुक्त हो जाता है।'' भगवान श्रीमहावीर के ये वचन सुनकर श्री गौतम स्वामी अपनी लब्धि से सूर्य की किरणों के सहारे अष्टापद पर्वत पर आकाश मार्ग से पहुंचे।

अष्टापद तीर्थ पर बहुत से ''तापस'' अपनी तपस्या का जोर से सिद्धि प्राप्त करते हुए कुछ सीढ़ियां चढ़सके थे, परन्तु ऊपर पहुंचने में खुद को असहाय पा रहे थे। श्री गौतम स्वामी की लब्धि को देखकर वे आश्चर्यचकित हुए, क्योंकि उन्होंने बड़े आराम से तीर्थ के दर्शन कर लिए। सभी तापसों ने श्री गौतम स्वामी को अपना गुरु बनाने का निर्णय किया। श्री गौतम स्वामी ने सभी 1500 तापसों को तत्व समझाकर दीक्षा दी और अपनी लब्धि से परमात्र (खीर) का पारणा करवाया।

उसी अष्टापद तीर्थ पर श्री गौतमस्वामीजी ने ''जगचिन्तामणि'' चैत्यवंदन सूत्र की रचना की है। किसी पहाड़ पर तीर्थ के जब हम दर्शन करने जाते हैं, तो हमारे भाव खूब ऊंचे होते हैं। फिर श्रीगौतमस्वामीजी द्वारा ऐसे दुर्गम तीर्थ पर चढ़कर दर्शन करना, जिससे उसी भव में मोक्ष जाना निश्चित हो गया। उनका उस पुण्य धरा पर जग चिंतामणि चैत्यवंदन सूत्र की रचना करना निश्चय ही प्रभावशाली स्त्रोत की रचना है।

अष्टापद तीर्थ पर जग चिंतामणि सूत्र की रचना करते समय उन्हें पालीताना के श्री आदिनाथ भगवान याद आये, गिरनार तीर्थ के श्री नेमिनाथ भगवान याद आये, भरुच के श्री मुनिसुव्रतस्वामी याद आये, टिन्टोइ के श्री पार्श्वनाथ भगवान याद आये और सांचोर के श्री महावीर स्वामी याद आये व सूत्र में उनका उल्लेख भी किया। इससे हम इस सूत्र की ही नहीं, इन सब तीर्थ स्थानों की भी महिमा समझ सकते हैं।

इसी स्तोत्र में वे आगे बात करते हैं अपने मन के उत्कृष्ट भावों की:-

1. तीनों लोकों में स्थित 8,57,00,282 जिन मंदिरों को प्रणाम करता हूं।

2. जगत में 15,42,58,36,080 शाश्वत प्रतिमाओं को प्रणाम करता हूं।

ऐसे उत्कृष्ट भाव वाला सूत्र हमारे आचार्यों ने 2500 वर्षों से संभालते हुए हमें दिया है, जिसका उच्चारण करने मात्र से हम इतने करोड़ जिन मंदिरों और अरबों प्रतिमाओं के ये सूत्र बोलने मात्र से नमस्कार कर पाते हैं। क्या अब भी हम ''रोज'' जैन मंदिर के प्रत्यक्ष दर्शन के लिये नहीं जाना चाहेंगे ?जाना ही चाहिये।

जैन साधु-साध्वी दुनिया का एक अजूबा....

यह वर्तमान समय का एक चमत्कार ही है कि-

टी.वी., सिनेमा, मोबाईल, कम्प्यूटर, इंटरनेट, फेसबुक, व्हाट्सअप, होटल, डिस्को, बंगला, गाड़ी आदि भौतिक सुखों और आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के इस युग में भी सैकड़ों की संख्या में नई पीढ़ी के उच्च शिक्षित अमीर-गरीब सभी युवक-युवतियों जिनशासन के संयम मार्ग को ग्रहण कर उसका उत्कृष्ट पालन करते हुए चारित्र धर्म का डंका विश्व में बजा रहे हैं।यह अपने आप में इस दुनिया का एक अनूठा अजूबा है।

जैन शासन के चरम तीर्थकर प्रभु श्रीमहावीर स्वामी के निर्वाण के समय ऐसी भविष्यवाणी हुई थी कि अगले 2500 वर्ष तक जिनशासन पर भस्मगृह का प्रभाव रहेगा पर उसके पश्चात जैन शासन का अभ्युदय होगा।

पिछले कुछ समय से शासन में जिस प्रकार बड़े पैमाने पर दीक्षाएं हो रही है उसे देखकर ऐसा लगता है कि वह अभ्युदय यानी स्वर्णिम काल प्रारंभ हो चुका है।

आपको कोई कहेकि- ऐसा व्यक्ति ढूंढ़कर लाओ जो जिंदगीभर....

पंखा बिजली का उपयोग न करता हो,
वाहन में न बैठता हो,
स्नान न करता हो,
बैंक में जिस का खाता न हो,
जिसके पास रहने के लिये घर न हो,
गांव में खेत न हो,
जो पैसा न कमाता हो, पैसा रखता नहीं हो।

"जगचिन्तामणि" चैत्यवंदन

मूल

रोला छन्द

जगचिंतामणि, जगनाह, जगगुरु, जगरक्खण,
जगबंधव, जगसत्थवाह, जगभावविअक्खण,
अटठवय-संठ विअ-रुव, कम्मट्ठ-वियासण !
चउवीसंपि जिणवर, जयंतु अप्पडिहय-सासण ॥1॥

भावार्थः- भव्य जीवों के लिए चिंतामणि रत्न समान, भव्य जीवों के नाथ, जगत के गुरु, छः जीव निकाय के रक्षक, सकल जीव के बंधु, मोक्षाभिलाषी के सार्थवाह, जगत में रहते हुए छः द्रव्य के भावों को कहने में विचक्षण, अष्टापद पर्वत पर स्थापन किया हुआ है प्रतिबिम्ब जिनका आठ कर्म का नाश करने वाले, जिनके शासन का कभी भी नाश नहीं हो सकता, ऐसे चौबीस तीर्थंकर भगवंतों की जय हो॥1॥

वस्तु छन्द

कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढमसंघयणि,
उक्कोसय सत्तरिसय, जिणवराण विहरंत लब्भई;
नवकोडिहिं केवलीण,
कोडी सहस्स नव साहू गम्मई,
संपई जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोडिहिं वरनाण;
समणह कोडि सहस्स दुअ,
थुणिज्जई निच्च विहाणि ॥2॥

भावार्थः- असि, मसि, कृषि, यह कर्म है, वैसी भूमि पर प्रथम संघयण वाले उत्कृष्ट से एक सौ सत्तर जिनवर विचरते हुए मिलते है। नौ करोड़ केवलज्ञानी और नौ हजार करोड़ साधु विचरते हुए मिलते हैं। वर्तमान में बीस तीर्थंकर दो करोड़ केवलज्ञान धारण करनेवाले मुनि, दो हजार करोड़ साधु विचरते हैं, उनकी नित्य सुबह स्तवना करते हैं॥2॥

जयउ सामिय, जयउ सामिय, रिसह सत्तुंजि,
उज्जिंति पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंडण;
भरुअछहिं मुणिसुव्वय,
मुहरि पास दुह-दुरिअखंडण,
अवर विदेहिं तित्थयरा,
चिहुं दिसि विदिसि जिंकेवि;
तिअणागय-संपईय, वंदुं जिण सव्वेवी. ॥3॥

भावार्थः- शत्रुंजय पर ऋषभदेव, गिरनार पर्वत पर नेमिनाथ, सांचौर में महावीर स्वामी, भरुच में मुनि सुव्रतस्वामी की जय हो। पाप का नाश करनेवाले, मुहरी (हाल टिंटोई) गांव में विराजमान श्री पार्श्वनाथ स्वामी की जय हो। पांच महाविदेह के बीस तीर्थंकर, चार दिशा और चार विदिशाओं में भूतकाल, भविष्यकाल और वर्तमानकाल में जो कोई भी जिनेश्वर हो, उन सभी को मैं वंदन करता हूं॥3॥

गाहा

सत्ताणवई-सहस्सा,लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडिओ ।
बत्तीस-सय बासियाई, तिअलोए चेईए वंदे ॥4॥

भावार्थः- तीन लोक में रहे हुए आठ करोड़ छप्पन लाख सत्तावन हजार दो सौ बयासी शाश्वत जिन मंदिरों को मैं वंदन करता हूं॥4॥

पनरस कोडि सयाई, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना,
छत्तीस सहस असीई, सासय-बिंबाई पणमामी ॥5॥

भावार्थः- उन जिन मंदिरों में रहे हुए पंद्रह अरब बयालीस करोड़ अट्ठावन लाख छत्तीस हजार अस्सी (15,42,58,36,080) शाश्वत जिन बिम्बों को प्रणाम करता हूं॥5॥

सबसे ही यह संसार गतिशील है।

पाँच तत्वों की मंडली एक सुरम्य पर्वत पर पहुंची। चर्चा छिड़ी तो अपने-अपने बड़प्पन का प्रसंग उभर आया।

पृथ्वी बोली- सारी दुनिया का बोझ मैं उठाती हूं।

जल ने कहा- मेरे बिना जीवन ही नहीं।

पवन बोला- दिखाता नहीं हूं, तो क्या। मेरे बिना घुटन ही सबका गला न घोंट देगी ?

अग्नि ने कहा- गरमी-रोशनी के बिना इस लोक में शीत-निस्तब्धता के अतिरिक्त और क्या बचेगा ?

चारों का कथन पूरा हो गया, फिर भी आकाश बोला नहीं। बार-बार पूछने पर उसने एक शब्द ही कहा-आप सबके मिलने से ही यह संसार गतिशील है। न तो किसी के अकेले चलाने से यह चलेगा और न किसी अकेले के रुठ जाने से, सब लोग मिलकर रहेंगे तो ही खुशहाली रहेगी।

जैन साधु-साध्वी क्या आप जानते है ?

✻ जैन साधु एक स्थान पर हमेशा नहीं रहते।

✻ वे कोई वाहन का उपयोग नहीं करते, पर पदयात्रा करते है।

✻ वे महिला एवं पैसे का स्पर्श भी नहीं करते।

✻ उनका कोई घर, जमीं, दुकान वगैरह नहीं होता।

✻ वे फ्रीज, टीवी, आदि साधनों का उपयोग भी नहीं करते।

✻ वे हर छह महिनों के बाद सिर के और दाढ़ी-मूंछ के बाल हाथ से खींच लेते है किंतु कैची/अस्त्रे से हजामत नहीं करवाते।

✻ वे समग्र जीवन जीवदया, शास्त्राभ्यास, ध्यान एवं परोपकार आदि में बीताते है।

✻ उनके लिये सारा जगत उनका परिवार है।

✻ दुष्काल, रेल, भूकम्प आदि प्राकृतिक संकटों के समय पर जैन साधुओं के प्रेरक प्रवचनों से लाखों-करोड़ों रुपये के बचाव कार्य निःशुल्क रुप से होते है। जिसमें धर्म-जाति आदि का कोई पक्षपात नहीं किया जाता।

✻ गरीबी, बेकारी आदि से पीड़ितजनों को भोजन, अनाज, कपड़े, कंबल, दवाएं आदि का विराट वितरण जैन साधु की प्रेरणा से होता है।

✻ हर रविवार के दिन हजारों भिक्षुकों को पेट भर के भोजन कराया जाता है जिसके मूल में जैन मुनि की प्रेरणा कार्यशील है।

✻ इस काल में भी ऐसे संतों के दर्शन होना, यह हमारा परम सौभाग्य है। उन्हें आदर से प्रणाम करें। उनके आर्शीवाद से हमारा निश्चित रुप से कल्याण होगा।

✻ इन संतों के पदयात्रा के समय हम सावधानीपूर्वक हमारे वाहनों को दूर से चलायें ताकि उन्हें कोई तकलीफ पहुंचाने का महापाप हमारे हाथों से न हो।

✻ नशे में या सुस्ती में वाहन न चलाये, जिससे गलती से भी उन्हें हमसे कोई कष्ट न हो।

✻ कृपया संतों को बचायें, वे ही हमारे वास्तविक रत्न है, हमारी सच्ची संपत्ति है। उनसे कुछ भी गलत फहमी हो तो अवश्य उनसे संपर्क कर समाधान करें, उपाश्रय के दरवाजे सदा खुल्ले है, दूरी न बनाकर नजदीक आवें।

राष्ट्र को जगाने वाला

सम्राट भोज राजकवि का चुनाव करने जा रहे थे। यह खबर सारे राज्य में फैल गई। सभी कविगण आने लगे। सबके खाने, रहने, ठहरने की समुचित व्यवस्था की गई। कवियों की परस्पर चर्चाओं से कोलाहल-सा स्वर नगर से उठ रहा था। दूसरे दिन दरबार लगा। बड़ी सज-धज के साथ आए कवियों ने एक-एक कर मंच पर अपनी प्रस्तुति दी। वे ऐसे आए थे, मानो किसी बारात में आए हों या विवाह रचाने आए हों। महामंत्री ने सभा प्रारंभ की घोषणा की। कहा कि कलामंच प्रजा के मन को व्यवस्थित, अनुशासित तो करता ही है साथ ही राष्ट्र को प्रेरणा व दिशा भी देता है। महाराज चाहते है कि उसे चलाने वाला, संगठित करने वाला कोई उस विद्या का ज्ञाता ही हो। राजकवि कौन बनेगा, यह स्वयं महाराज तय करेंगे। एक-एक करके प्रस्तुतियां आने लगी। सब अपनी विद्वत्ता की छाप प्रजा पर एवं प्रजापालक पर डालने की कोशिश कर रहे थे। नायिका भेद, विरहगीत तमाम तरह के रंगीन गीत कवियों ने एक से एक बढ़कर सुनाए। दरबार श्रृंगार रस से अभिपूरित हो गया। श्रृंगारवादी कवियों की बाढ़ देख महाराज को लगा कि कला शायद मर गई। तभी एक युवक सादी-सी वेशभूषा में आया। उदात्त स्वर में आदर्शवादी काव्य प्रेरणा ने महाराज को आश्वस्त कर दिया कि कला अभी जिंदा है। सभी कवियों को आवासों में भेज दिया गया। निर्णय कल सुनाया जाएगा। यह घोषणा कर दी गई। राजसी आवासों में पहुंचकर कवि राजभोगों पर टूट पड़े। सुरा मिल गई तो पीकर मदमस्त हो सो गये, फिर भी एक कवि दीपक जलाए लेखानी चला रहा था। प्रहरी ने टोका- ''आर्य ! सब सो चुके हैं। रात्रि, काफी हो गई। अब आप भी आराम करें।'' युवक ने प्रहरी से पूछा- आप क्यों जाग रहे हैं तात ! प्रहरी ने कहा- कहीं ऐसा न हो कि शत्रु का हमला हो इसीलिए जाग रहा हूं। प्रहरी-वेश में महाराज ने आगे बढ़कर कवि को गले लगा लिया। अगले दिन घोषणा कर दी गई।

क्या आज राष्ट्र को जगाने वाले कवि हैं ? हम सभी के समक्ष प्रश्नचिन्ह है।

आईये गुरु श्रीगौतम स्वामीजी को जाने

✲ श्रीगौतमस्वामी भगवान श्रीमहावीर के प्रथम गणधर थे।
✲ श्रीगौतम स्वामी का जन्म गोर्बर नामक ग्राम में हुआ था।
✲ श्रीगौतम स्वामी का जन्म ई.पूर्व 607 में हुआ था।
✲ श्रीगौतम स्वामी की माता का नाम पृथ्वीदेवी और पिता का नाम वसुभूति था।
✲ श्रीगौतम स्वामी का जन्म ब्राह्मण जाति में हुआ था।
✲ श्रीगौतम स्वामी का जन्म गौतम गौत्र में हुआ था।
✲ श्रीगौतम स्वामी का दूसरा नाम इंद्र भूति था।
✲ इंद्रों के द्वारा विभूति को प्राप्त करने के कारण श्रीगौतमस्वामी का इंद्र भूति यह नाम सार्थक था।
✲ श्रीगौतम का अर्थ होता है भगवान की उत्कृष्ट वाणी और श्रीगौतमस्वामी भगवान की वाणी को झेलते ग्रहण करते थे। उनकी वाणी को द्वदसाग रुप रचते थे। इसी कारण से उनका नाम श्रीगौतम स्वामी हुआ।
✲ श्रीगौतम स्वामी को तीर्थंकर श्रीमहावीर के समवसरण में सर्वप्रथम ले जाने का श्रेय सौधर्म इन्द्र को प्राप्त हुआ।
✲ केवल ज्ञान हो जाने के पश्चात भी जब तीर्थंकर श्रीमहावीर की दिव्य ध्वनि नहीं खीरी तब गणधर का आभाव जानकर सौधर्म इंद्र ने अवधि ज्ञान से इंद्रभूति ब्रह्मांड में गणधर बनने की योग्यता देखकर श्रीगौतम स्वामी को तीर्थंकर महावीर के समवसरण में ले गये थे।
✲ श्रीगौतम स्वामी सौधर्म इंद्र के साथ शाशत्रार्थ करने के लिये तीर्थंकर श्रीमहावीर के समवसरण में गये थे।
✲श्री गौतम स्वामी ने तीर्थंकर श्रीमहावीर के साथ शास्त्रार्थ नहीं किया।
✲ तीर्थंकर श्रीमहावीर के समवसरण में पहुंचते ही मानस्तंभ को देखकर श्रीगौतमस्वामी का मान/अहंकार भंग हो गया था। इसी वजह से उन्होंने शास्त्रार्थ करने की बजाय विनय वन्त हो जैनेश्वरी दीक्षा स्वीकार्य कर ली थी।
✲ श्रीगौतम स्वामी ने सर्व प्रथम जैनेश्वरी दीक्षा को स्वीकार्य कर सर्व प्रथम जैनम जयन्तु शासन का उद्घोष किया।
✲ श्रीगौतम स्वामी ने अपने 500 ब्रह्मंड शिष्यों सहित दीक्षा ली थी और गणधर पद पर आसीन हो गये थे।
✲ श्रीगौतम स्वामी 50 वर्ष की उम्र में गणधर बने थे।
✲ श्रीगौतम स्वामी 30 वर्षो तक गणधर के पद पर आसीन रहे। फिर केवल ज्ञानी हुए।
✲ श्रीगौतम स्वामी को कार्तिक वदी-अमावस्या दीपावली के दिन शाम के समय केवलज्ञान प्राप्त हुआ था।
✲ श्रीगौतम स्वामी 12 वर्षो तक केवलज्ञानी रहे।
✲ श्रीगौतमस्वामी ने ई.पूर्व 515 में मोक्ष प्राप्त किया था।
✲ श्रीगौतमस्वामी ने 92 वर्ष की उम्र में मोक्ष प्राप्त किया था।

सूत्र तथा मुद्रा

1- **नवकार मंत्र-**	काउस्सग्ग मुद्रा, उत्पाथन मुद्रा, जिन मुद्रा
2- **पंचिंदिय-**	स्थापना मुद्रा
3- **लोगस्स-**	काउस्सग्ग मुद्रा, जिन मुद्रा
4- **नमुत्थुणं-**	योग मुद्रा
5- **जावंति, जावंत-**	मुक्ताशुक्ति मुद्रा
6- **जयवीयराय की-दो गाथा**	मुक्ताशुक्ति मुद्रा
7- **अरिहंत चेइआणं-**	जिन मुद्रा
8- **अन्नत्थ-**	जिन मुद्रा
9- **वांदणा-**	यथाजात मुद्रा
10-**वंदित्तु-**	वीरासन मुद्रा

समर्पण

वर्जीनिया के एक सुनसान प्रदेश में रेल मार्ग था। रात्रि के समय पहाड़ से बरफीली चट्टानें टूट-टूटकर लाईन पर गिरी। गाड़ी आने वाली थी।अंधेरी रात में उसके गिरने का खातरा था।

उस क्षेत्र में एक बुढ़िया रहती थी। चिंतित हुई कि गाड़ी कैसे रुके और दुर्घटना कैसे बचे ? बुढ़िया के पास जो चारपाई थी, उसी को तोड़कर रेलवे लाईन पर जलाने लगी और जलती लकड़ियां सिंगनल की तरह हिलाती रही। गाड़ी आई। उसने देखा और गाड़ी रोककर उसने दुर्घटना टाल दी। आज भी उसकी प्रतिवर्ष बरसी मनाई जाती है।

कल-कल करते एक दिन काल आ जाएगा

✽ प.पू.साध्वी डॉ. सुभाषाजी म.

''**क्या** मुर्दा कभी सत्संग सुन सकता है ? कभी नहीं सुन सकता, फिर मुर्दे को अन्य लोग अर्थी सजाकर श्मशान की तरफ ले जाते है तब राम नाम सत्य क्यों बोला जाता है ? क्या ''राम-नाम'' मुर्दे को सुनाया जाता है ? राम का नाम मुर्दे को नहीं सुनाया जाता बल्कि वह साथ चलने वालों को इसलिये सुनाया जाता है कि ''राम'' का नाम ही अंत में साथ जाने वाला है। इसलिये ऐसी गलती मत कर देना कि राम का नाम कल ले लूंगा। अभी तो मेरी उम्र ही क्या है। राम को भजने के लिये तो बहुत जिन्दगी बाकी पड़ी है। जब बुढ़ापा आएगा, तब देखा जाएगा। अभी तो ऐशो-आराम करने का वक्त है। कहीं ऐसी सोच आपकी तो नहीं है ? याद रखना- सामान सौ बरस का इकट्ठा करनेवाले यह नहीं जानते कि पल भर का भी भरोसा नहीं। जब यह पता नहीं कि कल का सूर्योदय भी हम देख पाएंगे या नहीं, फिर अपने ''आज'' को बर्बाद मत करना। धर्म कमाने की उम्र उस दिन से ही शुरु हो जाती है, जब से संसार का ज्ञान होने लगता है। प्रभु महावीर कहते हैं- कल कल करते तो एक दिन ''काल'' आ जाएगा। इसलिये कल पर भरोसा मत करना बल्कि आज ही नहीं अभी से खुद को जानना। जो स्वयं से स्वयं के परिचय के लिए ज्ञान को समझना चाहता है, फिर वहीं समझता है। जो नहीं समझना चाहे, उसे तो साक्षात राम, कृष्ण, तीर्थंकर भी समझाना चाहे, तब भी वह नहीं समझेगा। अतः हमें दूसरों को नहीं, खुद की चिंता करनी चाहिये। तभी चिन्तन से चित्त में शांति अनुभव हो सकेगी। चित्त में शांति पानेवाला ही समाधि प्राप्त करता है और हकीकत में वही सच्चा धर्मात्मा है।''

जो व्यक्ति ज्ञान का पिपासु है वही जीवन में कुछ पा सकता है। ज्ञान से ही मनुष्य का आहार, विचार और व्यवहार 'चेन्ज' होने लगता है। संसार में इसलिये साधक के लिये सबसे महत्वपूर्ण ज्ञान की प्राप्ति है। ज्ञान से ही व्यक्ति अच्छा बुरा, पुण्य-पाप, सही-गलत, कल्याण-अकल्याण, जीव-अजीव का भेद विज्ञान समझ पाता है। ज्ञान की आधारशिला पर ही धर्म टिका हुआ है और दया, करुणा, सहिष्णुता, परोपकार, अहिंसा, ये सब ज्ञान के 'रिजल्ट' है। ज्ञान के द्वारा ही व्यक्ति अपने 'एक्शन' पर गौर कर सकता है और सही नॉलेज ही अच्छा कर्म करने की प्रेरणा देती है। सच्चा ज्ञान व्यक्ति को तभी हांसिल होता है जब वह सिर्फ अपने शरीर को नहीं वरन उसके भीतर रही हुई आत्मा को जानने का प्रयत्न कर पाता है। कभी गहराई से यह चिन्तन करना कि जो मैं खा रहा हूं क्या वाकई में इसे मेरे दांत खा रहे है ? जिसे मैं देख रहा हूं क्या उन्हें मेरी आँखें देखती है ? जिसे मैं सुन रहा हूं, क्या वे कान ही सुन रहे है ? जो मैं सूंघता हूं, क्या वह नाक सूंघ रही है ? जब दांत, आंख, कान, नाक कुछ भी नहीं करते हो, तब अपनी ज्ञान को तत्व दृष्टि से उन्हें देखें कि क्या वाकई में दांत कुछ खाते हैं ? तब आसानी से यह पता लगेगा कि दांत कुछ नहीं खाते बल्कि अंदर एक चेतन शक्ति है जो अपना काम करती है। अफसोस यही तो है कि इस सत्य को जब एक डॉक्टर उजागर करता है कि इस शरीर के भीतर से आत्मा निकल गई है, अब यह शरीर मुर्दा हो चुका है। उस पर हमें पूरा भरोसा है। तब दांत, आंखें, नाक, कान क्या बदल गये ? वे सब तो वही है जहां वे पहले थे। अब वे देख, सुन क्यों नहीं सकते ? चूंकि हम अब यह मान चुके है कि इन अंगों के द्वारा देखनेवाली 'शक्ति' निकल गई है। यही बात तो संत समझाते है कि- यह शरीर और आत्मा दोनों ही भिन्न है लेकिन आदमी संत की नहीं मानता और विज्ञान (डॉक्टर) की मान लेता है लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। जानने वाला तो कल-कल करते हुए काल के मुंह में चला जाता है। जो व्यक्ति 'काल' से पहले खुद को जान लेता है, फिर वह सुख-दुःख में समान रहने का 'गुर' सीख जाता है। उसके कर्म फिर श्रेष्ठ हो जाते है। फिर वह प्रकृति प्रदत्त अंगों का दुरुपयोग नहीं, वरन सदुपयोग करने लगता है। फिर कैसा खाना, कैसा पीना, कैसा बोलना, कैसा सुनना, कैसा देखना और कैसा व्यवहार करना, ये सारे सद्गुण उसके जीवन में घुल-मिल जाते है। ऐसा व्यक्ति ही वास्तविक रुप से ही तपस्वी कहलाता है।

संसार में जितनी भी साधना हुई है हो रही है और आगे भी होगी, वे सब ज्ञान के द्वारा ही संभव हो पाती है। ज्ञान होने से ही प्रवृत्ति सही होती है और फिर व्यक्ति दुर्गति में जाने से बच जाता है। ज्ञान से ही यह पता लगता है कि मैं सिर्फ शरीर नहीं हूं वरन् इससे भिन्न भी कोई तत्व है जो इस चमड़े रुपी शरीर में रहता है। उसे आत्मा कहा गया है और आत्मा का नेचर अच्छा होता है, बुरा कभी नहीं। बुरा यदि हम करते है तो उससे सदा आत्मा दुःखित होती है। कर्म बंधन का यही कारण होता है। यदि हम अच्छा ही अच्छा सोचेंगे, देखेंगे, करेंगे तो यह गारन्टी है कि फिर आगे जीवन में कभी दुःख, कष्ट, परेशानी, तनाव, चिन्ता का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होगा। दुःख और परेशानी का मूल कारण यही है कि हम आत्मा के स्वभाव के विपरीत जो-जो कृत्य करते है, फिर वे ब्याज सहित उदय में आने पर रुलाते हैं। इसलिये आत्म-ज्ञानी बनने का प्रयत्न कीजिए जिससे यह शरीर व इसके अंग पाप नहीं पुण्य कमाने की तरफ अग्रसर हो सके। जैसा आप करेंगे, वैसा ही तो पाएंगे। पाप-पुण्य के आप स्वयं जिम्मेदार है, यह समझ लेना वर्ना फिर एक दिन कल-कल करते काल उपस्थित होने पर आप कुछ नहीं कर पाएंगे। अतः अपने 'आज' को अभी से बेहतर बना लेना। आपका यह पुण्य ही आपको सद्गति देने में माध्यम बनेगा।

ज्ञान रुपी दीप की दीपावली * दीपाली जैन, सुखेड़ (म.प्र.)

दीपावली-दीप जलाने का त्यौहार, क्यों ना इस बार हम भी अपने यहां दीप जलाये, ज्ञान रुपी दीप जलाकर स्वयं (आत्मा) के घर में उजाला करें ताकि मिथ्या-मान्यता रुपी दरवाजे खुल जाये और सम्यक्त्व रुपी लक्ष्मी का प्रवेश हो सके।

प्रभु वीर के निर्वाण कल्याण का परम शुभ दिन, जिस दिन प्रभु ने शाश्वत अनंत सुख को प्राप्त किया, अब हम भी एक कदम उस शाश्वता की ओर बढ़ायें।

अब सवाल है कि कैसे कदम बढ़ाये, प्रभुवीर के जीवन को अपना ध्येय (लक्ष्य) बनाये। उसके पहले ये जान ले कि जीवन क्या है, जीवन एक यात्रा है, जन्म और मृत्यु के बीच की। हमको भी यदि सम्यक्त्व रुपी लक्ष्मी को प्राप्त करना है तो हमारी यात्रा भी प्रभुवीर की यात्रा (जीवन यात्रा) की तरह होनी चाहिये, मात्र बाहरी रुप से नहीं मूलतः अन्तरंग रुप से ही। बाहर तो वही झलकेगा जैसा व्यक्ति का भीतर होगा, बाहर बदलने से पहले भीतर अन्तःमन बदलना जरुरी है, बाकी बाहर तो अपने आप बदल जायेगा।

इस जीवन में आनंद ही आनंद अगर हम अन्तःमन सुधार ले, संसार के भ्रमजाल को समझ ले, मिथ्या, हिंसा, ईर्ष्या, भय, लोभ को हटाकर उसकी जगह यथार्थ, अहिंसा मैत्री, निर्भयता, संतोष और प्रेम को हृदय में प्रकट करें, इन्हीं भावों का फैलाव करेंगे तो आप अनुभव करेंगे कि जीवन खुशहाल बन जायेगा और प्रभु श्रीमहावीर की दिशा में एक कदम बढ़ जायेगा।

पर क्यों व्यक्ति इन आराधक भावों को प्रकट करने में असमर्थ महसूस करता है या यूं कहे प्रमाद करता है, क्योंकि उसे जीवन सिर्फ दुःखों से भरा लगता है। असहज होकर हम जीवन जीते है। परमात्मा का पहला नियम सहज हो जाओ, हर परिस्थिति को सहजता से स्वीकार करो, कल्पना करो और भ्रम में जीना छोड़कर यथार्थ (सत्य) को मानकर उसने जीना शुरु कर दे तो जीवन सुखद हो जायेगा।

परमात्मा का सिद्धांत है कैसी भी परिस्थितियां आए अर्तध्यान नहीं करना, दुःखी नहीं होना, वास्तव में परिस्थितियां कुछ है ही नहीं मात्र मन का कल्पना जाल है। अपनी इच्छाओं के विपरीत वातावरण दुःख का कारण है, इसलिये श्रीमहावीर प्रभु ने इच्छा विजय करने के लिये कहां, इच्छा को दबाना नहीं उसकी पूर्ति नहीं करना, अपितु तत्वज्ञान की इच्छाओं पर विजय प्राप्त करना है, इच्छा ही दुःख का कारण है और इच्छा निरोधक ही तप है।

भगवान घर से निकले थे विजय के लक्ष्य को पाने के लिये और वह लक्ष्य पूरा हुआ केवलज्ञान प्राप्त करने के बाद कार्तिक वदी-अमावस्या के दिन पूर्णतः वह अपने परम शांतिमय स्वरुप में अन्तःध्यान हो गये।

जगत आत्मरुप मानने में आये, जो होता है उसे योग्य ही मानने में आये, दूसरों के दोष देखने में न आये, अपने गुणों की उत्कृष्टता सहन करने में आये, तो ही इस जगत में रहना योग्य है, अन्यथा नहीं।

किस शशि के दर्शन चाहिये ?

कृष्ण पक्ष की अंधकारपूरित रात्रि थी- मन अशांत था- रजनीपति के दर्शन हेतु-परन्तु उक्ति है- **''शर्वरी दीपकश्चनद्रः''** (रात्रि में दीपक ही चन्द्र है)

काल तो अपनी निर्धारित गति से ही चलता है- कृष्ण पक्ष समाप्त हो शुक्ल पक्ष का आगमन हुआ। निरभ्र-गगन में संध्या समय-एक उज्जवल पतली रेखा के रुप में चन्द्र दर्शन हुए। कुछ आत्म संतोष हुआ। वहीं चन्द्र पंचमी के दिन कुछ निखार पर आया- अष्टमी पर और प्रगति की, और अन्ततः उसने पूर्णिमा को संपूर्ण कलाओं से उदित हो विश्व को उद्भासित कर दिया- मुझे भी पूर्ण आत्म तुष्टि हुई।

परन्तु दुःख इस बात पर होने लगा कि वह चन्द्र शनैः शनैः पुनः कालिमाच्छादित होता हुआ ''क्षयी'' होने लगा।

मेरा मन अधीर हो उठा- ऐसे शशि के दर्शन करने के लिये जो नित्य पूर्ण उदित रहे- महामोह के तिमिर से कभी भी आच्छन्न न हो-मेघ उसे मलिन न कर सकें और राहु से वह ग्रसित न हो। जैन शासन के ज्योतिर्धर आचार्य श्रीमानतुंग सूरीश्वरजी का दिव्य स्वर सुनाई दिया-

नित्योदयं दलित मोह महान्धकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज मनल्पकान्ति,
विद्योतयज्जगद पूर्व शशांक बिम्बम्॥

ऐसे शाश्वत् पूर्ण शशि के दर्शन तो वीतराग प्रभु के अतिरिक्त अन्यत्र कहां संभव है ? उन्हीं का मुख-शशि नित्य हमारे मन के तिमिर को हर सकता है।

आत्म मुक्ति का मार्ग स्वालम्बन मार्ग है-श्रीमहावीर

✽ शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर

श्रीमहावीर स्वामी ने चार महाव्रतों के साथ ब्रह्मचर्य को भी जोड़ा। श्रीमहावीर ने ऐसे धर्म की नींव डाली जो 2500 वर्षों तक अपरिवर्तित रहा, क्योंकि वह सत्य, अहिंसा, संयम और तप पर आधारित था। साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका चतुर्विध संघ की स्थापना की।

भगवान श्रीमहावीर के अवतरण के पूर्व भारत में धर्म के नाम पर कर्मकाण्ड, यज्ञों में पशुओं की हत्या और नरबलि देने की परम्परा थी। समाज में शुद्रों और स्त्रियों को क्रय-विक्रय की वस्तु माना जाता था।

प्रभु श्रीमहावीर जो बचपन में मति, श्रुति और अवधि ज्ञान के धारक थे। करुणा के अवतार भगवान श्रीमहावीर ने माताश्री के पेट में रहते हुए ही माता-पिता को मानसिक कष्ट न हो इस बात को महसूस कर उनके जीवित रहते दीक्षा न लेने का निश्चय कर लिया और बड़े भाई की भावना को ध्यान में रखकर दीक्षा दो वर्ष बाद ली। इस तरह मानवता धन्य हुई। उन्होंने अपनी सम्पत्ति का भी वर्षों दान दिया।

प्रश्न व्याकरण सूत्र आगम में भगवान श्रीमहावीर ने परिग्रह के लिये कहा- अर्थ ही अनर्थ करता है, इससे आसक्ति होती है। परिग्रह पाप कार्यो का मूल होकर हिंसा करवाता है। पदार्थ हमारे साथ बंधते नहीं, हम बंध जाते है। अपरिग्रह जिसने पत्नियां वह देह से ज्यादा आत्मिक आनन्द वीतराग के समभाव को पा लेता है। महावीर ने साढ़े बारह वर्ष तक घोर तपस्या की और केवल ज्ञान प्राप्त किया तथा तीस वर्ष जन के आत्मकल्याणार्थ ज्ञान को जनसमुदाय में वितरित किया। साधनाकाल में प्रभु श्रीमहावीर को विविध कष्ट उठाने पड़े। कदाचित ही कहीं उनके जैसी कठोर साधना, अहिंसा व्यवहार और आदर्श में दृष्टिगत होती है। व्यवहार में अनेकांत और दर्शन में स्वाद्वाद को उन्होंने अपनाया।

साधना के अंतिम चरण में बैल न मिलने पर असह्य क्रोध से आग बबुला होकर ग्वाले ने प्रभु के कानों में खीलें ठोंके। विश्व बंधु चरम अहिंसक श्रीमहावीर ने वैर की इस अंतहीन श्रृंखला का हृदय के भीतर प्रगाढ़ अंधकार की पर्तो के पीछे दर्शन किया कि वैर और प्रतिशोध की अटूट परम्परा जिससे संसार के प्राणी भव-भव से त्रस्त है, जैसा कि स्वयं श्रीमहावीर के द्वारा त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में ग्वाला जो शैयापाल था के अवज्ञा करने पर गर्म शीशा कान में डलवाया था, उसका स्वयं को दोषी पाया एवं स्थापित किया कि केवल क्षमा ही इसका समाधान है एतदर्थ धैर्य पूर्वक ग्वाले द्वारा कान में ठाके गये खीलों की वेदना को अद्वितीय प्रेम के साथ सहनकर बैर बदले की अंतहीन श्रृंखला समाप्त की।

साधनाकाल के प्रथम वर्ष में ध्यानावस्था में ग्वाले के बैल नहीं मिलने पर उत्तर प्राप्त नहीं होने के कारण उसने श्रीमहावीर को चर्म जुए से पीटा। इन्द्र के सहायतार्थ उपस्थित होने पर उससे महावीर ने कहा- आत्मा मुक्ति का मार्ग स्वावलम्बन का मार्ग है, इसमें किसी की सहायता की आवश्यकता होती ही नहीं। साधनाकाल के साढ़े बारह वर्षो में केवल 350 दिन आहार ग्रहण किया, शेष श्रीमहावीर ने निर्जल उपवास किये।

एतदर्थ श्रीमहावीर प्रभु के स्थापित जैन धर्म के सिद्धांतों में हुए आस्था रखकर उनका आचरण करके ही हम इस ऐतिहासिक जैन दर्शन और संस्कृति का प्रसाद वितरित करने के सुपात्र बन पाएँगे। जय जिनेन्द्र !

परमात्मस्वरुप

श्री गौतम स्वामी ने पूछा है कि- शिवत्व की प्राप्ति के इच्छुक व्यक्ति को कौन से धार्मिक कर्म करने चाहिये।

श्री भगवान ने उत्तर दिया सर्व प्रथम दर्शनावरणीय कर्म का नाश करने के लिये परमात्म स्वरुप का दर्शन करना चाहिये तथा गुरु पर श्रद्धा रखनी चाहिये। कौन से परमात्मा पूजनीय है इसकी व्याख्या करते हुए यह बताते है कि- वे परमात्मा स्वयंभू, लोकालोक सर्वज्ञ एवं महाव्रती है। निसंग होने के कारण वे न तो गौरीपति है एवं न परशुधर। जो माया से रहित है, समदृष्टि है एवं योगी है वे शुद्ध सिद्ध प्रबुद्ध व शान्त सुधारस केवली परमात्मा है। ये ही मंगलस्वरुप जिन अथवा शिव है। भगवान् ने श्वेताम्बर और दिगम्बर साधुओं को अर्हद् धर्म का पथिक बताया है अतः इन गुरुओं के उपदेश श्रवण से आत्मज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

✲ अनु दीपक जैन, जयपुर, मो.नं. 9782499999

आगमोद्धारक भविष्य फल नवम्बर-2020

मेष– आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापार में आशा अनुसार वृद्धि होगी, उच्च कोटि का मनोबल रहेगा, व्यापार में कोई नई योजना क्रियान्वित होगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर समय रहेगा।

वृष– आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, कार्य क्षेत्र में अधूरे कार्य पूर्ण होंगे, इस माह क्रोध एवं वाणी पर अवश्य नियंत्रण रखें, धार्मिक कार्यो में रुचि रहेगी, विद्यार्थी वर्ग को परिश्रम करना होगा।

मिथुन– आपके लिये यह माह सामान्य फलदायक रहेगा, कार्य क्षेत्र में वृद्धि हेतु परिश्रम की अधिकता रहेगी, परिवार में कोई विशेष उत्सव संभावित है, व्यय की अधिकता रहेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये तनाव का समय रहेगा।

कर्क– आपके लिये यह मास फलदायक रहेगा,दूर स्थानों में विशेष लाभ संभावित है,कार्य में आशा अनुसार परिणाम प्राप्ति रहेगी,पदोन्नति की संभावना रहेगी,विद्यार्थी वर्ग के लिये शुभ समाचार संभावित है।

सिंह– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक रहेगा, अधिकारी वर्ग का सहयोग कार्य में वृद्धि करवाएगा यह समय भाग्योदयकारक रहेगा, परिवार में संतोषजनक वातावरण रहेगा, विद्यार्थी वर्ग में परिश्रम की अधिकता रहेगी।

कन्या– आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापार में लाभप्रद योजना शामिल होगी पार्टनर का सहयोग शुभ फलदायक रहेगा, सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में वर्चस्व वृद्धि होगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये शुभ समय रहेगा।

तुला– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक रहेगा, व्यापार में कोई विशेष सफलता संभावित है, वृद्धजनों के आर्शीवाद से महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे, परिवार में किसी प्रकार का महोत्सव आदि संभावित है, विद्यार्थी वर्ग के लिये अनुकूल समय रहेगा।

वृश्चिक– आपके लिये यह समय सामान्य फलदायक रहेगा, आशा अनुसार लाभ प्राप्ति ना होने से निराशा संभावित है, व्यय की अधिकता मानसिक तनाव दे सकती है, माह का उत्तरार्ध शुभ रहेगा।

धनु– आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा, बौद्धिक कार्यो में वृद्धि होगी, सामाजिक क्षेत्र में वर्चस्व प्राप्ति होगी, स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्याएं उभर सकते हैं, विद्यार्थी वर्ग के लिए बेहतर समय रहेगा।

मकर– आपके लिये यह मास सामान्य फलदायक रहेगा, आते हुए लाभ में बाधाएं आ सकती है, व्यय की अधिकता रहेगी, उच्चाधिकारियों का सहयोग बेहतर संभावना दे सकता है, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर समय रहेगा।

कुम्भ– आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापार में पार्टनर के सहयोग के सहयोग से नई योजना बनेगी, संचित धन में वृद्धि होगी, कार्य का विस्तार होगा, दूर स्थानों की यात्रा शुभ फलदायक रहेगी।

मीन– आपके लिये यह मास सामान्य फलदायक रहेगा, व्यापार में हानि की संभावना है, संतान पक्ष से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, मान सम्मान में वृद्धि हेतु बेहतर समय रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम की अधिकता रहेगी।

वर्ग पहेली क्रमांक-*307*

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	■	■	2		3	4		5
6		7		■	8		■	
	■	9		10	■	11	12	
13	14	■	15		16	■	17	
■	18			■	19			■
20	■	■	21	22		■	23	24
25		26	■	27		28	■	
	■	29	30	■	31			
32						■	■	

बाएं से दाएं:-

2- शंख लांछनवाले तीर्थंकर के पिता--- (6)
6- त्रिशला नंदन--- स्वामी (4)
8- जहां देवता निवास करते है- दे---क (1,1)
9- आचार्य चंदनाजी द्वारा स्थापित प्रमुख जैन केंद्र वीरा--- (3)
11- प्राचीनकाल में पाटलीपुत्र था जिसकी राजधानी--- (3)
13- मयणा सुंदरी ने--- पद ओली की आराधना कर श्रीपाल राजा के कुष्ठ रोग को समाप्त किया था (2)
15- कंचन, कनक, स्वर्ण का समानार्थी (3)
17- थोड़ा का पर्यायवाची--- (2)
18- अवसर्पिणी काल का एक भेद--- (3)
19- रामायणा में हनुमान को प---त भी कहा गया है (2,1)
21- कोई लाख करे चतुराई क---लेख मिटे ना रे भाई (2,1)
23- सम्यक दृष्टि जीव-जिनेन्द्र देव, वीतरागी मुनि और जिनवाणी के अतिरिक्त ---व, कुशास्त्र को नमन नहीं करता (2)
25- बाइसवें तीर्थंकर नेमिनाथ जब मोक्ष सिधारे, तब भव उनका---व था (2,1)
27- तमिलनाडु के उत्तरी आरकाट जिले में भ.महावीर का तीर्थ- पो---लै (3)
29- भ.अभिनंदन स्वामी के पिता का नाम- श्री सं---जी (2)
31- भ.बाहुबली को समर्पित हाथरस जिले में तीर्थधाम---तन (4)
32- गौतम स्वामी को---भी कहा जाता है (4,2)

ऊपर से नीचे:-

1- सामायिक में वचन के 10 दोष में से एक (4)
2- बारह चक्रवर्ती में से चौथे (6)
3- जो ठोस न हो (2)
4- विपरीत अर्थ वाला (3)
5- रुचक पर्वत के दक्षिण की एक दिक्कुमारी--- (4)
7- प्रेम गली अति सांकरी, जामें दो न स--- (2)
10- भ.श्रेयांसनाथ का दीक्षा कल्याणक के बाद पारणा राजा---के यहां हुआ था (2)
12- क्रोधित ससुर ने मुनि---माल के मस्तक पर जलती हुई सिगड़ी रख दी थी परन्तु मुनि ध्यान में अड़िग रहे (4)
14----धैव कुटुम्बकम्-भारतीय संस्कृति का आदर्श है (2)
16- स्तवन---है महामंत्र, इस मंत्र महिमा भारी है, आगम में कहीं गुरुवर से सुनी अनुभव में जिसे उतारी है (4,2)
20- बड़े जब आर्शीवाद देते हैं तो कहते है- आयु--- (2,2)
22- भानपुरा में जन्मी प्रसिद्ध कहानीकार, उपन्यासकार ---भंडारी (2)
24- उन्नीसवें विहरमानजी का नाम---स्वामी (4)
26- संस्कृत के एक महान कवि व नाटककार---ति (3)
30- हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह ये पांच आवि--- है (2)

वर्ग पहेली क्रमांक-306 का परिणाम

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

अ	भि	धा	न	■	कृ	त	व	र्मा
म	■	रा	म	कृ	ष्ण	■	र	■
र	से	न	■	पा	प	■	मा	स
■	स	ग	र	■	क्ष	प	ण	क
नं	■	री	■	■	■	र्व	■	ल
द	क्ष	■	द्र	■	प	ता	का	■
न	मा	■	वि	ज	■	धि	का	र
■	प	■	ज	हां	आ	रा	■	विं
जि	ना	ल	य	■	रा	ज	चं	द्र

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-307

* आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

निम्नलिखित तीर्थ के मूलनायक कौन है ?

1- तरंगा	2- प्रभास पाटन
3- भोंयणी	4- भरुच
5- टींटोह	6- महुडी
7- भोपावर	8-मांडवगढ़
9- राणकपुर	10- गिरनार
11- महेसाना	12- चंपापुरी

मुनिश्री मुनिरत्नसागरजी मौन आराधना के साथ आगम मंदिर में विराजित

पालीताना- पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य भगवंत के सुशिष्य आजीवन आयंबिल तपाराधना मुनिश्री मुनिरत्न सागरजी म.सा.एवं मुनिश्री पुनीतरत्न सागरजी म.सा.आगम मंदिर परिसर में विराजित है। मुनिश्री मौन आराधना के साथ साधनारत है। नियमित रात्री में 1 से 4 बजे तक आपश्री की ध्यान किया चलती है और सिर्फ आध्यात्मिक चर्चा ही होती है।

आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- आय.सी.आय.सी.आय. बैंक, शाखा तीन बत्ती चौराहा, उज्जैन (म.प्र.)
खाता:-श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)
खाता क्रं. 030001000331
IFSC Code ICICI0000300

वर्गपहेली क्रमांक-306 के परिणाम

विजेता:-

1- श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास (म.प्र.) - प्रथम
2- समरथमल जैन मंदसौर (म.प्र.) -द्वितीय
3- श्रीमती मीना जैन, देवास (म.प्र.) -तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे :—

श्रेयांस जैन, उज्जैन, जवाहरलाल जैन, उज्जैन

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक—306 के परिणाम

विजेता:-

1- श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास (म.प्र.) - प्रथम
2- श्रीमती मीना जैन, देवास (म.प्र.) -द्वितीय
3- भारती जैन, देवास (म.प्र.) -तृतीय

सही उत्तर-

1- गुणसागर, 2- प्रभवस्वामी, 3- जंबुकुमार, 4- मरुदेवा माता, 5- आंद्रकुमार, 6- अनाथ मुनि, 7- इलाचीकुमार, 8- मेघरथराजा/मेतारज मुनि, 9- भवदेव 10-गौतम स्वामी, 11- स्थुलभद्र स्वामी, 12- भरत चक्रवती।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-11-2020 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

साध्वी श्री कल्पद्रुमाश्री को 100 वीं ओली का पारणा 24 जनवरी 2021 को आगर में होगा

✲ अनेक आचार्य भगवंत साधु-साध्वी की निश्रा रहेगी।
✲ श्री संघ ने निमंत्रण से सबको आमंत्रित किया।
✲ 24 जनवरी 2021 को पारणा होगा।

दुधलिया-सामग समुदाय के पूज्य मालव दीपिका पू. मनोहर इन्दु शिशु म.सा. के पूज्य साध्वी श्री वर्धमान तपाराधिका साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री कल्पद्रुमा श्रीजी म.सा. को वर्तमान में 99 वीं वर्धमान तप की ओली चल रही है। आपकी 100 वीं ओलीजी आसोज (निज) वदी-5 बुधवार दिनांक 7 अक्टूबर से आरंभ होगी। 100 वीं ओलीजी की पूर्णाहुति पोष सुदी-11 रविवार 24 जनवरी 2021 को आगर मालवा में होगी।आपश्री के पारणा महोत्सव के लिये सागर समुदाय के वचन सिध्द वरिष्ठ जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी म.सा. मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा.आदि ठाणा के साथपूज्यपाद ज्योतिर्विद आचार्य भगवंत श्री जिनरत्नसागर सूरीजी म.सा.वाणी के जादूगर और अनेक ग्रंथों के रचयिता पूज्य आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. 100+100+150ओली के आराधाक आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्न सागरजी म.सा.,मुनिश्री चैत्यरत्नसागर जी म.सा.,मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागर जी म.सा.,मुनिश्री गोयसरत्नसागरजी म.सा.आदि ठाणा आचार्यदेव श्री मुक्तिसागरसूरीजी म.सा. के पंन्यास अचलमुक्तिसागरजी, पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण गुरुदेव भोपावर तीर्थो द्धारक श्री नवरत्नसागरसूरीजी म. सा. के शिष्य पूज्यपाद जैनाचार्य श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजीम.सा. अर्हम्‌रत्न सागरजी सा. के साथ सागर समुदाय के अनेक साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में भव्य तपोत्सव के साथ ओली का पारणा सम्पन्न होगा।ओली पारणा महोत्सव की तैयारी आरंभ हो गई है।

साध्वी कल्पदुमा श्रीजी की जीवन रेखा

✲ नाम-साध्वी कल्पदुमा श्री ✲ जन्म दिनांक23-5-1959, जेठ वदी-9 आगर मालवा ✲माताश्री-श्रीमती दाखादेवी ✲पिताश्री-श्री नेमीचंदजी रामसिना ✲भाई-विमलजी, विजयजी, विरेन्द्र जैन ✲संसारी नाम-कुसुम जैन

✲व्यवहारिक अभ्यास-बी.कॉम

✲ चतुर्थ व्रत स्वीकार- दीक्षावर्ष वि.सं. 2034

✲ दीक्षा-रतलाम - अगहन सुदी-6✲बड़ी दीक्षा-शिवगढ़ -पौष सुदी-14

दीक्षादाता गुरुदेव-	श्री प.पू.पं.श्री सूर्योदयसागरजी म.सा.
गुरुदेवश्री-	प.पू.शशिप्रभा श्रीजी म.सा.
शिष्या-	सा. सौम्यद्रुमाश्रीजी म.सा.
गृहस्थ पर्याय-	19 वर्ष
दीक्षा पर्याय-	43 वर्ष
आयुष्य-	62 वर्ष
प्रथम चार्तुमास-	राजोद (म.प्र.)
वर्तमान चार्तुमास-	दुधालिया (राज.)
कुल चार्तुमास-	43
भाषा ज्ञान-	हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी, संस्कृत
विहार यात्रा-	मालवा, गुजरात, बिहार, बंगाल, हाड़ौत, मारवाड़, मेवाड़, महाराष्ट्र
चार्तुमास राज्य-	मालवा, मारवाड़, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, हाड़ौत
प्रसिद्धी-	19 जिनालयों का जिर्णोद्धार करवाया, प्रतिष्ठा, उपाश्रया निर्माण
जीवन लक्ष्य-	दर्शन शुद्धिपूर्वक, संयम की पालना, ज्ञानार्जन

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी 16 दिवसीय सूरीमंत्र की मौन आराधना में विराजित हुए : उत्तर साधक मुनिश्री गंभीररत्नसागरजी रहेंगे

✻ 17 अक्टूबर को महामांगलिक हुई। ✻ सूरीमंत्राराधना के लिये विशेष आराधनास्थल गुफा बनाई गई। ✻ 31 अक्टूबर से 14 नवंबर तक आराधना होगी। ✻ नूतन वर्ष की महामांगलिक के साथ आराधना की पूर्णाहुति होगी। ✻ उपधान तपाराधना होने की संभावना। ✻ आगामी चार्तुमास मालवा में होने की संभावना। ✻ मार्च-अप्रेल में मालवा आगमन हो सकता है। ✻ साध्वी भगवंतों को जोग क्रिया चल रही है।✻आगमोद्धारक का दिसबंर 2020 का अंक समर्पण विशेषांक गच्छाधिपति को समर्पित होगा।✻चार्तुमास के बाद आगे आयोजन पर मंथन।

पालीताना-जम्बुद्वीप वर्धमान पेढ़ी पर चातुर्मासिक आराधना के लिये विराजमान पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा के द्वितीय शिष्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीजी म. सा., मुनिश्रीतीर्थरत्नसागर जी, मुनिश्रीउत्तमरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में पालीताना की पुण्य पावन भूमि एवं दादा श्रीआदिनाथ की छत्रा-छाया में जंबूद्वीप आराधना भवन में चल रहे ऐतिहासिक चार्तुमास के अंतर्गत 31 अक्टूबर से 14 नवंबर तक 16 दिवसीय सम्पूर्ण मौन के साथ सूरी मंत्र पीठिका की आराधना होने जा रही है 30 वर्ष पहले मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा ने यह आराधना शुरु की थी उसी परिपाटी को उनके जाने के बाद युवा हृदय सम्राट आचार्य भगवंत श्रीविश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा ने अपने गुरु के आदेश को सर्वोपरी मानकर इस आराधना को करने का संकल्प लिया है। इस बार शत्रुंजय की पावन पवित्र भूमि में करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।इस आराधना में मुनिराज श्री गंभीररत्न सागर म.सा. को उत्तर साधक के रुप में आराधना करने का अवसर प्राप्त हुआ है। गुरु के इस उपकार वे कभी भूला नहीं पायेंगे।

सूरीमंत्र की आराधना यानि क्या ?

सूरीमंत्र की आराधना सिर्फ आचार्य भगवंत ही कर सकते है। यह आराधना 16 दिन की होती है। इसमें प्रतिदिन 14 से 18 घंटे संपूर्ण मौन के साथ जाप, मूंग से आयंबिल होगें, स्त्रीयों का मुंह नहीं देख सकते है एवं किसी भी साधु या श्रावक को टच या स्पर्श नहीं करते है। यह आराधना एक गुफा की रचना कर उसके अंदर 16 दिन तक रहकर होगी। प्रतिदिन अलग-अलग प्रकार की आराधना, जाप, अभिषेक होते है। इसमें सिर्फ श्रावक को ही निश्चित समय पर जाप, आराधना करने का अवसर प्राप्त होता है। एकदम शांति का अनोखा संगम देखने को मिलता है। इस आराधना में कई प्रकार के चमत्कार के साथ अपनी मनवांछित मनोकामनाएं पूर्ण होती है। जैसे ही आराधना पूरी होगी उसके बाद कार्तिक सुदी-एकम को नूतन वर्ष की महामांगलिक के साथ मौन खुलेगा और इसका समापन होगा।पूज्यश्री की निश्रा में साध्वी भगवंतों को जोग क्रिया चल रही है। वाचना का आयोजन भी प्रातःकाल हो रहा है। 18 अक्टुबंर को पूज्यश्री की महामांगलिक का आयोजन हुआ जिसका प्रसारण पारस चैनल पर हजारों धार्मिष्ठों ने सुना। पूज्यश्री की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में गच्छाधिपति को समर्पित **''आगमोद्धारक समर्पण विशेषांक''** का प्रकाशन दिसबंर 2020 में होने जा रहा है। चार्तुमास के उपरांत आगे की धार्मिक योजनाओं और कार्यक्रम की रुपरेखा बनेगी।

पूज्यपाद जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी की निश्रा में एक बार पुन: धर्म की बयार चालू हुई

उज्जैन- सागर समुदाय के वचन सिध्द वरिष्ठ जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी म.सा. मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा.आदि ठाणा के साथ यहां विराजित सागर समुदाय वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री दमिताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री प्रिय दर्शनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री मुक्ति दर्शनाश्रीजी, आदि ठाणा की निश्रा में कोरोना महामारी से प्रभावित हुई चातुमार्सिक आराधना में फिर से धर्म की बयार आरंभ हुई। पूज्यश्री के द्वारा 7 अक्टूबर से श्री भगवती सूत्र पर प्रवचन आरंभ हुए। इसके साथ ही 10 अक्टूबर से मुनिप्रवर श्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा.के द्वारा वर्धमान तप की 91 वीं ओली का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर यहां अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भी तप की अनुमोदनार्थ आयंबिल तप किया। नवपद ओली आराधना का आयोजन 23 से 31 अक्टूबर तक किया गया इसके पूर्व श्री माणिभद्र वीर के प्रकट महोत्सव के अंतर्गत 21 अक्टूबर को पूज्यश्री की निश्रा में हवन पूजन का आयोजन बडा उपाश्रय में किया गया।

मांडवगढ़ महातीर्थ मूलनायक सुपार्श्वनाथ जिनालय का शिलान्यास 27 नवंबर को जैनाचार्य श्री अशोकसागरसूरीजी की निश्रा में

- पंच शिखरीय भव्य जिनालय का निर्माण होगा।
- 45 शिलाओं की स्थापना होगी।
- 120 जिन प्रतिमा की पुर्न प्रतिष्ठा होगी।
- श्री सिद्धाचल विहार धर्मशाला का उद्घाटन होगा।

मांडवगढ़- पूज्य पंन्यास प्रवर श्री अभयसागरजी म.सा. के सुशिष्य 60 वर्षीय दीर्घ संयम साधक, सिंह गर्जना के स्वामी पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री अशोकसागर सूरीश्वरजी महाराजा गुरुकुल के आचार्य भगवंत श्री सौम्यचंद्र सागर सूरीश्वरजी म.सा., आचार्य देवेश श्री विवेकचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म. सा., आचार्य देवेश श्री मतिचंदसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि साधु-साध्वी ठाणा की पावन निश्रा में प्राचीनतम तीर्थ श्री मांडवगढ़ के मूलनायक प्रभु श्री सुपार्श्वनाथ दादा के जिनालय का आमूलपूर्ण जीर्णोद्धार निमित्त भव्य शिलान्यास का आयोजन 27 नवंबर को होने जा रहा है। पूज्यश्री की निश्रा में होने वाले इस शिलान्यास के उपरांत एक अद्भूत भव्य अनोखा जिनालय का निर्माण होगा। पूर्ण निर्माण के बाद ही परमात्मा की प्रतिमा का उत्थान किया जायेगा। इस निमित्त तीर्थ को भव्य स्वरुप प्रदान करने की योजना पर व्यापक काम चल रहा है ताकि भविष्य में धर्मिष्ठों का आगमन बड़ी संख्या में हो नवपद ओली आराधना का आयोजन 23 से 31 अक्टूबर तक किया गयाश्री माणिभद्र वीर के प्रकट महोत्सव के अंतर्गत 21 अक्टूबर को मनाया गया।

त्रिदिवसीय तपोत्सव

जुमनियांकला- श्री भीड़ भंजन पार्श्वनाथ जैन मंदिर के जैन भवन में पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के तृतीय सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री मृदुरत्नसागर सूरीश्वरजी के सुशिष्य मुनिश्री नमिरत्न सागरजी म.सा. एवं मुनिश्री पवित्ररत्न सागरजी म.सा. एवं साध्वी अर्चपूर्णाश्री आदि ठाणा की निश्रा में धर्मरत्न श्रीपार्श्वनाथ साधनास्थली में सागर समुदाय की चार साध्वी भगवंत एवं श्रावक-श्राविका को श्रेणी एवं सिध्दि तपाराधना के अनुमोदनार्थ त्रिदिवसीय तपोत्सव का आयोजन दिनांक 11 से 13 अक्टूबर तक किया गया। इस अवसर पर स्नात्र महोत्सव, तपस्वियों की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। नवपद ओली आराधना का आयोजन 23 से 31 अक्टूबर तक किया गया

''बिन नवपद सब सुन'' पुस्तक पर ऑन लाईन परीक्षा

उज्जैन- पूज्यपाद अभ्युदय सागरजी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागरजी म.सा.,पू.पंन्यास श्री अंजलमुक्तिसागरजी म.सा., मुनिश्री पावनमुक्तिसागरजी, मुनिश्री मनमुक्ति सागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में **''बिन नवपद सब सुन''** पुस्तक पर ऑन लाईन परीक्षा का आयोजन किया गया। स्मरण रहे यह पुस्तक के प्रथम संस्करण का सम्पादन डॉ. सुभाष जैन आगमोद्धारक के द्वारा किया गया था उस समय प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. शिवमंगलजी सुमन ने पुस्तक की भूमिका लिखी थी।

15 दिवसीय महोत्सव का आयोजन दादा आदिनाथ प्रभु की छत्रछाया में : विविध धार्मिक आयोजन भी

✻ देवीश्री पद्मावती का हवन हुआ। ✻ शाश्वत तीर्थो की भावयात्रा ✻ 45 आगम परिचय ✻ वर्धमान तपाराधना का पाया डलवाया।

बदनावर-पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण गुरुदेव भोपावर तीर्थो द्धारक श्री नवरत्नसागरसूरीजी म. सा. के शिष्य पूज्यपाद जैनाचार्य श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजीम.सा. अर्हम्‌रत्न सागरजी सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में यहां जैन धर्मशाला में निश्रा में चार्तुमास के लगभग अंतिम दौर में 15 दिवसीय धर्माराधना के अंतर्गत विविध धार्मिक आयोजन करवाये गये। दिनांक 10 से 31 अक्टूबर तक हुए विविध कार्यक्रम के अंतर्गत श्री पद्मावतीदेवी का चयन हुआ। 17 अक्टूबर को पूज्यश्री महामांगलिक का आयोजन जैन धर्मशाला में हुआ। दिनांक 18 से 20 अक्टूबर तक पूज्यश्री ने सार्थक रुप से धर्मिष्ठों को शाश्वत महातीर्थ की भावयात्रा करवाई। दिनांक 21 अक्टूबर को श्री मणिभद्रवीर का महापूजन हुआ। दिनांक 23 से 31 अक्टूबर तक पूज्यश्री ने 45 आगम परिचय के अंतर्गत प्रत्येक आगम के विषय में रोचक जानकारी से भरे हुए प्रवचन दिये। साथ ही आसोज की नवपद ओली का आयोजन भी हुआ। दीपावली की विविध आराधना और नूतन वर्ष की महामांगलिक के आयोजन की तैयारी चल रही है।

सूरी मंत्राराधना की 16 दिवसीय मौन आराधना में जैनाचार्य श्री चन्द्ररत्नसागरसूरीजी विराजमान हुए

✻ जैनाचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी के ऑनलाईन प्रवचन।
✻ मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी को 28 एवं मुनिश्री चैत्यरत्नसागरजी को 39 वीं वर्धमान तप की ओली।

धार- श्री अभ्युदय भक्तामरधाम महातीर्थ धार में पूज्यपाद ज्योतिर्विद आचार्य भगवंत श्री जिनरत्नसागर सूरीजी म.सा.वाणी के जादूगर और अनेक ग्रंथों के रचयिता पूज्य आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. 100+100+153ओली के आराधक आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्न सागरजी म.सा.,मुनिश्री चैत्यरत्नसागर जी म.सा.,मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागर जी म.सा.,मुनिश्री गोयमसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रामें चातुमार्सिक आराधना के लगभग अंतिम दौर में सूरीमंत्राराधना की 16 दिवसीय मौन आराधना में पूज्य जैनाचार्य श्री चन्द्ररत्नसागरसूरीजी विराजित हुए नूतन वर्षारंभ के दिन आपकी आराधना पूर्ण होगी। आचार्य देवेश श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. के द्वारा ऑनलाईन विविध विषयों पर शासन प्रभावक रोचक प्रवचन दिये जा रहे है। मुनिश्री ज्ञानेशसागरजी म.सा. को 28 वीं एवं मुनिश्री चैत्यरत्न सागरजी म.सा. को 39 वीं वर्धमान तप की ओली चल रही है। चार्तुमास के बाद आपकी विविध श्री संघों में शासन प्रभावना करते हुए आगर पधारेंगे। जहां आप पूज्य साध्वी श्री कल्पदुमाश्रीजी की 100 वीं ओली पारणा में उपस्थित रहेंगे।

कालधर्म

✻ श्री लब्धिसूरी समुदाय के आचार्य श्री राजयश सूरीजी म.सा.के शिष्य श्री वज्रयशसूरीजी का मुलुंड मुंबई में दिनांक 29-9-2020 को कालधर्म हो गया।

✻ आगमोद्धारक समुदाय की साध्वी पूज्य निरुजाश्रीजी की सुशिष्य साध्वी श्री मोक्षद्वयश्रीजी का कालधर्म 3-10-2020 को आगम मंदिर पालीताना में हो गया।

✻ पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देव श्री हेमप्रभसूरीजी म.सा.के सुशिष्य मुनिश्री किरणचंद्रविजयजी (80) का दिनांक 7-10-2020 को श्री पंच जिनेश्वर केवल्यधाम-ओगनत्रा में देवलोक हो गया।

श्री माणिभद्रजी का हवन किया गया

पालीताना- पूज्यपाद गच्छाधिपति श्रीसूर्यादयसागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य पूज्य मुनि श्री गुणरत्न सागरजी म.सा. की प्रेरणा से श्रमण स्थविरालय पालीताना में कु. शीतल बेन राजुभाई डाली पालीताना की स्मृति की ओर से आसोज सुदपंचमी दिनांक 21-10-2020 को माणिभद्र दादा हवन का आयोजन किया गया।

गणिवर्यश्री 16 दिवसीय वर्धमान विद्या की मौन आराधना करेंगे

✻ 29 अक्टूबर से आराधना आरंभ हुई।
✻ 64 इन्द्र 24 यक्ष 24 यक्षमी, 10 दिक्पाल 9 ग्रह, 4 लोकपाल 16 विद्यादेवी, 9 निधि 8 अष्टलब्धि की स्थापना होगी।

भोपाल- श्री आदिनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर अरोरा कालोनी भोपाल में आचार्य भगवंत श्रीमृदुरत्नसागर सूरीजी महाराज के सुशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा.की 17 अक्टुंबर को महामांगलिक का आयोजन हुआ गणिवर्य श्री ने16 दिवसीय वर्धमान विद्या की मौन आराधना 29 अक्टूबर से विधि विधान के साथ आरंभ की। इस आराधना में सर्वजगत के कल्याण के लिये 64 इन्द्र 24 यक्ष 24 यक्षमी,10 दिक पाल 9 ग्रह, 4 लोकपाल16 विद्यादेवी,9 निधि 8 अष्ट लब्धि की स्थापना के साथ दीपावली तक आव्हान कर देवी देवता को जाग्रत करेंगे। आराधना की पूर्णाहुति के उपरांत महामांगलिक का आयोजन दीपावली की सुबह नूतन वर्षारंभ के साथ होगा एवं सभी धर्मिष्ठों को वासक्षेप प्रदान कर कल्याण की भावना के भाव के साथ प्रदान किया जायेगा।

बड़नगर में उत्तराध्यन उत्सव का आयोजन

बड़नगर- पूज्य गणिवर्य श्री आनंदचंद्रसागरजी म.सा. मुनिप्रवर श्री चारित्राचंद्रसागरजी म.सा. मुनिश्री उत्सवचंद्रसागरजीम.सा.एवं साध्वीवर्या श्री मेघावर्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 की पावन निश्रा में यहां 120 वर्ष प्राचीन श्री दादा आदिनाथ प्रभु का रोज अभिषेक हो रहा है। आपश्री के द्वारा रात्री में विशेष प्रवचन श्रृंखला चल रही है। 23 अक्टूबर से नवपद ओली आराधना भी आरंभ हुई इसके बाद आपश्री की निश्रा में दीपावली पर विशेष उत्तराध्यन-श्रमण उत्सव आयोजन होगा। आगम नाम कंठस्थ करने के अभियान में 1000 बच्चे अभी तक जुड़ गये हैं।

अष्टप्रकार पूजन एवं महाहवन

बदनावर-पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण गुरुदेव भोपावर तीर्थो द्धारक श्री नवरत्नसागरसूरीजी म. सा. के शिष्य पूज्यपाद जैनाचार्य श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजीम.सा. अर्हम्रत्नसागरजी सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में यहां जैन धर्मशाला में 27 जोड़ें के साथ श्री माणिभद्र दादा का हवन पूजन 21 अक्टूबर को किया गया।

साध्वी पूर्विताश्रीजी देवलोक हुए

पालीताना- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री हेमचन्द्रश्रीजी म.सा.की सुशिष्या साध्वी श्री पूर्विता श्रीजी का कालधर्म पालीताना मेंश्री नित्यदर्शन धर्मशाला में 20 अक्टूबर को हो गया।

रतलाम में भी जन्मोत्सव के आयोजन हुए

रतलाम-देवसुर तपागच्छ श्री संघ गुजराती उपाश्रय और ऋषभदेव केशरीमलजी पेढ़ी के अंतर्गत साध्वीवर्या श्री पूर्णयशाश्रीजी म.सा. ,श्री सुचिप्रज्ञा श्रीजी, जिग्नेश रत्ना श्रीजी, राजगुणा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में नवपद ओली आराधना का आयोजन 23 से 31 अक्टूबर तक किया गया इसके पूर्व श्री माणिभद्र वीर के प्रकट महोत्सव के अंतर्गत 21 अक्टूबर को पूज्यश्री की निश्रा में हवन पूजन का आयोजन किया गया।

शंखेश्वर तीर्थ में ओली और दीपावली पर्व आराधना

शंखेश्वर- श्री आगम मंदिर संस्थानमें पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठआचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्न सागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार मुनिश्री आगम रत्नसागरजी म.सा., मुनिश्री प्रशमरत्न सागरजी म.सा. पू.आ.भगवंत वाणी के जादूगर श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.के सुशिष्य मुनिश्री वज्ररत्न सागर जी म. सा.आदि साधु-साध्वी आदि ठाणा की निश्रा में यहां आपश्री की निश्रा में चार्तुमास के अंतिम दौर में नवपद ओली आराधना का आयोजन 23 अक्टूबर से होने के साथ दीपावली पर्व पर विशेष प्रवचन के आयोजन के साथ दीपावली आराधना करवाई गई।

श्री सम्मेतशिखर यात्रा प्रारंभ

मधुवन- श्री सम्मेतशिखर विकास समिति के अनुसार झारखंड सरकार ने 8 अक्टूबर से तीर्थयात्रा की अनुमति प्रदान कर दी है।सम्पर्क- 9939800471, 8789752150

सूरत में पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री की निश्रा में भीष्म भद्रतप का पारणा महोत्सव सम्पन्न

सूरत- जिनागमसेवी गच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी म.सा., सरलमना पूज्य आचार्य श्री नंदीवर्धनसागरसूरीश्वरजी म.सा.की पावन निश्रा एवं बंधुबेलड़ी पू. आचार्य श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.,पू.आचार्य श्री हेमचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.,पूज्य आचार्य श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा.की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में तथा विविध समुदाय के पूज्य गुरु भगवंतों, सागर समुदाय के श्रमण-श्रमणी परिवार के सुसानिध्य में पूज्य साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म.सा.,पूज्य साध्वी श्री अमीपूर्णाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री अमीदर्शाश्रीजी म.सा., पू.साध्वी श्री मृदुपूर्णाश्रीजी म.सा., पू.साध्वी श्री अर्पणाश्रीजी म.सा., पू.साध्वीश्री लब्धिपूर्णाश्रीजी म.सा.के भीष्म भद्र तप (जिसमें 100 दिवस में 75 उपवास आते है) का पारणा आसो सूद पूनम दिनांक 1 अक्टूबर को प्रातः 9 बजे अठवा लाईन्स जैन श्रीसंघ के श्री फूलचंद्र कल्याणचंद्र झवेरी पौषधशाला सूरत में सानंद सम्पन्न हुआ। इस शुभ प्रसंग पर शुक्रस्तव अभिषेक का आयोजन भी हुआ।

शंखेश्वर में श्री माणिभद्र जी का हवन ओली का आयोजन

शंखेश्वर- श्री आगम मंदिर संस्थान में पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठआचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्न सागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार मुनिश्री आगम रत्नसागरजी म.सा., मुनिश्री प्रशमरत्न सागरजी म.सा. पू.आ.भगवंत वाणी के जादूगर श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.के सुशिष्य मुनिश्री वज्ररत्न सागर जी म. सा.आदि साधु-साध्वी आदि ठाणा की निश्रा में यहां दिनांक 21 अक्टूबर को श्री मणिभद्रवीर का महापूजन हुआ। दिनांक 23 से 31 अक्टूबर तक आसोज की नवपद ओली का आयोजन भी हुआ। दीपावली की विविध आराधना के आयोजन की तैयारी चल रही है।

बैंगलोर में पंचान्हिका महोत्सव मना

बैंगलोर- श्री चन्द्रप्रभस्वामी मूर्तिपूजक संघ में सागर समुदाय की साध्वीवर्या पूज्य श्री दिव्ययशाश्रीजी म.सा.एवं दिव्यदर्शाश्रीजी म.सा. की निश्रा में 18 से 23 अक्टूबर तक पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया। रथयात्रा के साथ विविध पूजन पढ़ाई गई, इसके बाद 23 से 31 अक्टूबर तक नवपद ओली आराधना भी हुई।

पूना में नवपदओली आराधनस महोत्सव

पूना- श्री गोटीवाला ओसवाल जैन संघ में पूज्य आचार्य श्री गुणचंद्र सागरसूरीजी म.सा. की निश्रा एवं पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा. आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में दिनांक 21 अक्टूबर को श्री मणिभद्रवीर का महापूजन हुआ। दिनांक 23 से 31 अक्टूबर तक आसोज की नवपद ओली का आयोजन भी हुआ। दीपावली की विविध आराधना के आयोजन की तैयारी चल रही है।

साध्वीश्रीप्रियलज्योतिश्रीजी ने श्रेणी तप किया

कोरेगांव-यहां विराजित सागर समुदायवर्ती मनोहर सुमन सूर्योदय शिशु सरल स्वभावी पूज्य साध्वीश्री स्वर्णज्योतिश्रीजी की सुशिष्या प्रवचन कुशल साध्वीश्री प्रियत ज्योतीश्रीजी म.सा.को 110 दिवसीय श्रेणिक तप जिसमें 83 उपवास और 27 पारणा आते है कि उग्र तपस्या चल रही है साध्वी श्री प्रियतज्योती श्रीजी म.सा.को तपस्या का पारणा 18 नवबंर को आयेगा,कोरेगांव श्रीसंघ के द्वारा साध्वीश्री की तपस्या की अनुमोदनार्थ पंच दिवसीय पंचान्हिका तप महोत्सव का आयोजन किया गया है जिसमें श्री सिध्दचक्र महापूजन भी पढाई जावेगी कोरोना महामारी के बीच साध्वीश्री की उग्र तपस्या की चारों ओर अनुमोदना हो रही है।

मनीष गोडसे परिवार 21 फरवरी 2021 को दीक्षित होगा

पूना- जर्मन की बड़ी कंपनी में कार्यरत रहे श्री मनीषभाई गोडसे जो अजैन मराठी परिवार से है, आपने जैन मित्रों के संपर्क में आकर पूरी जीवन शैली बदलकर अब अपने परिवार श्रीमती गोडसे उनका पुत्र एवं पुत्री चारों दीक्षित होने जा रहे है। आपने पूना के पास अपने गांव में नागेश्वर पार्श्वनाथ का मंदिर निर्माण करवाया। विगत पांच वर्षो से नंगे पैर रहे। आपको विगत 21 फरवरी 2021 को पूज्य आचार्यश्री रविशेखर सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में दीक्षा मुहूर्त प्रदान किया गया।

हमारे तीज-त्यौहार

1- कार्तिक वदी-13	शुक्रवार	13/11/2020	धनतेरस
2- कार्तिक वदी-14	शनिवार	14/11/2020	काली चवदस
3- कार्तिक वदी-30	रविवार	15/11/2020	दीपावली, प्रभु महावीर का निर्वाण कल्याणक
4- कार्तिक सुदी-2	सोमवार	16/11/2020	निर्वाण संवत् 2547 नूतन वर्षारंभ विक्रम संवत् 2077 आरंभ श्री गौतमस्वामीजी केवलज्ञान दिवस
5- कार्तिक सुदी-5	गुरुवार	19/11/2020	ज्ञान पंचमी
6- कार्तिक सुदी-7	शनिवार	21/11/2020	चौमासी अट्ठाई आरंभ
7- कार्तिक सुदी-14	रविवार	29/11/2020	चौमासी चवदस
8- कार्तिक सुदी-30	सोमवार	30/11/2020	श्री सिद्धाचल महायात्रा आरंभ, कलिकाल सर्वज्ञश्री हेमचन्दाचार्यजी का जन्म दिवस

पुष्प नक्षत्र :–

आरम्भः- कार्तिक वदी-6, शनिवार, दिनांक 7/11/2020, समय-08.06 बजे से

समाप्9तः- कार्तिक वदी-7, रविवार, दिनांक 8/11/2020, समय-08.47 बजे`

पंचक :–

आरम्भः- कार्तिक सुदी-7, शनिवार, दिनांक 21/11/2020, समय-22.27 बजे से

समाप्तः- कार्तिक सुदी-12, गुरुवार, दिनांक 26/11/2020, समय-21.22 बजे तक

कब किसकी आराधना ?

तपोवृद्धि हेतु- श्रीवर्धमानस्वामी की, श्रीआदिश्वर दादा की।

शान्ति हेतु- श्रीशान्तिनाथ दादा की।

ब्रह्मचर्य हेतु- श्रीनेमिनाथ दादाकी।

विघ्न निवारणार्थ- श्रीपार्श्वनाथ दादा की

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

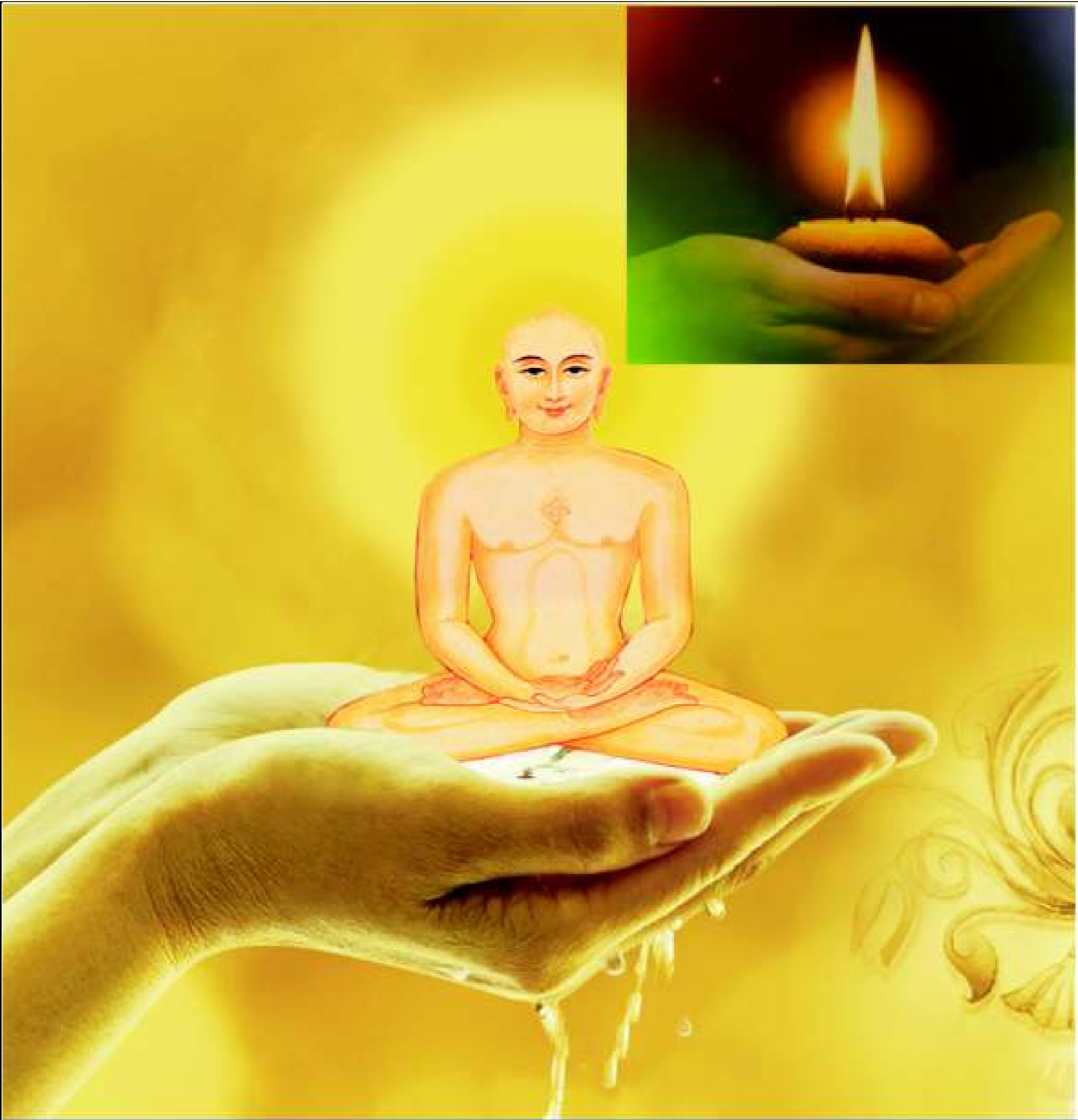

वर्ष-25 कार्तिक नवम्बर 2020 अंक-11

आर.एन.आई.नं.0048570/29/30/982

पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर. एन.नं.08/2021-2023

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

021–2023

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन – संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स
285, एम.जी. ओड, इंदौर से मुद्रित। फोन : 0734 – 2412232, संपादक मोबा. न. 94250-91012, 8770884897